भारत का इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन

कला एवं संस्कृति

2025

1. प्रथम गंधर्व महाविद्यालय, जो एक संगीत प्रशिक्षण विद्यालय था, विष्णु दिगंबर पलुस्कर द्वारा 1901 में कहाँ स्थापित किया गया था?

(a) दिल्ली **(b) ग्वालियर**

(c) उज्जैन **(d) लाहौर**

सही उत्तरः **(d)**

व्याख्याः पहला गंधर्व महाविद्यालय पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर द्वारा 5 मई, 1901 को लाहौर (जो उस समय ब्रिटिश भारत का हिस्सा था और अब पाकिस्तान में है) में स्थापित किया गया था।

अतः विकल्प (d) सही है।

2024

1. निम्नलिखित में से कौन-सी नाटककार भास की रचना है?

(a) काव्यालंकार **(b) नाट्यशास्त्र**

(c) मध्यम-व्यायोग **(d) महाभाष्य**

सही उत्तरः **(c)**

व्याख्याः

- **भास** पहले ज्ञात संस्कृत नाटककार थे और अब तक उनके कई पूर्ण नाटकों की खोज की जा चुकी है। उन्होंने महाभारत के प्रसंगों पर आधारित 6 नाटक लिखे, जैसे- **मध्यम-व्यायोग, पंचरात्र, दूत वाक्यम, दूत घटोत्कचम, कर्णभरम, उरुभंगम। अतः विकल्प (c) सही है।**
- **भामह** संभवतः 7वीं शताब्दी के विद्वान थे जिन्होंने संस्कृत काव्यशास्त्र पर काम किया। माना जाता है कि उन्होंने संस्कृत ग्रंथ **काव्यलंकार** की रचना की थी और वह दंडिन के समकालीन थे।
- **भरत द्वारा नाट्यशास्त्र** में प्रदर्शन, अभिनय, भाव-भंगिमाएँ, मंच निर्देशन और अभिनय से संबंधित नियमों का वर्णन किया गया है।
- **महाभाष्य** की रचना **पतंजलि** (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) ने की थी। यह पाणिनि के ग्रंथ अष्टाध्यायी और **कात्यायन की वार्तिक** से संस्कृत व्याकरण के चुनिंदा नियमों पर एक टिप्पणी है।

2. संघभूति एक भारतीय बौद्ध भिक्षु, जिन्होंने चौथी शताब्दी ईसवी के अंत में चीन की यात्रा की, निम्नलिखित में से किस पर भाष्य के लेखक थे?

(a) प्रज्ञापारामिता सूत्र **(b) विसुद्धिमग्गो**

(c) सर्वास्तिवाद विनय **(d) ललितविस्तर**

सही उत्तरः **(c)**

व्याख्याः

सर्वास्तिवाद विनयः

- संपूर्ण **सर्वास्तिवाद विनय चीनी बौद्ध धर्मग्रंथ** में विद्यमान है।
- अपने प्रारंभिक इतिहास में, सर्वास्तिवाद विनय चीन में सर्वसामान्य विनय परंपरा थी।
- **संघभूति सर्वास्तिवाद विनय पर भाष्य के लेखक थे। अतः विकल्प (c) सही है।**

प्रज्ञापारामिता सूत्रः

- **प्रज्ञापारामिता सूत्र** महायान सूत्रों में सबसे पुराने हैं और साथ ही **महायान बौद्ध** दर्शन की नींव भी हैं।
- ये दुर्लभ ग्रंथ बौद्ध धर्मग्रंथों के साथ-साथ चीनी एवं तिब्बती धर्मग्रंथों दोनों में पाए जाते हैं।

विसुद्धिमग्गोः

- **विसुद्धिमग्गो, थेरवाद** बौद्ध धर्म के **महाविहार शाखा की शिक्षा का एक विश्वकोश होने के साथ ही उत्कृष्ट सारांश एवं व्याख्या** है।
- इसे महान बौद्ध टीकाकार बुद्धघोष ने 5वीं शताब्दी में श्रीलंका के राजा महानामा के शासनकाल के दौरान लिखा था।

ललितविस्तरः

- ललितविस्तर एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण संस्कृत बौद्ध ग्रंथ है। यह **बुद्ध की जीवनी** होने के साथ-साथ मूल रूप से **हीनयान** संप्रदाय के सर्वास्तिवाद संप्रदाय का ग्रंथ है।
- यह ईसाई युग की प्रारंभिक शताब्दियों के दौरान **भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास पर भी प्रकाश** डालता है।
- ललितविस्तर एक एकीकृत ग्रन्थ नहीं है और न ही यह किसी एक लेखक की रचना है।

3. यूनेस्को (UNESCO) द्वारा जारी विश्व धरोहर सूची में शामिल की गई निम्नलिखित संपत्तियों पर विचार कीजियेः

1. शांतिनिकेतन

2. रानी-की-वाव

3. होयसल के पवित्र मंदिर समूह

4. बोधगया स्थित महाबोधि मंदिर परिसर

उपर्युक्त में से कितनी संपत्तियों को वर्ष 2023 में शामिल किया गया?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**
(c) केवल तीन **(d) सभी चार**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः

शांतिनिकेतनः पश्चिम बंगाल

- **रवींद्रनाथ टैगोर** द्वारा स्थापित शांतिनिकेतन एक **आवासीय विद्यालय** के साथ-साथ **प्राचीन भारतीय परंपराओं तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक सीमाओं से परे मानवता की एकता की दृष्टि पर आधारित कला का केंद्र** था।
- **शांतिनिकेतन** को **वर्ष 2023 में यूनेस्को** द्वारा भारत के **41वें विश्व धरोहर स्थल के** रूप में मान्यता दी गई है। **अतः बिंदु (1) सही है।**

रानी-की-वावः गुजरात

- सरस्वती नदी के तट पर स्थित रानी-की-वाव का निर्माण **11वीं शताब्दी** में एक राजा की स्मृति में कराया गया था।
- **रानी-की-वाव** को **वर्ष 2014 में यूनेस्को द्वारा** भारत के **32वें विश्व धरोहर स्थल** के रूप में मान्यता दी गई है। **बिंदु (2) सही नहीं है।**
- **होयसल पवित्र मंदिर समूहः कर्नाटक**
- इसमें दक्षिण भारत में **12वीं से 13वीं शताब्दी** के होयसल शैली के मंदिर परिसरों के प्रतिनिधि उदाहरण शामिल हैं।
- **होयसल शैली के मंदिर परिसरों** को **यूनेस्को द्वारा वर्ष 2023** में भारत के **42वें विश्व धरोहर स्थल** के रूप में मान्यता दी गई है। **अतः बिंदु (3) सही है।**

महाबोधि मंदिर परिसरः बोधगया

- महाबोधि मंदिर परिसर भगवान **बुद्ध के जीवन** एवं विशेष रूप से ज्ञान प्राप्ति से संबंधित चार पवित्र स्थलों में से एक है।
- **महाबोधि मंदिर परिसर** को **वर्ष 2002 में यूनेस्को द्वारा** भारत के **23वें विश्व धरोहर स्थल** के रूप में मान्यता दी गई है। **अतः बिंदु (4) सही नहीं है।**

अतः विकल्प (b) सही है।

4. यूनेस्को (UNESCO) की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में निम्नलिखित में से कौन-सा नवीनतम समावेश था?

(a) छऊ (छाऊ) नृत्य **(b) दुर्गा पूजा**
(c) गरबा नृत्य **(d) कुंभ मेला**

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः गरबा एक अनुष्ठानिक और भक्ति नृत्य है जो हिंदू त्योहार (नवरात्रि) के अवसर पर किया जाता है तथा यह नारी शक्ति (Feminine Energy) या ऊर्जा हेतु समर्पित है।

- यूनेस्को (UNESCO) की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में नवीनतम समावेश (वर्ष 2023 में) गुजरात का गरबा नृत्य है। **अतः विकल्प (c) सही है।**
- **छऊ नृत्य- वर्ष 2010**
- **कुंभ मेला- वर्ष 2017**
- **दुर्गा पूजा- वर्ष 2021**

2023

1. धान्यकटक, जो महासांघिकों के अधीन एक प्रमुख बौद्ध केंद्र के रूप में समृद्ध हुआ, निम्नलिखित में से किस एक क्षेत्र में अवस्थित था?

(a) आंध्र **(b) गांधार**
(c) कलिंग **(d) मगध**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः

- धान्यकटक वर्तमान में दक्षिण पूर्वी भारत के आंध्र प्रदेश में अमरावती के निकट स्थित एक छोटा-सा नगर है, जहाँ शाक्यमुनि बुद्ध ने शंभला के राजाओं को कालचक्र धर्म के सार स्वरूप की शिक्षा दी थी।
- अमरावती धरणीकोटा/धरनीकोटा, इतिहास में तीसरी बार (12वीं शताब्दी में) कोटा शासकों की राजधानी बना था। गुण्टूर के वेलपुरु में एक मंदिर में पाए गए एक शिलालेख के अनुसार, अमरावती को निम्नलिखित प्रकार से वर्णित किया गया था:
  - "श्री धान्यकटक नाम का एक नगर है, जो देवताओं के नगर से श्रेष्ठ है, जहाँ अमरेश्वर नाम के शंभू मंदिर की पूजा देवताओं के राजा (इंद्र) द्वारा की जाती है, यहाँ भगवान बुद्ध को भी पूजा जाता है। यहाँ एक बहुत ऊँचा चैत्य है, जो विभिन्न मूर्तियों से सुशोभित है।" जिससे यह भी पता चलता है कि यह स्तूप अपने काल में चरमोत्कर्ष पर था। **अतः विकल्प (a) सही है।**

2. प्राचीन भारत के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. स्तूप की संकल्पना मूलतः बौद्ध संकल्पना है।
2. स्तूप आमतौर पर अवशेषों का निक्षेपागार होता था।
3. बौद्ध परंपरा में स्तूप एक संकल्प-अर्पित या स्मारक संरचना होती थी।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**
(c) सभी तीन **(d) कोई भी नहीं**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः स्तूप की संकल्पनाः

- स्तूप वैदिक काल से भारत में प्रचलित शवाधान टीले थे। स्तूप शब्द का उल्लेख ऋग्वेद, अथर्ववेद, वाजसनेयी संहिता, तैत्तिरीय संहिता, पंचविंश ब्राह्मण में मिलता है। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**
- ऋग्वेद में वन में देवता वरुण द्वारा बनाए गए स्तूप का उल्लेख मिलता है, जिसकी कोई नींव (आधार) नहीं होती थी। ऋग्वेद में 'एस्तुका' शब्द का उपयोग भी इसी अर्थ में किया गया है वस्तुतः उस समय भूमि पर निर्मित ढेर/टीले को स्तूप के नाम से जाना जाता था।
- सामान्यतः यह अवशेषों का निक्षेपागार था जिसमें मृतकों के अवशेष एवं राख को रखा जाता था। वैदिक परंपरा के स्तूपों को बौद्धों द्वारा लोकप्रिय बनाया गया। **अतः कथन 2 सही है।**

- अवदान सतक, महावदान एवं स्तूपवदान जैसे बौद्ध ग्रंथों से स्तूपों के स्मारक पहलूओं का उल्लेख किया गया है। यहीं तक कि राया पसेनैया सुत्त (Raya Pasenaiya Sutta) जैसे जैन साहित्य में भी इसका उल्लेख मिलता है। मोक्ष प्राप्ति के उद्देश्य से भगवान की पूजा करने की सामान्य जन की गहरी आस्था के परिणामस्वरूप स्तूप ने आगे चलकर अपना संकल्प-अर्पित संरचना स्वरुप प्राप्त किया। **अतः कथन 3 सही है। अतः विकल्प (b) सही है।**

3. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये:

स्थल	जिसके लिये जाना जाता है
1. बेसनगर	: शैव गुफा मंदिर
2. भाजा	: बौद्ध गुफा मंदिर
3. सित्तनवासल	: जैन गुफा मंदिर

उपर्युक्त में से कितने युग्म सही सुमेलित हैं?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**
(c) सभी तीन **(d) कोई भी नहीं**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या:

- हेलियोडोरस स्तंभ एक प्रस्तर स्तंभ है जिसे लगभग 113 ईसा पूर्व मध्य भारत के बेसनगर (विदिशा, मध्य प्रदेश के पास) में स्थापित किया गया था। वैष्णव मत से प्रेरित होकर इस स्तंभ को हेलियोडोरस द्वारा गरुड़-स्तंभ के रूप में संदर्भित किया गया था। **अतः युग्म 1 सही नहीं है।**
- भाजा गुफाएँ दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में निर्मित भारत के पुणे शहर में स्थित 22 रॉक-कट गुफाओं का एक समूह है। यह गुफाएँ भाजा गाँव के समीप 400 फीट ऊँचाई पर हैं। यह अरब सागर की ओर से आने वाले महत्त्वपूर्ण प्राचीन व्यापार मार्ग पर स्थित हैं।
- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की अधिसूचना संख्या 2407-I द्वारा इस शिलालेख और गुफा मंदिर को राष्ट्रीय महत्त्व के स्मारक के रूप में संरक्षित किया गया है। यह महाराष्ट्र के **प्रारंभिक बौद्ध शिक्षा केंद्रों** से संबंधित है। इन गुफाओं में बौद्ध धर्म की विशेषताओं से संबंधित कई स्तूप हैं। **अतः युग्म 2 सही है।**
- **सित्तनवासल गुफाएँ (अरिवर कोइल):** यह तमिलनाडु में पुदुक्कोट्टई शहर से 16 किमी. उत्तर पश्चिम में स्थित हैं। चट्टानों को काटकर बनाई गई ये प्रसिद्ध गुफाएँ जैन मंदिरों के रूप में प्रसिद्ध हैं। **अतः युग्म 3 सही है। अतः विकल्प (b) सही है।**

2022

1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये:

अशोक के प्रमुख शिलालेखों के स्थान		वह स्थान जिस राज्य में हैं
1. धौली	–	ओडिशा
2. एर्रगुडी	–	आंध्र प्रदेश
3. जौगड़	–	मध्य प्रदेश
4. कालसी	–	कर्नाटक

उपर्युक्त युग्मों में से कितने सही सुमेलित हैं?

(a) केवल एक युग्म **(b) केवल दो युग्म**
(c) केवल तीन युग्म **(d) सभी चारों युग्म**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: धौली ओडिशा का एक महत्त्वपूर्ण प्रारंभिक ऐतिहासिक शहरी केंद्र है। धौली में पाए गए पुरातात्त्विक अवशेषों ने इसकी प्राचीनता का पता तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व, विशेष रूप से अशोक के समय से लगाया। धौली ऐतिहासिक महत्त्व का केंद्र है क्योंकि सम्राट अशोक के प्रसिद्ध शिलालेखों में से एक यहाँ स्थित है। **अतः युग्म 1 सही सुमेलित है।**

- 2013 में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) ने आंध्र प्रदेश के कुर्नूल ज़िले में गूटी-पाथिकोंडा रोड पर एर्रगुडी के पास अशोक रॉक एडिट साइट की सुरक्षा पर ज़ोर दिया। **अतः युग्म 2 सही सुमेलित है।**
- शिलालेख मौर्य सम्राट अशोक (269-231 ईसा पूर्व) की महत्त्वपूर्ण संपदाओं में से एक थे, जिनमें वृहद् और छोटे शिलालेख शामिल हैं।
- जौगड़ एक प्राचीन किला है जो कलिंग प्रांत की मौर्य गढ़वाली राजधानी के रूप में कार्य करता था। जौगड़ ओडिशा के गंजम ज़िले में बेरहामपुर और पुरुषोत्तमपुर शहरों के निकट स्थित है।
- जौगड़ ओडिशा का एक अन्य स्थान है जहाँ अशोक का वृहद् शिलालेख मौजूद है, इसे कलिंग शिलालेख भी कहा जाता है। **अतः युग्म 3 सुमेलित नहीं है।**
- जब अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया उस दौरान कालसी स्थित शिलालेख में युद्ध के बाद अशोक के मानवीय दृष्टिकोण को लिपिबद्ध किया गया। कालसी उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के बीच बफर ज़ोन में स्थित है। **अतः युग्म 4 सुमेलित नहीं है। अतः विकल्प (b) सही है।**

2. प्राचीन दक्षिण भारत में संगम साहित्य के बारे में, निम्नलिखित कथनों में कौन-सा एक, सही है?

(a) संगम कविताओं में भौतिक संस्कृति का कोई संदर्भ नहीं है।
(b) वर्ण का सामाजिक वर्गीकरण संगम कवियों को ज्ञात था।
(c) संगम कविताओं में समर शौर्य का कोई संदर्भ नहीं है।
(d) संगम साहित्य में जादुई ताकतों को असंगत बताया गया है।

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: संगम साहित्य के रूप में जानी जाने वाली कविताओं का संग्रह छह शताब्दियों में लगभग 300 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी तक तमिलों द्वारा विविध सामाजिक पृष्ठभूमि में निर्मित किया गया था।

- ये कृतियाँ आरंभिक तमिल संस्कृति के साथ-साथ दक्षिण भारत और भूमध्यसागरीय, पश्चिम एशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया के बीच व्यापार संबंधों पर प्रकाश डालती हैं।

- आरंभिक भारतीय साहित्य में संगमकालीन लेखन संभवत: अद्वितीय है, जो लगभग पूरी तरह से धार्मिक है। इसकी कविताएँ दो मुख्य विषयों से संबंधित हैं: पहले पाँच संग्रह प्रेम (अकम) पर आधारित हैं और अगले दो संग्रह वीरता (पुरम) पर आधारित हैं, जिसमें राजाओं की प्रशंसा और उनके द्वारा किये गए कार्य शामिल हैं।
- कई कविताएँ विशेष रूप से वीरता (योद्धा नैतिकता से संबंधित), ऊर्जावान और उत्साह प्रदर्शित करती हैं तथा भारत के अन्य प्रारंभिक एवं मध्यकालीन साहित्यों की तुलना में साहित्यिक अतिशयोक्ति से पूरी तरह मुक्त हैं।
- नायकों और संरक्षकों की प्रशंसा वाला बर्दिक साहित्य होने के कारण समाज और अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं पर इसकी चिंता स्वाभाविक थी।
- संगम साहित्य में पवित्र या जादुई शक्तियों में विश्वास जताया गया है जिसे अनकू कहा जाता है।
- 'संगम' साहित्य किसी विशेष सामाजिक या धार्मिक समूह का उत्पाद नहीं है और न ही इसे किसी शासक अभिजात वर्ग द्वारा दरबारी साहित्य के रूप में प्रायोजित किया गया था।
- लगभग 600 वर्षों की लंबी अवधि में विभिन्न समय बिंदुओं पर रचित और विभिन्न स्तरों के व्यक्तियों- राजकुमारों, सरदारों, किसानों, व्यापारियों, कुम्हारों, लुहारों, बढ़ई और ब्राह्मणों, जैन एवं बौद्धों द्वारा लिखित, कविताएँ विषम सामाजिक समूहों से संबंधित हैं। अत: वर्ण का सामाजिक वर्गीकरण ज्ञात था। **अत: विकल्प (b) सही है।**

3. किसके राज्यकाल में "योगवाशिष्ठ" का निज़ामुद्दीन पानीपति द्वारा फ़ारसी में अनुवाद किया गया?

(a) अकबर **(b) हुमायूँ**

(c) शाहजहाँ **(d) औरंगजेब**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: भारतीय उपमहाद्वीप के एक विशिष्ट ऐतिहासिक काल के दौरान मुस्लिम और हिंदू बुद्धिजीवियों ने सह-अस्तित्व, संवाद और एक दूसरे की निकटवर्ती उपस्थिति को समझा।

- सम्राट अकबर के कार्यकाल में योगवाशिष्ठ का फारसी में अनुवाद निजामुद्दीन पानीपति ने किया था। इस पुस्तक का पुन: अनुवाद दारा शिकोह के समय किया गया था।
- योगवाशिष्ठ संस्कृत में लिखा गया ग्रन्थ है , जिसे ऋषि वाल्मीकि ने लिखा था। **अत: विकल्प (a) सही है।**

4. हाल ही में हैदराबाद में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा रामानुज की आसन मुद्रा में विश्व की दूसरी सबसे ऊँची मूर्ति का उद्घाटन किया गया था। निम्नलिखित कथनों में कौन-सा एक, रामानुज की शिक्षाओं को सही निरूपित करता है?

(a) मोक्ष प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन भक्ति था।

(b) वेद शाश्वत, आत्म-प्रतिष्ठित तथा पूर्णतया प्रामाणिक हैं।

(c) तर्कसंगत युक्तियाँ सर्वोच्च आनंद के मौलिक माध्यम थे।

(d) ध्यान के माध्यम से मोक्ष पाया जा सकता था।

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: रामानुज का जन्म ग्यारहवीं शताब्दी में तमिलनाडु में हुआ था। वे विष्णुभक्त अलवार संतों से बहुत प्रभावित थे। उनके अनुसार मोक्ष प्राप्त करने का उपाय विष्णु के प्रति अनन्य भक्ति भाव रखना है।

- भगवान विष्णु की कृपा दृष्टि से भक्त उनके साथ एकाकार होने का परमानंद प्राप्त कर सकता है।
- रामानुज ने विशिष्टताद्वैत के सिद्धांत को प्रतिपादित किया, जिसके अनुसार आत्मा, परमात्मा से जुड़ने के बाद भी अपनी अलग सत्ता बनाए रखती है।
- रामानुज के सिद्धांत ने भक्ति की नयी धारा को बहुत प्रेरित किया, जो परवर्ती काल में उत्तरी भारत में विकसित हुई।

अत: विकल्प (a) सही है।

5. हाल ही में, प्रधानमंत्री ने वेरावल में सोमनाथ मंदिर के निकट नए सर्किट हाउस का उद्घाटन किया। सोमनाथ मंदिर के बारे में निम्नलिखित कथनों में कौन-से सही हैं?

1. सोमनाथ मंदिर ज्योतिर्लिंग देव-मंदिरों में से एक है।

2. अल-बरूनी ने सोमनाथ मंदिर का वर्णन किया है।

3. सोमनाथ मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा (आज के मंदिर की स्थापना) राष्ट्रपति एस. राधाकृष्णन द्वारा की गई थी।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: सोमनाथ मंदिर गुजरात राज्य में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी में अरब सागर के तट पर स्थित है।

- श्री सोमनाथ भारत के बारह आदि ज्योतिर्लिंगों में प्रथम हैं। **अत: कथन 1 सही है।**
- इसका उल्लेख अरब यात्री अल-बरूनी ने अपने यात्रा वृत्तांत में किया था, जिससे प्रभावित होकर महमूद गजनवी ने 1024 ई. में अपने पाँच हजार सैनिकों के साथ सोमनाथ मंदिर पर हमला कर दिया और उसकी संपत्ति लूट ली साथ ही मंदिर को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। **अत: कथन 2 सही है।**
- प्राचीन भारतीय शास्त्रीय ग्रंथों पर आधारित शोध से पता चलता है कि पहली बार सोमनाथ ज्योतिर्लिंग की प्राण-प्रतिष्ठा (आज के मंदिर की स्थापना), वैवस्वत मन्वंतर के दसवें त्रेता युग के दौरान श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को किया गया था।
- 13 नवंबर, 1947 को सोमनाथ मंदिर के दर्शन करने वाले सरदार पटेल के संकल्प के साथ आधुनिक मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया था। 11 मई, 1951 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने मौजूदा मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा की थी। **अत: कथन 3 सही नहीं है। अत: विकल्प (a) सही है।**

6. भारतीय इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित मूलग्रंथों पर विचार कीजिये:

1. नेत्तिपकरण   2. परिशिष्टपर्वन

3. अवदानशतक   4. त्रिशष्टिलक्षण महापुराण

उपर्युक्त में कौन-से जैन ग्रंथ हैं?

(a) 1, 2 और 3

(b) केवल 2 और 4

(c) 1, 3 और 4

(d) 2, 3 और 4

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: नेत्तिपकरण एक पौराणिक बौद्ध ग्रंथ है, जिसे कभी-कभी थेरवाद बौद्ध धर्म के पाली कैनन के खद्दका निकाय में शामिल किया गया था।

- परिशिष्टपर्वन हेमचंद्र द्वारा रचित 12वीं शताब्दी का संस्कृत महाकाव्य है जो प्रारंभिक जैन शिक्षकों के इतिहास का विवरण प्रस्तुत करता है।
- अवदानशतक एक सौ बौद्ध किंवदंतियों का संस्कृत में एक संकलन है, जो लगभग एक ही समय से संबंधित है। त्रिशष्ठिलक्षण महापुराण एक प्रमुख जैन ग्रंथ है जिसकी रचना मुख्य रूप से आचार्य जिनसेन ने राष्ट्रकूट के शासन के दौरान की थी। **अतः विकल्प (b) सही है।**

7. भारतीय इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये:

ऐतिहासिक व्यक्ति		किस रूप में जाने गए
1. आर्यदेव	-	जैन विद्वान
2. दिग्नाग	-	बौद्ध विद्वान
3. नाथमुनि	-	वैष्णव विद्वान

उपर्युक्त युग्मों में से कितने युग्म सही सुमेलित हैं?

(a) कोई भी युग्म नहीं

(b) केवल एक युग्म

(c) केवल दो युग्म

(d) सभी तीन युग्म

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: आर्यदेव महायान बौद्ध भिक्षु, नागार्जुन के शिष्य थे और इन्होंने नागार्जुन के सिद्धांत माध्यमिक शून्यवाद की विस्तृत व्याख्या अपने पुस्तक में की है। दिङ्नाग भारतीय बौद्ध विद्वान और भारतीय तर्कशास्त्र के बौद्ध संस्थापकों में से एक थे।

- श्री रंगनाथमुनि जिन्हें लोकप्रिय रूप से श्रीमन नाथमुनि (823-951 ई.) के नाम से जाना जाता है, एक वैष्णव धर्मशास्त्री थे जिन्होंने नलयिर दिव्य प्रबंधम को एकत्र और संकलित किया था। **अतः केवल युग्म 2 और 3 सही सुमेलित हैं। अतः विकल्प (c) सही है।**

2021

1. प्राचीन भारत के इतिहास के संदर्भ में, भवभूति, हस्तिमल्ल तथा क्षेमेश्वर क्यों प्रसिद्ध थे?

(a) जैन साधु   (b) नाटककार

(c) मंदिर वास्तुकार   (d) दार्शनिक

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: 8वीं सदी के विद्वान भवभूति संस्कृत में लिखे अपने नाटकों और कविताओं के लिये विख्यात् हैं। उनके द्वारा लिखित नाटक 'मालती माधव' प्रसिद्ध है।

- हस्तिमल्ल होयसल राज्य में रहने वाले एक जैन नाटककार थे जो दिगंबर जैन कथाओं को आधार बनाकर संस्कृत में नाटक लिखते थे। उनके द्वारा कई नाटक लिखे गए जिनमें से चार नाटक प्राप्त हैं- मैथिली कल्याण, विक्रांत कौरव, अञ्जना पवनंजय और सुभद्रा (नाटिका)।
- क्षेमेश्वर एक नाटककार थे जिन्होंने 'चंडकौशिक' नामक नाटक की रचना की थी। इस प्रकार भवभूति, हस्तिमल्ल और क्षेमेश्वर 'नाटककार' थे। **अतः विकल्प (b) सही है।**

2. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है?

(a) अजंता गुफाएँ, वाघोरा नदी की घाटी में स्थित हैं।

(b) साँची स्तूप, चंबल नदी की घाटी में स्थित है।

(c) पांडू-लेणा गुफा देव मंदिर, नर्मदा नदी की घाटी में स्थित है।

(d) अमरावती स्तूप, गोदावरी नदी की घाटी में स्थित है।

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: अजंता गुफा दक्कन पठार में वाघोर नदी घाटी में स्थित है। **अतः विकल्प (a) सही है।**

- साँची स्तूप, बेतवा नदी की घाटी में स्थित है।
- पांडू-लेणा गुफा देव, मंदिर नासिक में स्थित है, जहाँ गोदावरी नदी का उद्गम स्थल है।
- अमरावती स्तूप, कृष्णा नदी घाटी में स्थित है।

3. मुरैना के समीप स्थित चौंसठ योगिनी मंदिर के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. यह कच्छपघात राजवंश के शासनकाल में निर्मित एक वृत्ताकार मंदिर है।

2. यह भारत में निर्मित एकमात्र वृत्ताकार मंदिर है।

3. इसका उद्देश्य इस क्षेत्र में वैष्णव पूजा-पद्धति को प्रोत्साहन देना था।

4. इसके डिज़ाइन से यह लोकप्रिय धारणा बनी कि यह भारतीय संसद भवन के लिये प्रेरणा-स्रोत रहा था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) 1 और 2   (b) केवल 2 और 3

(c) 1 और 4   (d) 2, 3 और 4

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: मितावली गाँव, मुरैना (मध्य प्रदेश) स्थित चौंसठ योगिनी मंदिर का निर्माण 1323 ई. में कच्छपघात राजा देवपाल ने करवाया था। अत: कथन 1 सही है।

- हीरापुर, भुवनेश्वर स्थित चौंसठ योगिनी मंदिर भी वृत्ताकार है। अत: यह एकमात्र वृत्ताकार मंदिर नहीं है। अत: कथन 2 गलत है।
- चौंसठ योगिनी मंदिर देवी पार्वती के मंदिर हैं जो तंत्र तथा शैव पूजा पद्धति को बढ़ावा देते हैं। अत: कथन 3 गलत है।
- चौंसठ योगिनी मंदिर के वृत्ताकार रूप को संसद भवन के लिये प्रेरणास्रोत के रूप में देखा जाता है। अत: कथन 4 सही है। **अत: विकल्प (c) सही है।**

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. संत फ्रांसिस ज़ेवियर, जेसुइट संघ (ऑर्डर) के संस्थापक सदस्यों में से एक थे।

2. संत फ्रांसिस ज़ेवियर की मृत्यु गोवा में हुई तथा यहाँ उन्हें समर्पित एक गिरजाघर है।

3. गोवा में प्रति वर्ष संत फ्रांसिस ज़ेवियर के भोज का अनुष्ठान किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या: संत फ्रांसिस ज़ेवियर का जन्म स्पेन के ज़ेवियर में हुआ था। वे संत इग्नेशियस के मित्र थे और उन्होंने उनके साथ मिलकर जेसुइट संघ की स्थापना की थी। अत: कथन 1 सही है।

- संत फ्रांसिस ज़ेवियर की मृत्यु 3 दिसंबर, 1552 को चीन के शेगंचुआन द्वीप पर हुई। 1553 में उन्हें गोवा में दफनाया गया। अत: कथन 2 गलत है।
- प्रत्येक वर्ष 3 दिसंबर को गोवा में संत ज़ेवियर के भोज का अनुष्ठान किया जाता है। अत: कथन 3 सही है। **अत: विकल्प (c) सही है।**

2020

1. भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में, 'पारमिता' शब्द का सही विवरण निम्नलिखित में से कौन-सा है?

(a) सूत्र पद्धति में लिखे गए प्राचीनतम धर्मशास्त्र पाठ

(b) वेदों के प्राधिकार को अस्वीकार करने वाले दार्शनिक संप्रदाय

(c) परिपूर्णताएँ जिनकी प्राप्ति से बोधिसत्व पथ प्रशस्त हुआ

(d) आरंभिक मध्यकालीन दक्षिण भारत की शक्तिशाली व्यापारी श्रेणियाँ

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या: बौद्ध धर्म में 'परिपूर्णता' या कुछ गुणों का चरमोन्नयन की स्थिति को पारमिता या पारमी (पालि में) कहा गया है। बौद्ध धर्म में इन गुणों का विकास पवित्रता की प्राप्ति, कर्म को पवित्र करने आदि के लिये की जाती है ताकि साधक अनावरुद्ध जीवन जीते हुए भी ज्ञान की प्राप्ति कर सके। 'पारमिता' शब्द 'परम' से व्युत्पन्न है। वेदों के प्राधिकार को अस्वीकार करने वाले दार्शनिक संप्रदाय नास्तिक कहलाते हैं।

2. प्राचीन भारत के विद्वानों/साहित्यकारों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. पाणिनि पुष्यमित्र शुंग से संबंधित है।

2. अमरसिंह हर्षवर्धन से संबंधित है।

3. कालिदास चंद्रगुप्त-II से संबंधित है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या: पाणिनि का समय ईसा पूर्व पाँचवी शताब्दी है जबकि पुष्यमित्र शुंग अंतिम मौर्य नरेश बृहद्रथ का प्रधान सेनापति था और उसका समय 184 ईसा पूर्व है। पतंजलि का संबंध पुष्यमित्र शुंग से है न कि पाणिनी का। इसी तरह अमरसिंह गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार से संबंधित थे न कि हर्षवर्धन से। अत: कथन 1 व 2 गलत हैं।

कालिदास संस्कृत भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि एवं नाटककार हैं। यद्यपि उनकी तिथि के विषय में गहरा मतभेद है। फिर भी अधिकांश इतिहासकार उन्हें चन्द्रगुप्त द्वितीय का ही दरबारी मानते हैं। अत: कथन 3 सही है।

3. भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. स्थाविरवादी महायान बौद्ध धर्म से संबद्ध हैं।

2. लोकोत्तरवादी संप्रदाय बौद्ध धर्म के महासंघिक संप्रदाय की एक शाखा थी।

3. महासंघिकों द्वारा बुद्ध के देवत्वारोपण ने महायान बौद्ध धर्म को प्रोत्साहित किया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: स्थाविरवादी संप्रदाय बौद्ध धर्म के प्रारम्भिक सम्प्रदायों में से एक है इसका संबंध बौद्धधर्म की महायान शाखा से नहीं है। अत: कथन (1) गलत है।

लोकोत्तरवादी संप्रदाय बौद्ध धर्म के महासंघिक संप्रदाय की एक शाखा थी। लोकोत्तरवादी बुद्ध की संतति में सास्रव धर्मों का अस्तित्व सर्वथा नहीं मानते। इनके मतानुसार सम्यक संबोधि की प्राप्ति के अनंतर बुद्ध के सभी आश्रय अर्थात चित्त, चौतसिक, रूप आदि परावृत्त होकर निरास्रव और लोकोत्तर हो जाते हैं। यहाँ 'लोकोत्तर' शब्द अनास्रव के अर्थ में प्रयुक्त है। अत: कथन (2) सही है।

हीनयान सम्प्रदाय के लोगों ने बौद्ध धर्म की मूलभूत शिक्षाओं पर बल दिया। वे बुद्ध को एक महापुरुष मानते थे और मूर्ति पूजा के विरोधी थे। जबकि बौद्ध धर्म की महासंघिका शाखा द्वारा बुद्ध का देवत्वरोपण किया गया। आगे चलकर महायान सम्प्रदाय के लोग इसी से प्रेरणा लेकर बुद्ध को भगवान मानकर उनकी पूजा करने लगे। अत: कथन (3) सही है।

4. स्वतंत्रता संग्राम के समय लिखी गई सखाराम गणेश देउस्कर की पुस्तक 'देशेर कथा' के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. इस पुस्तक ने औपनिवेशिक राज्य द्वारा मस्तिष्क की सम्मोहक विजय के विरोध में चेतावनी दी।

2. इस पुस्तक ने स्वदेशी नुक्कड़ नाटकों तथा लोक गीतों को प्रेरित किया।

3. देउस्कर द्वारा 'देश' शब्द का प्रयोग, बंगाल क्षेत्र के विशिष्ट संदर्भ में किया गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: देशेर कथा (हिंदी अनुवाद : देश की बात) महान क्रांतिकारी विचारक एवं लेखक सखाराम गणेश देउस्कर द्वारा लिखित क्रांतिकारी बांग्ला पुस्तक है। इस पुस्तक में 'देश' शब्द का प्रयोग बंगाल क्षेत्र के लिये नहीं अपितु संपूर्ण देश के संदर्भ में किया गया है। अत: कथन 3 गलत है। यह पुस्तक 1904 ई में लिखी गई थी तथा 1910 में अंग्रेज़ी सरकार द्वारा इसे प्रतिबंधित कर दिया गया था।

5. अस्पृश्य समुदाय के लोगों को लक्षित कर, प्रथम मासिक पत्रिका विटाल-विध्वंसक किसके द्वारा प्रकाशित की गई थी?

(a) गोपाल बाबा वलंगकर **(b) ज्योतिबा फुले**

(c) मोहनदास करमचंद गांधी **(d) भीमराव रामजी अंबेडकर**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: अस्पृश्य समुदाय के लोगों को लक्षित कर प्रथम मासिक पत्रिका 'विटाल-विध्वंसक' गोपाल बाबा वलंगकर द्वारा प्रकाशित की गई थी। विटाल विध्वंसक का अर्थ है- ब्रह्मनिक प्रदूषण का विध्वंसक (Destroyer of Brahmanical or Ceremonial Pollution)।

गोपाल बाबा वलंगकर (1840-1900) एक समाज सुधारक थे। उनका जन्म महाराष्ट्र के एक महार जाति के परिवार में हुआ था। वे ज्योतिराव फुले के समकालीन थे। उन्होंने अछूत लोगों के उद्धार के लिये अनेक कार्य किया।

6. भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

1. परिव्राजक	**–**	**परित्यागी व भ्रमणकारी**
2. श्रमण	**–**	**उच्च पद प्राप्त पुजारी**
3. उपासक	**–**	**बौद्ध धर्म का साधारण अनुगामी**

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-से सही सुमेलित हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 1 और 3**

(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: परिव्राजक : संन्यासी या भ्रमणकारी

परिव्राजक शब्द मानस-पटल पर कई दृश्य उपस्थित कर सकता है, क्योंकि परिव्रजन कई कारणों से होता है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में यह एक साधारण स्थानांतरण है, आर्थिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य में भिक्षार्जन हेतु अथवा आश्रमावस्था का पालन करते हुए संन्यास लिया जाता है। परंतु इसका एक मानसिक कारण भी होता है, जिसे सहज आकर्षण कहा जा सकता है।

श्रमण : श्रमण परम्परा भारत में प्राचीन काल से जैन, बौद्ध तथा कुछ अन्य पंथों में पायी जाती है। जैन भिक्षु या जैन साधु को श्रमण कहते हैं।

उपासक : बौद्ध धर्म के अनुयायिओं को उपासक और उपासिका कहते हैं। पुरुष अनुयायिओं को उपासक और महिला अनुयायिओं को उपासिका कहा जाता है। बौद्ध धर्म में उनके अनुयायिओं के दो प्रकार है- भिक्खू-भिक्खूनी और उपासक - उपासिका।

2019

1. निम्नलिखित पर विचार कीजिये-

1. बुद्ध में देवत्वारोपण

2. बोधिसत्त्व के पथ पर चलना

3. मूर्ति उपासना तथा अनुष्ठान

उपर्युक्त में से कौन-सी विशेषता/विशेषताएँ महायान बौद्धमत की है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**

(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: महायान, बौद्ध धर्म की एक शाखा है। इसमें बुद्ध को देवता के रूप में स्थापित किया गया है, साथ ही मूर्ति पूजा तथा अनुष्ठान की भी मान्यता है। इसके अतिरिक्त इसमें 'बोधिसत्व' के पथ पर चलने की भी बात है। महायान, गुणों के स्थानातंरण को भी मान्यता देता है।

नोट: महायान का आदर्श बोधिसत्व है। बोधिसत्व करुणामय माने गए हैं, जो समस्त प्राणियों को प्रबोध के मार्ग पर चलने में सहायता करने के लिये स्वयं की निर्वाण प्राप्ति विलंबित करते हैं। ये मानव अथवा पशु किसी रूप में भी हो सकते हैं। महायान का आदर्श बोधिसत्व 'अवलोकितेश्वर' था जिसे 'पद्मपाणि' भी कहा जाता है। 'अमिताभ', 'मंजूनाथ', इसके अलावा वज्रपाणि 'मैत्रेय' (भावी) आदि भी बोधसत्व हैं।

2. किसके राज्य में 'कल्याण मंडप' की रचना मंदिर-निर्माण का एक विशिष्ट अभिलक्षण था?

(a) चालुक्य | **(b) चंदेल**
(c) राष्ट्रकूट | **(d) विजयनगर**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: 'कल्याण मंडप' की रचना विजयनगर साम्राज्य की मंदिर-निर्माण शैली का विशिष्ट अभिलक्षण है। इसमें दैवीय विवाहों का आयोजन किया जाता था। अत: विकल्प (d) सही उत्तर है।

3. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

प्रसिद्ध स्थान		नदी
1. पंढरपुर	:	चंद्रभागा
2. तिरुचिरापल्ली	:	कावेरी
3. हंपी	:	मालप्रभा

उपर्युक्त में से कौन-से युग्म सही सुमेलित हैं?

(a) केवल 1 और 2 | **(b) केवल 2 और 3**
(c) केवल 1 और 3 | **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: पंढरपुर, महाराष्ट्र राज्य में शोलापुर के निकट स्थित एक धार्मिक स्थान है, जो चंद्रभागा नदी के किनारे स्थित है। पंढरपुर विट्ठल स्वामी के मंदिर के लिये अत्यंत प्रसिद्ध है। तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु में कावेरी नदी के किनारे स्थित एक प्रसिद्ध स्थान है। इसका उल्लेख संगम साहित्य में भी मिलता है। श्रीरंगम और उरैयुर नामक संगमकालीन स्थल स्थित है। इसी ज़िले में वहीं हम्पी, कर्नाटक में तुंगभद्रा नदी के किनारे स्थित एक प्राचीन व प्रसिद्ध स्थान है। पूर्व में यह विजयनगर साम्राज्य की राजधानी रह चुका है। अत: विकल्प (a) सही उत्तर है।

2018

1. सुप्रसिद्ध चित्र "बणी-ठणी" किस शैली का है?

(a) बूँदी शैली | **(b) जयपुर शैली**
(c) काँगड़ा शैली | **(d) किशनगढ़ शैली**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: बणी-ठणी एक भारतीय चित्रकला है जो किशनगढ़ शैली से संबंधित है। यह पेंटिंग चित्रकार निहालचंद ने बनाई थी। 'बणी-ठणी' को भारतीय मोनालिसा कहा गया है। बणी-ठणी किशनगढ़ रियासत के तत्कालीन राजा सावंत सिंह की प्रेमिका तथा उच्च कोटि की कवयित्री थी।

2. भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. **त्यागराज की अधिकांश कृतियाँ भगवान कृष्ण की स्तुति के भक्ति गीत हैं।**
2. **त्यागराज ने अनेक नए रागों का सृजन किया।**
3. **अन्नमाचार्य और त्यागराज समकालीन हैं।**
4. **अन्नमाचार्य कीर्तन भगवान वेंकटेश्वर की स्तुति के भक्ति गीत हैं।**

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 3 | **(b) केवल 2 और 4**
(c) 1, 2 और 3 | **(d) 2, 3 और 4**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: त्यागराज का जन्म 1767 ई. में तमिलनाडु के तंजावुर ज़िले में हुआ था। वे 'कर्नाटक संगीत' के महान ज्ञाता तथा भक्तिमार्ग के कवि थे। उन्होंने भगवान श्रीराम को समर्पित भक्ति गीतों की रचना की थी तथा अनेक कृतियों (करीब 600 कृतियों की रचना) तथा रागों का सृजन किया।

अन्नमाचार्य एक तेलुगू संत कवि और कर्नाटक संगीत के रचयिता थे। उनका जन्म 1408 ई. तथा मृत्यु 1503 ई. में हुई। वे दक्षिण भारत के पहले संगीतज्ञ थे जिन्होंने संकीर्तन की रचना की। उन्होंने तिरूमाला सात पर्वतों के देवता भगवान वेंकटेश्वर की स्तुति में अनेक भजनों की रचना की। अत: कथन 1 और 3 सही नहीं हैं जबकि कथन 2 और 4 सही हैं।

3. भारत की धार्मिक प्रथाओं के संदर्भ में "स्थानकवासी" सम्प्रदाय का संबंध किससे है?

(a) बौद्ध मत | **(b) जैन मत**
(c) वैष्णव मत | **(d) शैव मत**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: स्थानकवासी, श्वेताम्बर जैन संप्रदाय का एक उपसंप्रदाय है, इसकी स्थापना 1653 के आसपास लवजी नामक एक व्यापारी ने की थी। इस संप्रदाय की मान्यता है कि ईश्वर निराकार है, अत: ये किसी मूर्ति की पूजा नहीं करते।

4. भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. **फतेहपुर सीकरी स्थित बुलंद दरवाजा तथा खानकाह के निर्माण में सफेद संगमरमर का प्रयोग हुआ था।**
2. **लखनऊ स्थित बड़ा इमामबाड़ा और रूमी दरवाजा के निर्माण में लाल-बलुआ पत्थर और संगमरमर का प्रयोग हुआ था।**

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: अकबर के शासनकाल में फतेहपुर सीकरी में अनेक निर्माण कार्य किये गए, जिनमें बुलंद दरवाज़ा एवं खानकाह प्रमुख हैं। इन निर्माण कार्यों में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ है, न कि सफेद संगमरमर का। अत: कथन 1 गलत है।

लखनऊ स्थित बड़ा इमामबाड़ा और रूमी दरवाज़े के निर्माण में ईंट एवं चूना पत्थर का प्रयोग हुआ है। अत: कथन 2 भी गलत है।

5. भारतीय इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन भावी बुद्ध है, जो संसार की रक्षा हेतु अवतरित होंगे?

(a) अवलोकितेश्वर **(b) लोकेश्वर**
(c) मैत्रेय **(d) पद्मपाणि**

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या: पालि परंपरा में मैत्रेय भावी बुद्ध के रूप में जाने जाते हैं। इस परंपरा में यह मान्यता है कि इनका जन्म तब होगा जब मनुष्यों का औसत जीवनकाल चौरासी हज़ार वर्षों का होगा।

6. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

शिल्प	किस राज्य की परंपरा
1. पुथुक्कुलि शॉल	– तमिलनाडु
2. सुजनी कढ़ाई	– महाराष्ट्र
3. उप्पाडा जामदानी साड़ी	– कर्नाटक

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) 1 और 2**
(c) केवल 3 **(d) 2 और 3**

सही उत्तर: **(a)**

व्याख्या:

- पुथुक्कुलि शॉल तमिलनाडु से संबंधित है।
- सुजनी कढ़ाई हस्तशिल्प का संबंध बिहार से, जबकि उप्पाडा जामदानी साड़ी का संबंध आंध्र प्रदेश से है। ध्यातव्य है कि सुजनी कढ़ाई और उप्पाडा जामदानी साड़ी को जीआई टैग प्राप्त है।

अत: युग्म 2 और 3 सुमेलित नहीं हैं, जबकि युग्म 1 सुमेलित है।

7. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

परम्परा	राज्य
1. चपचार कुट त्योहार	– मिज़ोरम
2. खोंगजॉम परबा गाथागीत	– मणिपुर
3. थांग-टा नृत्य	– सिक्किम

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) 1 और 2**
(c) केवल 3 **(d) 2 और 3**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: चपचार कुट मिज़ोरम में फरवरी-मार्च में मनाया जाने वाला कृषि से संबंधित पर्व है। इस समय तक झूम कृषि के लिये खेत साफ कर लिये गए होते हैं, बीजों की बुआई शुरू करने से पहले के खाली समय में यह त्योहार मनाया जाता है। चपचार कुट, मिज़ोरम में कृषि के फसल चक्र से जुड़े तीन प्रमुख त्योहारों में से एक है, अन्य दो हैं- 'मिम कुट' और 'पावल कुट'।

- खोंगजॉम परबा मणिपुर में ढोलक (ड्रम) का उपयोग करके बल्लाड गायन की एक शैली है जिसमें शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ मणिपुरियों द्वारा लड़े गए वीर युद्ध की कहानियाँ दर्शाई जाती हैं।
- थांग-टा नृत्य- यह मणिपुर की प्राचीन युद्धकला है। मणिपुरी भाषा में 'थांग' का आशय तलवार से और 'टा' का आशय बरछी से है। थांग-टा यहाँ के धार्मिक अनुष्ठानों और नृत्यों से भी जुड़ा है। मणिपुर की थांग-टा युद्धकला मणिपुर की अति प्राचीन मार्शल आर्ट 'हुएन लाल्लोंग' का ही परिष्कृत रूप है तथा इसका प्रचलन मणिपुर के मैत्री समुदाय में ज़्यादा है। अत: युग्म 1 और 2 सही हैं।

2017

1. ऋग्वेद-कालीन आर्यों और सिंधु घाटी के लोगों की संस्कृति के बीच अंतर के संबंध में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

1. ऋग्वेद-कालीन आर्य कवच और शिरस्त्राण (हेलमेट) का उपयोग करते थे जबकि सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों में इनके उपयोग का कोई साक्ष्य नहीं मिलता।

2. ऋग्वेद-कालीन आर्यों को स्वर्ण, चाँदी और ताम्र का ज्ञान था जबकि सिंधु घाटी के लोगों को केवल ताम्र और लोह का ज्ञान था।

3. ऋग्वेद-कालीन आर्यों ने घोड़े को पालतू बना लिया था जबकि इस बात का कोई साक्ष्य नहीं है कि सिंधु घाटी के लोग इस पशु को जानते थे।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**
(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या: ऋग्वेदकालीन आर्यों को स्वर्ण, चांदी, ताम्र और साथ ही लौह का ज्ञान भी था जबकि सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों को ताम्र का ज्ञान तो था पर वे लौह के ज्ञान से वंचित थे।

नोट: सिंधु सभ्यता में घोड़े के साक्ष्यों के विषय में विद्वानों में मतभेद है।

2. मणिपुरी संकीर्तन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. यह गीत और नृत्य का प्रदर्शन है।

2. केवल करताल (सिम्बॅल) ही वह एकमात्र वाद्ययंत्र है जो इस प्रदर्शन में प्रयुक्त होता है।

3. यह भगवान कृष्ण के जीवन और लीलाओं को वर्णित करने के लिये प्रदर्शित किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) 1, 2 और 3 **(b) केवल 1 और 3**
(c) केवल 2 और 3 **(d) केवल 1**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्याः मणिपुरी संकीर्तन में पारंपरिक रूप से गायन, वादन और नृत्य किया जाता है। इसमें विशेष तौर पर मणिपुर के मैदानी भागों में रहने वाले वैष्णव परिवारों के धार्मिक उत्सवों और उनके जीवन के विविध चरणों को कला के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। यह संकीर्तन मंदिर के केंद्रीय भाग में होता है जहाँ पर कलाकार गायन और नृत्य के ज़रिये भगवान कृष्ण के जीवन और कृत्यों का वर्णन करते हैं। बड़े ही विशिष्ट रूप में, उपासकों से भरे हॉल में ढोलक बजाने वाले और गायक-नर्तक अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

3. भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. सौत्रान्तिक और सम्मितीय जैन मत के संप्रदाय थे।

2. सर्वास्तिवादियों की मान्यता थी कि दृग्विषय (फिनोमिना) के अवयव पूर्णतः क्षणिक नहीं हैं, अपितु अव्यक्त रूप में सदैव विद्यमान रहते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 | **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों | **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः सौत्रान्तिक और सम्मितीय बौद्ध मत से संबंधित हैं। अतः कथन 1 असत्य है।

- सर्वास्तिवाद का संबंध बौद्ध सम्प्रदाय से है। इसमें प्रयुक्त सर्व का तात्पर्य तीनों कालों अर्थात् भूत, भविष्य और वर्तमान काल से है। इनकी मान्यता है कि दृग्विषय (फिनोमिना) के अवयव पूर्णतः क्षणिक नहीं हैं बल्कि अव्यक्त रूप में सदैव अस्तित्ववान हैं।

4. बोधिसत्त्व पद्मपाणि का चित्र सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रायः चित्रित चित्रकारी है, जो

(a) अजंता में है | **(b) बादामी में है**

(c) बाघ में है | **(d) एलोरा में है**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः बोधिसत्व पद्मपाणि का चित्र अजंता की गुफा 1 में अवस्थित है। **अतः विकल्प (a) सही है।**

5. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

परंपराएँ	समुदाय
1. चलिहा साहिब उत्सव	- सिंधियों का
2. नन्दा राज जात यात्रा	- गोंडों का
3. वारी-वारकरी	- संथालों का

ऊपर दिये गए युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 | **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 | **(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः चलिहा साहिब उत्सव– सिंधियों का उत्सव (महाराष्ट्र)

- नन्दा राज जात यात्रा– नंदा देवी मंदिर (उत्तराखण्ड)
- वारी-वारकरी– विठोबा देवता (महाराष्ट्र)
- केवल युग्म (1) सुमेलित है। **अतः विकल्प (a) सही है।**

6. निम्नलिखित में से कौन-सा/से सूर्य मंदिरों के लिये विख्यात है/हैं?

1. अरसवल्ली | **2. अमरकंटक**

3. ओंकारेश्वर

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनियेः

(a) केवल 1 | **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 | **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः

1. अरसवल्ली	–	सूर्य मंदिर (आंध्र प्रदेश, श्रीकाकुलम ज़िला)
2. अमरकंटक	–	विन्ध्य और सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों का मिलन-स्थल है। यहाँ जैन मंदिर है।
3. ओंकारेश्वर	–	शिव मंदिर (मध्य प्रदेश, खंडवा ज़िला)

2016

1. मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. तमिल क्षेत्र के सिद्ध (सित्तर) एकेश्वरवादी थे तथा मूर्तिपूजा की निंदा करते थे।

2. कन्नड़ क्षेत्र के लिंगायत पुनर्जन्म के सिद्धांत पर प्रश्नचिह्न लगाते थे तथा जाति अधिक्रम को अस्वीकार करते थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 | **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों | **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः तमिल क्षेत्र के सिद्ध (सिद्धर, जिसमें अगस्त्य भी हैं), शैव झुकाव वाले थे तथा एकेश्वरवादी थे। वे मूर्तिपूजा की निंदा करते थे। कन्नड़ क्षेत्र के लिंगायत भी शैव थे जो पुनर्जन्म व जाति क्रम को नहीं मानते थे।

2. भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. बोधिसत्त्व, बौद्धमत के हीनयान सम्प्रदाय की केंद्रीय संकल्पना है।

2. बोधिसत्त्व अपने प्रबोध के मार्ग पर बढ़ता हुआ करुणामय है।

3. बोधिसत्त्व समस्त सचेतन प्राणियों को उनके प्रबोध के मार्ग पर चलने में सहायता करने के लिये स्वयं की निर्वाण प्राप्ति विलम्बित करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 | **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 2 | **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय का आदर्श बोधिसत्त्व है। बोधिसत्त्व दूसरे के कल्याण को प्राथमिकता देते हुए अपने निर्वाण में विलम्ब करते हैं। हीनयान का आदर्श अर्हत् पद को प्राप्त करना है। जो व्यक्ति अपनी साधना से निर्वाण की प्राप्ति करते हैं उन्हें अर्हत् कहा गया है।

'बोधिसत्त्व' मत का अनुसरण करने वाले लोग मुख्यतः पूर्वी एशिया में फैले हुए हैं। तिब्बत, चीन, मंगोलिया, ताइवान, कोरिया, जापान एवं दक्षिणी-पूर्वी वियतनाम में भी इनकी अच्छी-खासी संख्या पाई जाती है। इस अवधारणा का प्रसार अब पश्चिमी देशों में भी होने लगा है। बोधिसत्त्व शब्द मूलतः संस्कृत के 'बोधि' (जागना या ज्ञानोदीप्ति) और 'सत्य' (चेतन जीव/अवस्था) से मिलकर बना है। वहीं हीनयान शाखा स्वयं के निर्वाण पर केन्द्रित रहती है।

3. अजंता और महाबलीपुरम के रूप में ज्ञात दो ऐतिहासिक स्थानों में कौन-सी बात/बातें समान है/हैं?

1. दोनों एक ही समयकाल में निर्मित हुए थे।
2. दोनों का एक ही धार्मिक सम्प्रदाय से संबंध है।
3. दोनों में शिलाकृत स्मारक हैं।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये।

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 3
(c) केवल 1 और 3
(d) उपर्युक्त कथनों में से कोई भी सही नहीं है।

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः अजंता की कलाकृतियाँ जहाँ ई.पू. दूसरी शताब्दी तक मिलती हैं, वहीं महाबलीपुरम में 7वीं सदी के मध्य में कलाकृतियों का निर्माण देखने को मिला। पुनः अजंता की कलाकृतियों में बौद्ध सम्प्रदाय को महत्त्व मिला, तो महाबलीपुरम में हिन्दू मंदिर (विष्णु, शिव मंदिर आदि) का प्रमाण मिलता है। अजंता और महाबलीपुरम दोनों में शिलाकृत स्मारक हैं। **अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।**

2015

1. हाल ही में निम्नलिखित में से किस एक भाषा को शास्त्रीय भाषा (क्लासिकल लैंग्वेज) का दर्जा (स्टेटस) दिया गया है।

(a) उड़िया | **(b) कोंकणी**
(c) भोजपुरी | **(d) असमिया**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः भारत सरकार द्वारा अब तक 6 भाषाओं को 'शास्त्रीय भाषा' (Classical Language) का दर्जा दिया गया है-

1. तमिल (2004 से) 2. संस्कृत (2005 से)
3. तेलुगू (2008 से) 4. कन्नड़ (2008 से)
5. मलयालम (2013 से) 6. उड़िया (ओडिया) (2014 से)

किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित करने के लिये सरकार ने निम्नलिखित मानदंड तय किये हैं-

- उस भाषा की आरंभिक लिखित सामग्री/अभिलिखित इतिहास बहुत प्राचीन होना चाहिये (1500–2000 वर्षों से अधिक पुराना)।
- उस भाषा को बोलने वाली पीढ़ियाँ उस भाषा के साहित्य/लिखित सामग्री को मूल्यवान विरासत समझती हों।
- उसकी साहित्य परंपरा मौलिक हो तथा किसी अन्य बोली समुदाय से ग्रहण की हुई न हो।
- शास्त्रीय भाषा और साहित्य आधुनिकता से अलग होने के कारण शास्त्रीय भाषा और इससे निकलने वाली दूसरी भाषाओं के बीच अंतर भी हो सकता है।

2. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये–

तीर्थस्थान		अवस्थिति
1. श्रीशैलम	–	नल्लमल्ला पहाड़ियाँ
2. ओंकारेश्वर	–	सतमाला पहाड़ियाँ
3. पुष्कर	–	महादेव पहाड़ियाँ

उपर्युक्त में से कौन-सा/से युग्म सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 | **(b) केवल 2 और 3**
(c) केवल 1 और 3 | **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः उपर्युक्त तीर्थस्थान और उसकी अवस्थिति में श्रीशैलम का संबंध नल्लमल्ला की पहाड़ियों से है। अतः यह युग्म सुमेलित है, शेष युग्म गलत हैं।

- श्रीशैलम नल्लमल्ला पहाड़ियों पर अवस्थित है। यह एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग है। यहाँ शिव की आराधना मल्लिकार्जुन नाम से की जाती है। यह आंध्र प्रदेश के कुरनूल ज़िले में स्थित है।
- श्रीशैलम शक्तिपीठ 51 शक्तिपीठों में से एक है। पुराणों की मान्यता के अनुसार शक्तिपीठ वहीं अस्तित्व में आए, जहाँ-जहाँ सती के अंग के टुकड़े, उनके धारण किये वस्त्र व आभूषण गिरे।
- ओंकारेश्वर मध्य प्रदेश में स्थित है जबकि सतमाला की पहाड़ियाँ भारत के पश्चिमी राज्य महाराष्ट्र में फैली हुई हैं।
- ओंकारेश्वर मंदिर भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह स्थान हिन्दू पवित्र चिह्न 'ॐ' के आकार में बना है। यहाँ ओंकारेश्वर व अमरेश्वर दो मंदिर स्थित हैं।
- महादेव की पहाड़ियाँ मध्य प्रदेश में स्थित हैं, जबकि पुष्कर राजस्थान में अरावली पहाड़ियों पर स्थित है। अजमेर शहर में स्थित पुष्कर में ब्रह्माजी का एक मंदिर है। यहाँ कार्तिक पूर्णिमा को पुष्कर मेला लगता है। इसमें बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक भी आते हैं।
- पुष्कर जैनियों का भी प्रसिद्ध तीर्थस्थल रहा है। जैनियों की वंशावलियों में यह क्षेत्र पद्मावती के नाम से जाना जाता है। जिनदत्त सूरि ने यहाँ की यात्रा की व लोगों को दीक्षा दी। यह क्षेत्र ऊँटों के व्यापार मेले के लिये भी जाना जाता है।

3. भारत के कला और पुरातात्त्विक इतिहास के संदर्भ में निम्न में से किस एक का सबसे पहले निर्माण किया गया था?

(a) भुवनेश्वर स्थित लिंगराज मंदिर

(b) धौली स्थित शैलकृत हाथी

(c) महाबलीपुरम स्थित शैलकृत स्मारक

(d) उदयगिरि स्थित वाराह मूर्ति *सही उत्तर:* (b)

व्याख्या:

कलाकृति		**निर्माण काल**
लिंगराज मंदिर	–	11वीं शताब्दी
धौली का शैलकृत हाथी	–	तीसरी शताब्दी ई.पू.
महाबलीपुरम का स्मारक	–	7वीं-8वीं शताब्दी
उदयगिरि की वाराहमूर्ति	–	गुप्तकालीन

- धौली (भुवनेश्वर) स्थित शैलकृत हाथी का निर्माण अशोक के समय लगभग 260 ई. पू. में कराया गया था। यह केवल 4 फीट ऊँची प्रतिमा है परंतु नीचे से देखने पर यह स्मारकीय प्रतीत होती है।
- लिंगराज मंदिर ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में स्थित है। भगवान त्रिभुवनेश्वर को समर्पित मंदिर का वर्तमान स्वरूप 11वीं शताब्दी में अस्तित्व में आया।
- उदयगिरि की गुफाएँ विदिशा (म.प्र.) से 4 किमी. दूरी पर स्थित हैं। ये 4-5वीं सदी में निर्मित हुईं। गुफा क्रमांक 5 में विष्णु को वाराह अवतार में उत्कीर्ण किया गया है।
- उदयगिरि की गुफा संख्या 5 को वाराह गुफा के नाम से जाना जाता है। यहाँ पत्थर को काटकर एक वाराह अवतार की मूर्ति बनाई गई थी। मूर्ति का मुख वाराह के रूप में है तथा शेष हिस्सा मानवाकृति का है। पुराणों के अनुसार वाराह भगवान ने हिरण्याक्ष राक्षस से पृथ्वी का उद्धार किया था।
- उदयगिरि की गुफाएँ ओडिशा में भुवनेश्वर व कटक ज़िले के निकट से भी प्राप्त हुई हैं। यहाँ कुल 18 गुफाएँ मिली हैं। ये गुफाएँ जैन भिक्षुओं के आवासीय प्रयोजनों के लिये राजा खारवेल द्वारा बनवाई गई थीं। उदयगिरि की ये गुफाएँ दूसरी शताब्दी ई. पू. की हैं।
- महाबलीपुरम का भव्य 'रथ' गुफा मंदिर 7वीं-8वीं शताब्दी में पल्लव राजा नरसिंह वर्मन प्रथम द्वारा निर्मित कराया गया था।

4. कलमकारी चित्रकला निर्दिष्ट करती है–

(a) दक्षिण भारत में सूती वस्त्र पर हाथ से की गई चित्रकारी

(b) पूर्वोत्तर भारत में बाँस के हस्तशिल्प पर हाथ से किया गया चित्रांकन

(c) भारत के पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में ऊनी वस्त्र पर ठप्पे (ब्लॉक) से की गई चित्रकारी

(d) उत्तर-पश्चिमी भारत में सजावटी रेशमी वस्त्र पर हाथ से की गई चित्रकारी *सही उत्तर:* (a)

व्याख्या: कलमकारी एक हस्तकला का प्रकार है जिसमें हाथ से सूती कपड़े पर रंगीन ब्लॉक से छाप बनाई जाती है। इसमें सब्जियों के रंगों से धार्मिक चित्र बनाए जाते हैं। यह दक्षिण भारत के आंध्र प्रदेश में प्रचलित है।

- कलम से की जाने वाली कारीगरी को कलमकारी कहते हैं।
- कलमकारी शब्द का प्रयोग कला एवं निर्मित कपड़े दोनों के लिये किया जाता है। मुख्य रूप से यह कला भारत एवं ईरान में प्रचलित है।
- भारत में कलमकारी के मुख्यत: 2 रूप विकसित हुए हैं– प्रथम, मछलीपट्टनम कलमकारी एवं द्वितीय, श्रीकला हस्ति कलमकारी (आंध्र प्रदेश)।
- सर्वप्रथम वस्त्र को रातभर गाय के गोबर के घोल में डुबोकर रखा जाता है। अगले दिन इसे धूप में सुखाकर दूध और माँड़ के घोल में डुबोया जाता है। बाद में अच्छी तरह सुखाकर इसे नरम करने के लिये लकड़ी के दस्ते से कूटा जाता है। इस पर चित्रकारी करने के लिये विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक पौधों, पत्तियों, पेड़ों की छाल, तनों आदि का प्रयोग किया जाता है।

2014

1. शक संवत् पर आधारित राष्ट्रीय पंचांग (कैलेंडर) का 1 चैत्र, ग्रिगोरियन कैलेंडर पर आधारित 365 दिन के सामान्य वर्ष की निम्नलिखित तिथियों में से किस एक के तदनुरूप है?

(a) 22 मार्च (अथवा 21 मार्च)

(b) 15 मई (अथवा 16 मई)

(c) 31 मार्च (अथवा 30 मार्च)

(d) 21 अप्रैल (अथवा 20 अप्रैल) *सही उत्तर:* (a)

व्याख्या: कुषाण शासक कनिष्क ने 78 ई. में एक संवत् चलाया, इसका प्रथम महीना चैत्र 22 मार्च (अथवा 21 मार्च) से आरंभ होता है। इस संवत् का नाम शक संवत् था। वर्तमान में भारत सरकार द्वारा इसी संवत् का प्रयोग किया जाता है।

- हिंदी (हिंदू) महीनों में वर्ष को निम्न तरह से विभाजित किया गया है–
  - चैत्र (मार्च-अप्रैल)
  - वैशाख (अप्रैल-मई)
  - ज्येष्ठ (मई-जून)
  - आषाढ़ (जून-जुलाई)
  - श्रावण (जुलाई-अगस्त)
  - भाद्रपद (अगस्त-सितंबर)
  - आश्विन (सितंबर-अक्तूबर)
  - कार्तिक (अक्तूबर-नवंबर)
  - मार्गशीर्ष (अग्रहायण) (नवंबर-दिसंबर)
  - पौष (दिसंबर-जनवरी)
  - माघ (जनवरी-फरवरी)
  - फाल्गुन (फरवरी-मार्च)
- शक संवत् के अलावा विक्रम संवत् भी समय गणना की एक प्रणाली है। यह संवत् 57 ई. पू. से आरम्भ होता है। इसका प्रणेता उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य को माना जाता है। बारह महीने का एक वर्ष और सात दिन का एक सप्ताह रखने का प्रचलन विक्रम संवत् से ही शुरू हुआ।

2. फतेहपुर सीकरी का इबादतखाना क्या था?

(a) राजपरिवार के इस्तेमाल के लिये मस्जिद

(b) अकबर का निजी प्रार्थना कक्ष

(c) वह भवन जिसमें विभिन्न धर्मों के विद्वानों के साथ अकबर चर्चा करता था।

(d) वह कमरा जिसमें विभिन्न धर्म वाले कुलीन-जन धार्मिक बातों के विचारार्थ जमा होते थे।

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: अपनी प्रजा को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान कर अकबर ने इस्लाम धर्म के मूल तत्त्वों को समझने की उत्सुकता व्यक्त की। इसी उद्देश्य हेतु 1575 में फतेहपुर सीकरी में इबादतखाने के निर्माण का आदेश दिया गया।

- इसमें प्रति बृहस्पतिवार को संध्या के समय नियमित रूप से धार्मिक विचार-विमर्श हुआ करता था।
- प्रारंभ में यह केवल मुसलमान शेख-सैय्यद और उलेमाओं तक सीमित था।
- उलेमाओं के आपसी द्वेष व उनकी अशिष्टता से अकबर बहुत असंतुष्ट हुआ। फलतः उसने सभी धर्मावलम्बियों के लिये इबादतखाने का द्वार खोल दिया।
- इसमें विभिन्न हिंदू, ईसाई, पारसी, जैन संतों ने भाग लिया।
- इबादतखाने के अतिरिक्त अकबर ने सभी धर्मों के निचोड़ के रूप में 'दीन-ए-इलाही' (तौहीद-ए-इलाही) नामक धर्म का प्रवर्तन किया। इस धर्म का प्रधान पुरोहित अबुल फज़ल था। इसके अतिरिक्त अकबर ने एक नया कैलेण्डर इलाही संवत् शुरू किया।

3. भारत के सम्प्रतीक के नीचे उत्कीर्ण भारत की राष्ट्रीय आदर्शोक्ति 'सत्यमेव जयते' कहाँ से ली गई है?

(a) कठ उपनिषद् **(b) छान्दोग्य उपनिषद्**

(c) ऐतरेय उपनिषद् **(d) मुंडक उपनिषद्**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: भारत के सम्प्रतीक के नीचे उत्कीर्ण भारत की राष्ट्रीय आदर्शोक्ति 'सत्यमेव जयते' मुण्डकोपनिषद से ली गई है।

- 'सत्यमेव जयते' भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य है।
- 'सत्यमेव जयते' का शाब्दिक अर्थ होता है- "सत्य की ही विजय होती है।"
- यह भारत के राष्ट्रीय प्रतीक सारनाथ के सिंह स्तम्भ के नीचे देवनागरी लिपि में अंकित है।
- मुण्डकोपनिषद, अथर्ववेद से संबंधित उपनिषद है।
- अथर्ववेद के उपनिषदों में मुण्डकोपनिषद, माण्डूक्योपनिषद, प्रश्नोपनिषद प्रमुख हैं।
- मुण्डकोपनिषद में यज्ञों को टूटी-फूटी नौकाओं के समान कहा गया है तथा ज्ञान की महत्ता को बताया गया है।

4. भारत के निम्नलिखित नगरों पर विचार कीजिये-

1. भद्राचलम **2. चंदेरी**

3. कांचीपुरम **4. करनाल**

उपर्युक्त में से कौन-से पारंपरिक साड़ी/वस्त्र उत्पादन के लिये विख्यात हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) 1, 2 और 3 **(d) 1, 3 और 4**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: अलग-अलग शैलियों की साड़ियों में कांजीवरम साड़ी, बनारसी साड़ी, पटोला साड़ी और हकोबा मुख्य हैं।

- मध्य प्रदेश की चंदेरी, महेश्वरी, असम की मूँगा रेशम, ओडिशा की बोमकई, राजस्थान की बंधेज, गुजरात की गठोडा व पटोला, बिहार की तसर, छत्तीसगढ़ी कोसा रेशमी साड़ी, महाराष्ट्र की पैठानी, तमिलनाडु की कांजीवरम, उत्तर प्रदेश की तांची, जामदानी, जामवर, बनारसी व पश्चिम बंगाल की बालूचरी प्रमुख हैं।
- भद्राचलम, तेलंगाना में अवस्थित है। यह श्री रामचंद्र-सीता स्वामी मंदिर के कारण प्रसिद्ध है।
- करनाल, हरियाणा राज्य का एक शहर है जो यमुना नदी के प्राचीन किनारे के ऊँचे भाग पर स्थित है। यहाँ कंबल और जूते का उद्योग काफी उन्नत अवस्था में है।

5. भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में 'पंचायतन' शब्द किसे निर्दिष्ट करता है?

(a) ग्राम के ज्येष्ठ-जनों की सभा

(b) धार्मिक सम्प्रदाय

(c) मंदिर रचना शैली

(d) प्रशासनिक अधिकारी

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: 'पंचायतन' शब्द, मंदिर रचना शैली से संबंधित है। एक हिंदू मंदिर तब पंचायतन शैली का कहलाता है जब मुख्य मंदिर चार सहायक मंदिरों से घिरा हुआ होता है। आमतौर पर हिंदू मंदिर पश्चिम-पूर्व धुरी के साथ बनाया जाता है, ऐसे में चार सहायक मंदिर उत्तर-पूर्व, दक्षिण-पूर्व, दक्षिण-पश्चिम व उत्तर-पश्चिम में स्थित होंगे।

- **पंचायतन मंदिरों के उदाहरण:**
  - कंदरिया महादेव (खजुराहो)
  - ब्रह्मेश्वर मंदिर (भुवनेश्वर)
  - लक्ष्मण मंदिर (खजुराहो)
  - लिंगराज मंदिर (भुवनेश्वर)
  - दशावतार मंदिर (देवगढ़, उत्तर प्रदेश)
  - गोंडेश्वर मंदिर (महाराष्ट्र)
- **भारत के मंदिरों को निर्माण शैली के आधार पर 3 भागों में विभाजित किया जाता है-**
  - नागर शैली के मंदिर (उत्तर भारतीय शैली)
  - द्रविड़ शैली के मंदिर (दक्षिण भारतीय शैली)
  - बेसर शैली के मंदिर (मिश्रित शैली)

6. निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा एक भारतीय षड्दर्शन का भाग नहीं है?

(a) मीमांसा और वेदांत (b) न्याय और वैशेषिक

(c) लोकायत और कापालिक (d) सांख्य और योग

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: षड्दर्शन को आस्तिक दर्शन के नाम से भी जाना जाता है। इनकी संख्या 6 है।

- हिन्दू धर्म में दर्शन की अत्यन्त प्राचीन परम्परा रही है। वेदों की सत्ता को स्वीकार करने के कारण षड्दर्शनों को 'आस्तिक दर्शन' कहा जाता है। हिन्दू दार्शनिक परंपरा में विभिन्न प्रकार के आस्तिक दर्शनों के अलावा अनीश्वरवादी और भौतिकवादी दार्शनिक परंपराएँ भी विद्यमान रही हैं।
- षड्दर्शन एवं उनके प्रणेता:
  - सांख्य - महर्षि कपिल
  - न्याय - महर्षि गौतम
  - योग - महर्षि पतंजलि
  - वैशेषिक - महर्षि कणाद
  - पूर्व मीमांसा - महर्षि जैमिनी
  - वेदांत (उत्तर मीमांसा) - महर्षि बादरायण
  - लोकायत अथवा चावकि दर्शन एक प्राचीन भौतिकवादी नास्तिक दर्शन है। यह केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है तथा पारलौकिक सत्ताओं को स्वीकार नहीं करता है। कापालिक एक तांत्रिक शैव संप्रदाय है जिसमें वामाचार अपने चरम रूप में पाया जाता है।

7. निम्नलिखित भाषाओं पर विचार कीजिये-

1. गुजराती

2. कन्नड़

3. तेलुगू

उपर्युक्त में से किसको/किनको सरकार ने क्लासिकल भाषा/भाषाएँ घोषित किया है?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3

(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: भारत सरकार ने शास्त्रीय भाषा की पात्रता निर्धारण करने हेतु निम्न मापदंड स्थापित किये हैं-

- अपने ग्रंथों/इतिहास की 1500-2000 वर्ष की अवधि की उच्च पुरातनता।
- प्राचीन साहित्य/ग्रंथों का एक ढाँचा, जो वक्ताओं की पीढ़ियों में मूल्यवान धरोहर माना जाता हो।
- साहित्यिक परंपरा मूल हो तथा अन्य भाषिक समुदाय से उधार नहीं ली गई हो।
- शास्त्रीय भाषा में निम्न 6 भाषाएँ सम्मिलित हैं:

1. तमिल (2004 से)	2. संस्कृत (2005 से)
3. तेलुगू (2008 से)	4. कन्नड़ (2008 से)
5. मलयालम (2013 से)	6. ओडिया (2014 से)

8. भारत की कला व संस्कृति के इतिहास के संबंध में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

	विख्यात मूर्ति शिल्प	स्थल
1.	बुद्ध के महापरिनिर्वाण की एक भव्य प्रतिमा, जिसमें ऊपर की ओर अनेक दैवी संगीतज्ञ तथा नीचे की ओर उनके दु:खी अनुयायी दर्शाए गए हैं।	: अजंता
2.	प्रस्तर पर उत्कीर्ण विष्णु के वराह अवतार की विशाल प्रतिमा, जिसमें वह देवी पृथ्वी को गहरे विक्षुब्ध सागर से उबारते दर्शाए गए हैं।	: माउंट आबू
3.	विशाल गोलाश्मों पर उत्कीर्ण 'अर्जुन की तपस्या'/'गंगा- अवतरण'	: मामल्लपुरम

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3

(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: बुद्ध के महापरिनिर्वाण की एक भव्य प्रतिमा अजंता में पाई गई है। इसमें ऊपर की ओर अनेक दैवी संगीतज्ञ तथा नीचे की ओर दु:खी अनुयायी दर्शाए गए हैं।

- प्रस्तर पर उत्कीर्ण विष्णु के वाराह अवतार की विशाल प्रतिमा उदयगिरि की गुफाओं (मध्य प्रदेश) में पाई गई है। इसमें भगवान वाराह देवी पृथ्वी को गहरे विक्षुब्ध सागर से उबारते दर्शाए गए हैं।
- उदयगिरि (मध्य प्रदेश) की गुफा संख्या 5 को वाराह गुफा के नाम से जाना जाता है। यहाँ पत्थर को काटकर एक वाराह अवतार की मूर्ति बनाई गई है। मूर्ति का मुख भाग वाराह के रूप में है तथा शेष हिस्सा मानवाकृति का है। पुराणों के अनुसार, वाराह भगवान ने हिरण्याक्ष राक्षस से पृथ्वी का उद्धार किया था।
- वाराह के कंधों पर नारी रूपी पृथ्वी को दर्शाया गया है। साथ में दिखाई दे रही दो जलधाराएँ, गंगा तथा यमुना का प्रतीक हैं।
- उल्लेखनीय है कि बादामी की गुफाओं में भी गुफा संख्या 2 में विष्णु के वाराह अवतार द्वारा पृथ्वी को गहरे सागर से उबारते हुए दर्शाया गया है।
- विशाल गोलाश्मों पर उत्कीर्ण 'अर्जुन की तपस्या'/ 'गंगा-अवतरण' की मूर्ति, मामल्लपुरम में पाई गई है।
- 'अर्जुन की तपस्या' का निर्माण, 7वीं सदी में किया गया था जो 43 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। इस स्थान पर खुली जगह पर एक पत्थर का खंभा रखा हुआ है। इसे गंगा के अवतरण के नाम से भी जाना जाता है।

- माउंट आबू, हिंदू और जैन धर्म का प्रमुख तीर्थस्थल है। जैनियों का दिलवाड़ा मंदिर यहाँ का प्रमुख आकर्षण है। इसलिये उपर्युक्त विकल्पों में यह असंगत है। **अतः सही उत्तर (c) है।**

9. विख्यात सत्रीया नृत्य के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. सत्रीया, संगीत, नृत्य तथा अभिनय का सम्मिश्रण है।

2. यह असम के वैष्णवों की शताब्दियों की पुरानी जीवंत-परंपरा है।

3. यह तुलसीदास, कबीर और मीराबाई द्वारा रचित भक्ति गीतों के शास्त्रीय रागों तथा तालों पर आधारित है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**

(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: 15वीं शताब्दी ई. में असम के महान वैष्णव संत और सुधारक श्रीमंत शंकरदेव द्वारा सत्रीया नृत्य को वैष्णव धर्म के प्रचार हेतु प्रारंभ किया गया।

- इस नृत्य शैली के वैष्णव मठ या विहारों में धार्मिक विचार एवं सत्रों के साथ जुड़ाव के कारण इसे सत्रीया नाम दिया गया।
- इस नृत्य शैली को संगीत नाटक अकादमी द्वारा 15 नवंबर, 2000 को अपने शास्त्रीय नृत्य की सूची में शामिल किया गया जिससे शास्त्रीय नृत्यों की संख्या बढ़कर आठ हो गई।

10. भारत की संस्कृति एवं परम्परा के संदर्भ में 'कलारीपयट्टू' क्या है?

(a) यह शैव मत का प्राचीन भक्ति पंथ है, जो अभी भी दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में प्रचलित है।

(b) यह काँसे व पीतल के काम की एक प्राचीन शैली है, जो अभी भी कोरोमण्डल क्षेत्र के दक्षिणी हिस्से में पाई जाती है।

(c) यह नृत्य-नाटिका का एक प्राचीन रूप है और मालाबार के उत्तरी हिस्सों में एक जीवन्त परम्परा है।

(d) यह एक प्राचीन मार्शल कला है और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में जीवन्त परम्परा है।

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: कलारीपयट्टू एक मार्शल कला है जो 13वीं सदी के दौरान केरल में शुरू हुई। 'कलारी' शब्द का सर्वप्रथम वर्णन संगम साहित्य में मिलता है, जहाँ इसको युद्ध व युद्ध अखाड़ा दोनों के लिये प्रयोग किया गया है।

- अब यह तमिलनाडु तथा केरल में प्रचलित है। मूल रूप से यह केरल के उत्तरी व मध्य भागों में तथा कर्नाटक के तुलुनाडु क्षेत्र में प्रचलित थी।
- कलारीपयट्टू तकनीक कदम एवं आसन का एक संयोजन होती है। एक परंपरा से दूसरी परंपरा में इन शैलियों में काफी भिन्नता देखी जाती है।
- कलारीपयट्टू की उत्तर भारतीय शैलियाँ मुख्यत: हथियारों पर आधारित हैं, हालाँकि, द्वंद्व युद्ध सत्रों में इसका प्रयोग नहीं किया जाता।

11. भारत में बौद्ध इतिहास, परम्परा और संस्कृति के सम्बन्ध में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

विख्यात तीर्थस्थल		अवस्थान
1. टाबो मठ व मंदिर, संकुल	-	स्पीति घाटी
2. लहोत्सव लाखांग मंदिर, नको	-	जंस्कार घाटी
3. अल्ची मंदिर संकुल	-	लद्दाख

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: लहोत्सव लाखांग मंदिर, नको हिमाचल प्रदेश में स्थित है, जबकि जंस्कार घाटी जम्मू-कश्मीर में स्थित है, अतः द्वितीय युग्म गलत है। बाकी दोनों युग्म सुमेलित हैं जिनकी चर्चा निम्न है-

- टाबो मठ, हिमाचल प्रदेश की स्पीति घाटी के तबो गाँव में स्थित है। यह तिब्बती वर्ष के 996 ई. में स्थापित किया गया था। इस मठ की दीवारों पर बड़ी संख्या में भित्ति-चित्रों के रूप में बौद्ध धर्म से संबद्ध कहानियाँ अंकित हैं।
- अल्ची मंदिर संकुल, लद्दाख के लेह ज़िले के अल्ची गाँव में स्थित है। यह लेह, लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद के अंतर्गत आता है।

भारत के महत्त्वपूर्ण बौद्ध मठ

- नामग्याल मठ - धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)
- थिकसे मठ - लद्दाख
- हेमिस मठ - लद्दाख
- शाशुर (Shashur) मठ - लाहुल स्पीति (हिमाचल प्रदेश)
- मिंड्रॉलिंग (Mindrolling) मठ - देहरादून (उत्तराखंड)
- रूमटेक (Rumtek) मठ - गंगटोक (सिक्किम)
- तवांग मठ - अरुणाचल प्रदेश
- नामड्रॉलिंग मठ - मैसूर (कर्नाटक)
- बोधिमंडा विहार - बोधगया (बिहार)

12. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

1. गरबा	-	गुजरात
2. मोहिनीअट्टम	-	ओडिशा
3. यक्षगान	-	कर्नाटक

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: भारत के विभिन्न शास्त्रीय व पारम्परिक नृत्य और संबंधित राज्य–

- भरतनाट्यम – तमिलनाडु
- कथकली – केरल
- कुचिपुड़ी – आन्ध्र प्रदेश
- कथक – उत्तर प्रदेश (उत्तर भारत)
- मणिपुरी – मणिपुर
- सत्रीया – असम
- गरबा – गुजरात
- मोहिनीअट्टम – केरल
- यक्षगान – कर्नाटक
- ओडिसी – ओडिशा

13. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–

1. 'बीजक' संत दादू दयाल के उपदेशों का एक संकलन है।

2. पुष्टि मार्ग के दर्शन को मध्वाचार्य ने प्रतिपादित किया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्या: बीजक, कबीर की वाणी का संकलन है तथा पुष्टि मार्ग के प्रतिपादक श्री वल्लभाचार्य थे। अत: उपर्युक्त कथनों में से कोई सही नहीं है।

- बीजक, 'कबीर वाणी' का प्रामाणिक ग्रंथ कहा जाता है। कबीरपंथी महात्मा पूरन साहेब ने कबीर के मुख्य ग्रंथ मूल बीजक की जो टीका लिखी है, उसके अनुसार बीजक में निम्नलिखित 11 अंगों का निर्देश और विस्तार दिया गया है– रमैनी, सबद, ज्ञान चौतीसा, विप्रमतीसी, कहरा, बसंत, चाचर, बेलि, बिरहुली, हिंडोला, साखी।
- वल्लभाचार्य द्वारा प्रतिपादित शुद्धाद्वैतवाद दर्शन के भक्तिमार्ग को पुष्टिमार्ग कहते हैं। इसके अनुसार ब्रह्म माया से अलिप्त है इसलिये शुद्ध है। माया से अलिप्त होने के कारण ही यह अद्वैत है। यह ब्रह्म सगुण भी है, निर्गुण भी।
- आचार्य मध्वाचार्य का भक्तिपरक मत अमला भक्ति के नाम से प्रसिद्ध है। कहीं-कहीं इसको ब्रह्म संप्रदाय भी कहा गया है। मध्वाचार्य के अनुसार वास्तविक सुख की अनुभूति ही मुक्ति है। वास्तविक सुख वह है, जिसमें दु:ख के क्षय के साथ परमानंद का उदय हो जाता है।

14. 'मंगानियार' के नाम से जाना जाने वाला लोगों का समुदाय–

(a) पूर्वोत्तर भारत में अपनी मार्शल कलाओं के लिये विख्यात है।

(b) पश्चिमोत्तर भारत में अपनी संगीत परम्परा हेतु विख्यात है।

(c) दक्षिण भारत में अपने शास्त्रीय गायन हेतु विख्यात है।

(d) मध्य भारत में पच्चीकारी परम्परा के लिये विख्यात है।

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: 'मंगानियार' समुदाय, राजस्थान के मरुस्थल में पाया जाने वाला एक मुस्लिम समुदाय है। ये राजस्थान के बाड़मेर एवं जैसलमेर ज़िले और पाकिस्तान के सिंध प्रांत में निवास करते हैं।

- ये अपने शास्त्रीय लोक संगीत के लिये प्रसिद्ध हैं। यह समुदाय वंशानुगत पेशेवर संगीतकारों का समूह है, जिनका पीढ़ियों से अमीर ज़मींदारों व अभिजात्यों द्वारा समर्थन किया गया है।
- कमाचया, खरताल, ढोलक आदि इनके प्रमुख वाद्य-यंत्र होते हैं।
- सकर ख़ान, कचरा ख़ान, समंदर ख़ान, ममे ख़ान, गाजी ख़ान इस समूह की कुछ विख्यात हस्तियाँ हैं।
- मंगानियार स्वयं को राजपूत जाति के वंशजों के रूप में बताते हैं। हालाँकि, ये मुस्लिम समुदाय से हैं परंतु इनके गीत हिंदू देवी-देवताओं की स्तुति में भी हैं। ये हिंदू त्योहार दीपावली व होली भी मनाते हैं।
- इनकी संगीत कला मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है।

2013

1. कुछ शैलकृत बौद्ध गुफाओं को चैत्य कहते हैं, जबकि अन्य को विहार। दोनों में क्या अंतर है?

(a) विहार पूजा स्थल होता है, जबकि चैत्य बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान है

(b) चैत्य पूजा स्थल होता है, जबकि विहार बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान है

(c) चैत्य गुफा के दूर के सिरे पर स्तूप होता है, जबकि विहार गुफा पर अक्षीय कक्ष होता है

(d) दोनों में कोई वस्तुपरक अंतर नहीं होता

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: भारतीय वास्तुकला से संबंधित ग्रंथों में चैत्य शब्द का प्रयोग पूजा या प्रार्थना स्थलों के लिये प्रयुक्त किया जाता है, जबकि बौद्ध भिक्षुओं के निवास स्थल को विहार कहते हैं। अत: इस प्रश्न का उपयुक्त उत्तर (b) है।

- शैलकृत बौद्ध गुफाओं के निर्माण की प्रक्रिया 200 ई. पू. के आस-पास ही प्रारंभ हो चुकी थी, परंतु सातवाहन काल में पश्चिमोत्तर दक्कन में अत्यंत दक्षता के साथ चट्टानों को तराशकर चैत्य एवं विहार बनाए गए।
- 'चैत्य' का शाब्दिक अर्थ है– चिता संबंधी। इसमें महापुरुषों के अवशेष सुरक्षित होते हैं, अत: चैत्य उपासना का केंद्र बन गए।
- विहार के केंद्र में एक चतुर्भुजाकार या अंडाकार कक्ष होता है।
- सातवाहनों के समय नासिक, कार्ले, भज प्रमुख विहार थे। कलिंग राजा खारवेल के शासन में जैन भिक्षुओं के लिये उदयगिरि एवं खंडगिरि में विहार बनाए गए।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा एक बौद्ध मत में निर्वाण की अवधारणा की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या करता है?

(a) तृष्णारूपी अग्नि का शमन

(b) स्वयं की पूर्णतः अस्तित्वहीनता

(c) परमानन्द एवं विश्राम की स्थिति

(d) धारणातीत मानसिक अवस्था *सही उत्तरः* (a)

व्याख्याः बुद्ध के अनुसार, जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष या निर्वाण है। निर्वाण वह परम शांति है जो तृष्णा, क्रोध, लोभ, मोह जैसी विषादकारी मन:स्थितियों के शमन के बाद उत्पन्न होता है। अत: स्वयं की पूर्णत: अस्तित्वहीनता, परमानंद एवं विश्राम की स्थिति तथा धारणातीत मानसिक अवस्था बौद्ध मत में निर्वाण की अवधारणा की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या नहीं करती है, बल्कि तृष्णा रूपी अग्नि का शमन ज़्यादा सटीक व्याख्या करता है। इसलिये इसका उत्तर विकल्प (a) है।

- बौद्ध साहित्य में निर्वाण की उपमा बुझे हुए दीपक से की जाती है। बुद्ध ने कहा कि जिस प्रकार तेल और बत्ती के रहने से दीपक जलता है और तेल व बत्ती के समाप्त हो जाने पर दीपक बुझ जाता है, उसी प्रकार तृष्णा के क्षय से जीवन-मरण की प्रक्रिया समाप्त हो जाती है।

3. निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन जैन सिद्धांत के अनुरूप है/हैं?

1. कर्म को विनष्ट करने का सुनिश्चित मार्ग तपश्चर्या है।

2. प्रत्येक वस्तु में, चाहे वह सूक्ष्मतम कण हो, आत्मा होती है।

3. कर्म आत्मा का विनाशक है और अवश्य इसका अंत करना चाहिये।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः

- जैन दर्शन, आत्मा और पुद्‌गल के संयोग को बंधन बताता है। जैन दर्शन के अनुसार कर्मों के कारण ही जीव बंधन में पड़ता है। इसलिये कर्म बंधन का टूटना ही मोक्ष है।
- मोक्ष प्राप्ति के लिये जीवों का कर्मों से मुक्त होना आवश्यक है। इसके लिये आवश्यक है कि त्रिरत्नों का अनुसरण किया जाए। ये त्रिरत्न हैं- सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् चरित्र। भगवान महावीर ने मोक्ष के लिये कठोर तपश्चर्या तथा काया क्लेश पर बल दिया।
- जैन सिद्धान्त सृष्टि के कण-कण में जीवों के वास को स्वीकार करता है। इसके अनुसार व्यक्ति के संसार की ओर खिंचे जाने का कारण कर्म है। इस सिद्धान्त में कर्म को बंधन का कारण तथा सूक्ष्मतम तत्त्व 'भूततत्त्व' माना गया है।

4. भारतीय शिलावास्तु के इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. बादामी की गुफाएँ भारत की प्राचीनतम अवशिष्ट शैलकृत गुफाएँ हैं।

2. बाराबर की शैलकृत गुफाएँ सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा मूलतः आजीवकों के लिये बनवाई गई थीं।

3. एलोरा में गुफाएँ विभिन्न धर्मों के लिये बनवाई गई थीं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः भारत की प्राचीनतम अवशिष्ट शैलकृत गुफाएँ भीमबेटका (मध्य प्रदेश) में हैं जिनका संबंध प्रागैतिहासिक काल से है, जबकि बादामी की गुफाएँ 6-8वीं शताब्दी में निर्मित हुई हैं। बाराबर की गुफाओं का निर्माण सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने नहीं बल्कि सम्राट अशोक ने किया था। अत: उपरोक्त लिखित दोनों कथन गलत हैं, जबकि एलोरा की गुफाओं में बौद्ध, जैन एवं हिंदू सभी धर्मों से जुड़े साक्ष्य उपलब्ध होते हैं। अत: सही उत्तर विकल्प (c) होगा।

- बादामी की गुफाएँ 6-8वीं शताब्दी में शासन करने वाले वातापी शासक चालुक्यों द्वारा निर्मित की गई थीं। बादामी की 4 गुफाओं में 2 गुफाएँ भगवान विष्णु, 1 जैन धर्म व 1 भगवान शिव से संबंधित है।
- बाराबर की शैलकृत गुफाओं में 4 गुफाएँ- लोमस ऋषि गुफा, सुदामा गुफा, कर्ण चौपर व विश्व झोपड़ी शामिल हैं। इनका निर्माण मौर्य शासक अशोक ने करवाया था, जबकि अशोक के पौत्र दशरथ ने तीन गुफाओं (नागार्जुनी गुफाएँ) का निर्माण कराया था। ये गुफाएँ आजीवक सम्प्रदाय के लोगों को दान दी गई थीं।
- एलोरा की गुफाओं का निर्माण 7-12वीं शताब्दी के मध्य हुआ। एलोरा की गुफाएँ महाराष्ट्र के औरंगाबाद ज़िले में स्थित हैं। एलोरा की 34 प्रसिद्ध शैलकृत गुफाएँ 1 से 12 तक बौद्धों, 13 से 29 तक हिन्दुओं और 30 से 34 तक जैनियों से संबंधित हैं।

5. भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में, नृत्य एवं नाट्य-कला की एक मुद्रा जिसे 'त्रिभंग' कहा जाता है, प्राचीन काल से आज तक भारतीय कलाकारों को अतिप्रिय रही है। निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन इस मुद्रा को सर्वोत्तम रूप में वर्णित करता है?

(a) एक पाँव मोड़ा जाता है और देह थोड़ी, किंतु विपरीत दिशा में कटि एवं ग्रीवा पर वक्र की जाती है

(b) मुख अभिव्यंजनाएँ, हस्तमुद्राएँ एवं आसज्जा, कतिपय महाकाव्य अथवा ऐतिहासिक पात्रों को प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त करने के लिये संयोजित की जाती हैं

(c) देह, मुख एवं हस्तों की गति का प्रयोग स्वयं को अभिव्यक्त करने अथवा एक कथा कहने के लिये किया जाता है

(d) मंद स्मिति, थोड़ी वक्र कटि एवं कतिपय हस्तमुद्राओं पर बल दिया जाता है, प्रेम एवं शृंगार की अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने के लिये

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः भारतीय नाट्य परंपरा में 'त्रिभंग मुद्रा' के तहत ऐसी आकृति बनाई जाती है जिसमें एक पैर मोड़ा जाता है तथा देह कटि एवं ग्रीवा पर वक्र की जाती है।

- 'त्रिभंग मुद्रा' का प्रयोग पारंपरिक भारतीय मूर्तिकला में किया जाता है।
- इस मुद्रा में एक पाँव मोड़ा जाता है और देह थोड़ी, किंतु विपरीत दिशा में कटि एवं ग्रीवा पर वक्र की जाती है। ओडिसी नृत्य गतिविधि की तकनीकियाँ दो आधारभूत मुद्राओं 'चौक' और 'त्रिभंग' के आस-पास निर्मित होती हैं। 'त्रिभंग' एक स्त्रियोचित मुद्रा है, जिसमें शरीर गले, धड़ और घुटने पर मुड़ा होता है।
- 'त्रिभंग मुद्रा' में शरीर का आकार 'S' (अंग्रेज़ी वर्णमाला के 'एस' अक्षर) के समान हो जाता है।

6. निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थलों पर विचार कीजिये-

1. अजंता की गुफाएँ

2. लेपाक्षी मंदिर

3. साँची स्तूप

उपर्युक्त स्थलों में से कौन-सा/से भित्ति चित्रकला के लिये भी जाना जाता है/जाने जाते हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**

(c) 1, 2 और 3 **(d) कोई नहीं**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः अजंता की गुफाएँ व लेपाक्षी मंदिर भित्ति चित्रकला (Wall Painting) के लिये जाने जाते हैं। साँची का स्तूप आंशिक रूप से भित्ति चित्रकला को भी धारण करता है, परंतु यह उसकी महत्त्वपूर्ण विशेषता नहीं है। अतः उपरोक्त विकल्पों में से (b) सही उत्तर है।

- प्रागैतिहासिक काल से ही मिट्टी के बर्तनों, दीवारों आदि पर चित्रकारी की जा रही है।
- लगभग तीसरी-चौथी शताब्दी ई. पू. का एक बौद्ध ग्रंथ विनयपिटक, कई ऐसे विहार-गृहों का प्रमाण देता है जहाँ चित्रकक्ष हैं। साथ ही महाभारत तथा रामायण आदि के प्रसंगों में भी भित्ति-चित्र का वर्णन मिलता है।
- महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित अजंता गुफाओं में भी शानदार भित्ति चित्रकारी देखने को मिलती है। इस चित्रकला की विषय-वस्तु को देखें तो स्पष्ट होगा कि छतों व स्तम्भों की चित्रकारी को छोड़कर लगभग शेष सभी चित्रांकन बौद्ध धर्म से संबंधित हैं।
- लेपाक्षी मंदिर, आंध्र प्रदेश के अनन्तपुर में स्थित है। यह अपनी भित्ति चित्रकला के लिये जाना जाता है। इस विशाल मंदिर परिसर में भगवान शिव, विष्णु व वीरभद्र को समर्पित तीन मंदिर हैं।

7. भारत में दार्शनिक विचार के इतिहास के संबंध में, सांख्य सम्प्रदाय से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. सांख्य पुनर्जन्म व आत्मा के आवागमन के सिद्धांत को स्वीकार नहीं करता है।

2. सांख्य की मान्यता है कि आत्मज्ञान ही मोक्ष की ओर ले जाता है, न कि कोई बाह्य प्रभाव अथवा कारक।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः कपिल मुनि द्वारा प्रवर्तित सांख्य दर्शन में पुनर्जन्म व आत्मा के आवागमन के सिद्धांत को स्वीकार किया गया है।

- भारतीय दर्शनों के 6 प्रकारों में सांख्य भी एक है, जो प्राचीन काल में अत्यन्त प्रचलित हुआ था। इसकी स्थापना करने वाले महर्षि कपिल माने जाते हैं।
- इसकी सबसे प्रमुख धारणा सृष्टि के प्रकृति-पुरुष से बनी होने की है, यहाँ प्रकृति जड़ है तथा पुरुष चेतन।
- इस दर्शन की मान्यता है कि यथार्थ/आत्मज्ञान ही मोक्ष की ओर ले जाता है, न कि कोई बाह्य प्रभाव या कारक। अतः कथन 2 सही है।
- यथार्थ ज्ञान, प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द के माध्यम से हो सकता है। आजकल यही मार्ग वैज्ञानिक अनुसंधान का भी है।
- इस दर्शन के अनुसार, हम कई प्रकार के दुःखों को भोगते हैं- आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। इन दुःखों से कई बार तात्कालिक मुक्ति होती है, लेकिन इनसे स्थायी मुक्ति के लिये मोक्ष या कैवल्य की ओर ध्यान लगाना चाहिये।

2012

1. मध्ययुगीन भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में सूफी संत निम्नलिखित में से किस तरह के आचरण का निर्वाह करते थे?

1. ध्यान साधना व श्वास नियमन

2. एकांत में कठोर यौगिक व्यायाम

3. श्रोताओं में आध्यात्मिक हर्षोन्माद उत्पन्न करने के लिये पवित्र गीतों का गायन

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**
(c) केवल 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: मध्ययुगीन सूफी संतों के आचरण के संदर्भ में तीनों कथन सही हैं, इनकी विस्तृत चर्चा निम्न है-

- सूफीवाद, इस्लाम के भीतर ही एक सुधारवादी आंदोलन के रूप में ईरान से शुरू हुआ था।
- भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पूर्व सूफी सिलसिले का आगमन हो चुका था।
- 12वीं शताब्दी तक सूफी सम्प्रदाय 12 सिलसिलों में विभाजित हो गया था। भारत में चिश्ती, सुहरावर्दी, कादिरी, सत्तारी, नक्शबंदी आदि प्रमुख सम्प्रदाय थे।
- प्रेम व उदारता सूफी आंदोलन का मूल भाव था। इनकी रहस्यवादी भावना व्यक्ति और समाज को वर्ग, धर्म, धन, शक्ति और पद के अवरोधों से ऊपर उठाकर उनकी नैतिक उन्नति में योगदान देती थी। इन्होंने कर्मकाण्डों व अंधविश्वासों का विरोध किया।
- सूफी संत, शारीरिक व्यायाम, मानसिक ध्यान साधना, श्वास का नियमन तथा अध्यात्म द्वारा खुशी प्रदान करने के लिये पवित्र गीतों का गायन करते थे।
- निजामुद्दीन औलिया, जो कि चिश्ती सिलसिला से संबद्ध थे, यौगिक प्राणायाम करते थे। वे इसमें इतने पारंगत थे कि योगी लोग उन्हें 'सिद्ध पुरुष' कहा करते थे।

2. पूर्व वैदिक आर्यों का धर्म प्रमुखतः था-

(a) भक्ति **(b) मूर्तिपूजा एवं यज्ञ**
(c) प्रकृति पूजा एवं यज्ञ **(d) प्रकृति पूजा एवं भक्ति**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: प्रकृति पूजा एवं यज्ञ ही आर्यों के धर्म की मुख्य विशेषता थी।

- ऋग्वैदिक आर्यों का प्रारम्भिक जीवन कबायली था। अतः उनके देवता भी प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक थे।
- यास्क ने अपने ग्रंथ 'निरूक्त' में ऋग्वैदिक देवताओं की मंडली बनाई है जिनकी संख्या 33 है। इन्हें आकाश, अंतरिक्ष एवं पृथ्वी के देवताओं के रूप में विभाजित किया गया है।
- इंद्र इनका सबसे प्रमुख देवता था, जिसे किलों को तोड़ने वाला (पुरन्दर) कहा गया है। इसके अतिरिक्त अग्नि, वरुण, सोम, मरुत, अश्विन आदि मुख्य देवता थे।
- देवताओं की तुलना में देवियों की संख्या बहुत कम थी। उषा और अदिति प्रभात समय की प्रतिरूप थीं।
- ऋग्वैदिक काल में बहुदेववाद का प्रचलन मिलता है, फिर एक समय में एक ही देवता को प्रमुखता दी गई। स्तुति पाठ करना और यज्ञ बलि अर्पित कर देवताओं की स्तुतियाँ की जाती थीं।
- ऋग्वैदिक आर्य, देवताओं की उपासना संतति, पशु, अन्न, धान्य, आरोग्य आदि पाने की कामना से करते थे। वे लोग आध्यात्मिक उत्थान या जन्म-मृत्यु के कष्टों से मुक्ति के लिये पूजा-पाठ नहीं करते थे। इस प्रकार ऋग्वैदिक आर्यों की उपासना का मूल उद्देश्य लौकिक था, पारलौकिक नहीं।
- भक्ति व मूर्तिपूजा परवर्ती काल की देन है। गुप्तकाल में जब धार्मिक स्थिति जटिल व सामंती स्वरूप ग्रहण करने लगी तो भक्ति व मूर्तिपूजा का प्रादुर्भाव हुआ।

3. प्राचीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से बौद्ध धर्म और जैन धर्म दोनों में समान रूप से विद्यमान था/थे?

1. तप और भोग की अति का परिहार
2. वेद-प्रामाण्य के प्रति अनास्था
3. कर्मकाण्डों की फलवत्ता का निषेध

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**
(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: जैन धर्म व बौद्ध धर्म का प्रसार लगभग एक ही समय में हुआ था। दोनों का उद्देश्य तत्कालीन धार्मिक एवं सामाजिक कुरीतियों तथा बुराइयों का उन्मूलन करना था, परंतु आचरण-व्यवहार के मामले में जैन धर्म, बौद्ध धर्म के सापेक्ष ज़्यादा कठोर है। अतः प्रथम कथन गलत है।

दोनों में समानता के कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदु हैं-

- दोनों ब्राह्मण धर्म के प्रमुख ग्रंथ वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार नहीं करते थे और न ही उन्हें ज्ञान का अंतिम स्रोत मानते हैं।
- दोनों ही धर्म कर्मकाण्ड (याज्ञादि) की फलवत्ता का निषेध करते हैं।
- दोनों ईश्वर को सृष्टि का निर्माता नहीं मानते हैं। अतः दोनों की गणना नास्तिक धर्म के रूप में की जाती है।
- दोनों संसार त्याग पर ज़ोर देते हैं, परंतु साथ ही गृहस्थ धर्म की आवश्यकता को भी समान रूप से स्वीकार करते हैं।
- दोनों धर्मों में सदाचार व अहिंसा का मुख्य स्थान है। दोनों ही कर्मवाद व पुनर्जन्म पर विश्वास रखते हैं।

परंतु दोनों में कुछ महत्त्वपूर्ण असमानताएँ भी हैं-

- जैन धर्म का मूल स्वरूप बौद्ध धर्म से कहीं अधिक प्राचीन है।
- जैन धर्म आत्मा के अस्तित्व में विश्वास करता है, परंतु बौद्ध धर्म अनात्मवादी है।
- वैसे दोनों धर्म अहिंसावादी हैं, परंतु व्यवहार में बौद्ध धर्म की अपेक्षा जैन धर्म अहिंसा पर अधिक ज़ोर देता है।
- दोनों धर्मों के निर्वाण प्राप्ति के साधनों में भी भिन्नता है। जैन धर्म के अनुसार, तपस्या, उपवास और काया-क्लेश आदि से ही मोक्ष प्राप्त हो सकता है किंतु बौद्ध धर्म मध्यम मार्ग पर ज़ोर देता है। उसके अनुसार, अत्यधिक शारीरिक कष्ट और विलासमय जीवन-दोनों ही अवांछनीय हैं। इसके अलावा जैन धर्म जहाँ 'त्रिरत्न' के अनुसरण की बात कहता है, वहीं बौद्ध धर्म 'अष्टांगिक मार्ग' के आचरण पर ज़ोर देता है।

4. सदियों से भारत में जीवित रही एक प्रमुख परम्परा 'ध्रुपद' के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?

1. ध्रुपद की उत्पत्ति तथा विकास मुगल काल में राजपूत राज्यों में हुआ।

2. ध्रुपद प्रमुखतः भक्ति और अध्यात्म का संगीत है।

3. ध्रुपद आलाप मंत्रों से लिये गए संस्कृत अक्षरों पर आधारित है।

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) 1, 2 और 3

(d) उपर्युक्त में से कोई सही नहीं है *सही उत्तर:* (b)

व्याख्या: ध्रुपद की उत्पत्ति मुगल काल से पूर्व ही हो चुकी थी। मुगल काल में यह अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा। अत: प्रथम कथन गलत है।

- भरतमुनि के नाट्य शास्त्र के अनुसार वर्ण, अलंकार, गान-क्रिया, यति, वाणी, लय आदि जहाँ ध्रुव रूप में परस्पर संबद्ध रहे, उन गीतों को 'ध्रुवा' कहा गया है। जिन पदों में उक्त नियम का निर्वाह हो रहा हो, उसे 'ध्रुवपद' अथवा 'ध्रुपद' कहा जाता है।
- शास्त्रीय संगीत के पद, ख्याल, ध्रुपद आदि का जन्म ब्रजभूमि में होने के कारण इन सबकी भाषा ब्रज है और ध्रुपद का विषय समग्र रूप से ब्रज का रास ही है। कालांतर में मुगलकाल में उर्दू की शब्दावली का प्रभाव भी ध्रुपद रचनाओं पर पड़ा। यह आलाप मंत्रों से लिये गए संस्कृत अक्षरों पर आधारित है।
- स्वामी हरिदास जी ने सर्वप्रथम इनके वर्गीकरण व शास्त्रीयकरण का प्रयास किया।
- ध्रुपद की मूल उत्पत्ति वैदिक काल में देखी जा सकती है। आधुनिक ध्रुपद सम्भवत: ग्वालियर क्षेत्र में विकसित हुआ तथा 16वीं शताब्दी में यह लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गया।
- आजकल के समय में ध्रुपद एकल गायक या गायकों के एक समूह द्वारा पखावज या मृदंग की थाप पर गाया जाता है जबकि पहले तबले का प्रयोग किया जाता था।

5. कुचिपुड़ी तथा भरतनाट्यम नृत्यों के बीच क्या भेद है?

1. कुचिपुड़ी नृत्य में नर्तक प्रासंगिक रूप से कथोपकथन का प्रयोग करते हैं, जबकि भरतनाट्यम में कथोपकथन का प्रयोग नहीं किया जाता।

2. पीतल की तश्तरी की धार पर पाद रख नृत्य करने की परम्परा भरतनाट्यम की विशिष्टता है, जबकि कुचिपुड़ी नृत्य में इस प्रकार की क्रियाओं का कोई स्थान नहीं है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: केवल कथन (1) सही है। द्वितीय कथन इसलिये गलत है क्योंकि कुचिपुड़ी नृत्य में भी पीतल की तश्तरी का प्रयोग किया जाता है।

- कुचिपुड़ी आंध्र प्रदेश की प्रसिद्ध नृत्य शैली है। इस नृत्य का नाम कृष्णा ज़िले में स्थित कुचिपुड़ी गाँव के नाम पर पड़ा।
- कुचिपुड़ी नर्तक चपल व द्रुत गति से युक्त, एक खास वर्तुलता लिये भंगिमाओं का अनुक्रम प्रस्तुत करते हैं और इस नृत्य में पद-संचालन में उड़ान की प्रचुर मात्रा होती है।
- कर्नाटक संगीत के साथ प्रस्तुत किया जाने वाला यह नृत्य कई दृष्टियों से भरतनाट्यम के साथ समानता रखता है, परंतु कुचिपुड़ी नृत्य में नर्तक प्रासंगिक रूप से कथोपकथन का प्रयोग करते हैं, जबकि भरतनाट्यम में कथोपकथन का प्रयोग नहीं किया जाता।
- एकल प्रस्तुति में कुचिपुड़ी में 'जातिस्वरम्' और 'तिल्लाना' का सन्निवेश होता है, जबकि इसके नृत्यम प्रारूप में कई संगीतबद्ध रचनाओं द्वारा भक्त के भगवान में लीन हो जाने की अभीप्सा का प्रदर्शन होता है।
- इसके एक खास प्रारूप 'तरंगम' में नर्तकी थाली के किनारों पर नृत्य करती है, साथ ही हाथों में एक जलपात्र किंदी को भी संतुलित रखती है। अत: स्पष्ट है कि इसमें भी तश्तरी क्रियाओं का प्रयोग होता है।

6. नागर, द्रविड़ और बेसर हैं-

(a) भारतीय उपमहाद्वीप के तीन मुख्य जातीय समूह

(b) तीन मुख्य भाषा वर्ग, जिनमें भारत की भाषाओं को विभक्त किया जा सकता है

(c) भारतीय मंदिर वास्तु की तीन मुख्य शैलियाँ

(d) भारत में प्रचलित तीन मुख्य संगीत घराने

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: शिल्पशास्त्र भौगोलीकरण के हिसाब से मंदिर निर्माण की 3 तरह की शैलियों को मान्यता देता है- नागर, द्रविड़ तथा बेसर। नागर- उत्तरी क्षेत्र, द्रविड़- दक्षिण तथा बेसर- विंध्य व कृष्णा के बीच के क्षेत्र को इंगित करती है।

- नागर शैली के मंदिर चौकोर रूप लिये होते हैं। इस शैली में बने मंदिरों को ओडिशा में कलिंग, गुजरात में लाट और हिमालय क्षेत्र में पर्वतीय कहा गया है।
- द्रविड़ शैली के मंदिर कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक पाए जाते हैं। इन मंदिरों का निचला भाग वर्गाकार और मस्तक गुंबदाकार, छह या आठ पहलुओं वाला होता है। गर्भगृह के ऊपर का भाग सीधे पिरामिड के आकार का होता है। उनमें अनेक मंज़िलें पाई जाती हैं। आंगन के मुख्य द्वार को गोपुरम कहते हैं। मंदिर एक लम्बे-चौड़े प्रांगण से घिरा रहता है, जिसमें छोटे-बड़े अनेक मंदिर, कई अन्य कक्ष, तालाब, प्रदक्षिणा-पथ आदि बनाए जाते हैं।
- नागर एवं द्रविड़ शैलियों के मिले-जुले रूप को बेसर शैली कहते हैं। यह सम्मिश्रण होयसल वंश के राजाओं के मंदिरों में परिलक्षित होता है। आधार से सिरे तक बेसर शैली के मंदिरों का आकार अर्द्धगोलाकार होता है। इस शैली के मंदिर विंध्याचल पर्वत से लेकर कृष्णा नदी तक पाए जाते हैं।

7. भगवान बुद्ध की प्रतिमा कभी-कभी एकहस्त मुद्रा युक्त दिखाई गई है, जिसे 'भूमिस्पर्श मुद्रा' कहा जाता है। यह किसका प्रतीक है?

(a) मार पर दृष्टि रखने एवं अपने ध्यान में विघ्न डालने से मार को रोकने के लिये बुद्ध का धरती का आह्वान
(b) मार के प्रलोभनों के बावजूद अपनी शुचिता और शुद्धता का साक्षी होने के लिये बुद्ध का धरती का आह्वान
(c) बुद्ध का अपने अनुयायियों को स्मरण कराना कि वे सभी धरती से उत्पन्न होते हैं और अंततः धरती में विलीन हो जाते हैं, अतः जीवन संक्रमणशील है
(d) इस संदर्भ में दोनों ही कथन 'a' एवं 'b' सही हैं

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः 'भूमि स्पर्श मुद्रा' वाली बुद्ध की मूर्ति का आशय है कि बुद्ध मार (एक दानव का नाम) के प्रलोभनों के बावजूद अपनी शुचिता व शुद्धता का साक्षी होने के लिये पृथ्वी का आह्वान कर रहे हैं।

- बुद्ध की प्रतिमाओं का प्रदर्शन तीन अवस्थाओं में किया जाता हैः खड़ी, लेटी और बैठी अवस्था।
- बैठी हुई बुद्ध प्रतिमाओं का प्रदर्शन 5 मुद्राओं में अंकित किया जाता है- ध्यान मुद्रा, अभय मुद्रा, वरद मुद्रा, भूमि स्पर्श मुद्रा और धर्मचक्र प्रवर्तन या व्याख्यान मुद्रा।
- बुद्ध की खड़ी हुई प्रतिमाओं में दाहिना हाथ अभय या वरद मुद्रा में और बायाँ हाथ कमर पर रखा रहता है या सीधे नीचे लटका रहता है।
- बुद्ध की हथेली एवं पैरों पर कुछ शुभ चिह्न अंकित होते हैं।
- बोधिसत्त्व की मूर्ति को राजकीय वेशभूषा से अलंकृत किया जाता है।

2011

1. 'धर्म' और 'ऋत्' भारत की प्राचीन वैदिक सभ्यता के एक केंद्रीय विचार को चित्रित करते हैं। इस संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. 'धर्म' व्यक्ति के दायित्वों एवं स्वयं तथा दूसरों के प्रति व्यक्तिगत कर्त्तव्यों की संकल्पना था।
2. 'ऋत्' मूलभूत नैतिक विधान था जो सृष्टि और उसमें अंतर्निहित सारे तत्त्वों के क्रियाकलापों को संचालित करता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**
(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः दिये गए उपरोक्त कथनों में दोनों कथन सही हैं, इनकी विस्तृत व्याख्या निम्न है-

- वैदिककालीन लोग आस्तिक थे तथा धर्म को व्यक्तियों के दायित्वों व कर्त्तव्यों के रूप में देखते थे।
- ऋत की व्याख्या 'सृष्टि की नियमितता' भौतिक और नैतिक व्यवस्था आदि के रूप में की गई है। वरुण ऋत के देवता थे। ऋग्वेद के श्लोकों में ऋत के ह्रास पर दुःख व्यक्त किया गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ऋत की अवधारणा तत्कालीन प्राक् वर्गीय कबायली जीवन के अनुरूप थी, जिसका कालांतर में ह्रास हो गया, इसी कारण से धीरे-धीरे वरुण की महत्ता कम हो गई।

2. जैन दर्शन के अनुसार सृष्टि की रचना एवं पालन-पोषण

(a) सार्वभौमिक विधान से हुआ है
(b) सार्वभौमिक सत्य से हुआ है
(c) सार्वभौमिक आस्था से हुआ है
(d) सार्वभौमिक आत्मा से हुआ है

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः जैन धर्म अनीश्वरवादी है। जैन दर्शन के अनुसार सृष्टि की रचना एवं पालन-पोषण सार्वभौमिक विधान से हुआ है।

- ईश्वर इस सृष्टि का संचालक अथवा नियंत्रक नहीं है।
- जैन धर्म, संसार को शाश्वत, नित्य, अनश्वर और वास्तविक अस्तित्त्व वाला मानता है। इसके अनुसार, पदार्थ का मूल विनाश नहीं होता, केवल रूप परिवर्तन होता है।
- जैन धर्म के अनुसार, मनुष्य अपना स्वयं भाग्य विधाता है। सांसारिक एवं आध्यात्मिक जीवन में मनुष्य अपने प्रत्येक कर्म के लिये उत्तरदायी है। उसके सारे सुख-दुःख इस कर्म के कारण ही हैं।

प्राचीन भारत

2025

1. प्राचीन भारत में इनमें से किस शासक ने 'मत्तविलास', 'विचित्रचित्त' और 'गुणभरा' उपाधियाँ धारण की थीं?

(a) महेंद्रवर्मन प्रथम **(b) सिंहविष्णु**
(c) नरसिंहवर्मन प्रथम **(d) सिंहवर्मन**

सही उत्तरः (a)

- महेंद्रवर्मन प्रथम (600-630 ईस्वी) अपने पिता सिंहविष्णु की मृत्यु के बाद शासक बने। उनके अधीन पल्लवों ने स्वयं को एक प्रमुख राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित किया। वह एक बहुप्रतिभाशाली शासक थे।
- वह अपने साहित्यिक कार्यों और मंदिर निर्माण गतिविधियों के लिये जाने जाते हैं और वह एक कुशल वीणा वादक भी थे। उन्होंने नाटक, चित्रकला, संगीत जैसी कई कलात्मक गतिविधियों को बढ़ावा दिया।

- उन्होंने निम्नलिखित उपाधियाँ ग्रहण कीं:
  - मत्तविलास (सुख-विलास में लिप्त),
  - चित्रकारपुली (चित्रकारों में बाघ),
  - ललितांकुरा (आकर्षक संतान),
  - गुणभरा (पुण्यवान),
  - चट्टकारी (मंदिर निर्माता),
  - विचित्रचित्त (जिज्ञासु)।

  अतः विकल्प (a) सही है।

2. चीनी तीर्थयात्री फाह्यान ने इनमें से किसके शासनकाल में भारत की यात्रा की थी?

(a) समुद्रगुप्त **(b) चंद्रगुप्त द्वितीय**

(c) कुमारगुप्त प्रथम **(d) स्कंदगुप्त**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या:

- चंद्रगुप्त द्वितीय (375-414 ई.), जिन्हें चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के नाम से भी जाना जाता है, को कला और साहित्य के संरक्षण के लिये याद किया जाता है।
- उनके दरबार में नौ रत्न (नवरत्न) शामिल थे । महान संस्कृत कवि और नाटककार कालिदास उनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध थे।
- चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान (404–411 ईस्वी) ने चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत की यात्रा की थी। उन्होंने पाँचवी शताब्दी ईस्वी में भारत के लोगों के जीवन का विवरण प्रस्तुत किया है। **अतः विकल्प (b) सही है।**

3. इनमें से किसने शक्तिशाली समुद्रवर्ती राज्य श्रीविजय के विरुद्ध, जिसका शासन मलय प्रायद्वीप, सुमात्रा, जावा और निकटवर्ती द्वीपों पर था, एक सफल सैन्य अभियान का नेतृत्व किया था?

(a) अमोघवर्ष (राष्ट्रकूट) **(b) प्रतापरुद्र (काकतीय)**

(c) राजेंद्र प्रथम (चोल) **(d) विष्णुवर्द्धन (होयसल)**

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या:

- राजराजा चोल प्रथम के पुत्र राजेंद्र चोल प्रथम ने 1025 ई. में श्रीविजय साम्राज्य के विरुद्ध एक सफल और ऐतिहासिक नौसैनिक अभियान का नेतृत्व किया।
- यह अभियान भारतीय इतिहास में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विदेशी सैन्य अभियानों में से एक था।
- चोल नौसेना ने मलय प्रायद्वीप, सुमात्रा और आसपास के क्षेत्रों में कई महत्त्वपूर्ण श्रीविजय बंदरगाहों और शहरों पर आक्रमण किया तथा उन पर अधिकार कर लिया।
- भारतीय महासागर व्यापार में इसका बहुत बड़ा रणनीतिक महत्त्व था। सैन्य संघर्ष जारी रहे और चोलों ने कोलुत्तुंगा (1070 ई.-1122 ई.) के शासनकाल तक अपना प्रभुत्व बनाए रखा।

अतः विकल्प (c) सही है।

4. प्राचीन भारत (600-322 ईसा पूर्व) के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये:

	प्रादेशिक क्षेत्र		इस क्षेत्र में बहने वाली नदी
I.	अश्मक	:	गोदावरी
II.	कंबोज	:	विपास
III.	अवंती	:	महानदी
IV.	कोसल	:	सरयू

उपर्युक्त में से कितने युग्म सही सुमेलित हैं?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**

(c) केवल तीन **(d) सभी चार**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या:

- अश्मक, दक्षिण भारत के दक्कन क्षेत्र में स्थित एक महाजनपद था और इस क्षेत्र से होकर गोदावरी नदी बहती थी। **अतः युग्म I सही सुमेलित है।**
- कंबोज, उत्तर-पश्चिम भारत में स्थित महाजनपद था, जो आज के अफगानिस्तान और ताजिकिस्तान के आसपास के क्षेत्र में माना जाता है। विपास (ब्यास) नदी पंजाब क्षेत्र में बहती है, न कि कंबोज क्षेत्र में। **अतः युग्म II सही सुमेलित नहीं है।**
- अवंती, पश्चिमी मध्य प्रदेश में स्थित महाजनपद था, जिसकी राजधानी उज्जैन थी। इससे संबंधित प्रमुख नदी चंबल है, जबकि महानदी ओडिशा और छत्तीसगढ़ से होकर बहती है। **अतः युग्म III सही सुमेलित नहीं है।**
- कोसल, वर्तमान के पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में स्थित महाजनपद था और इसकी राजधानी श्रावस्ती थी। इस क्षेत्र से होकर सरयू नदी बहती थी। **अतः युग्म IV सही सुमेलित है। अतः विकल्प (b) सही है।**

5. जैसा कि अशोक के अभिलेखों से ज्ञात होता है, 'प्रादेशिक', 'राजुक' और 'युक्त' किस स्तर पर महत्त्वपूर्ण अधिकारी थे?

(a) ग्राम-स्तरीय प्रशासन **(b) ज़िला-स्तरीय प्रशासन**

(c) प्रांतीय प्रशासन **(d) केंद्रीय प्रशासन स्तर**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या:

- अशोककालीन अभिलेखों से संकेत मिलता है कि प्रादेशिक, राजुक और युक्त ज़िला स्तर पर महत्त्वपूर्ण अधिकारी थे।
  - अभिलेख संख्या 3 में उल्लेख है कि ये अधिकारी प्रत्येक पाँच वर्ष में यात्राएँ करते थे, ताकि लोगों को धम्म की शिक्षा दी जा सके और अन्य उद्देश्यों की पूर्ति की जा सके।
- 'युक्त' शब्द का उल्लेख अर्थशास्त्र में सामान्य अधिकारी के रूप में हुआ है।

- बोंगा र्ड-लेविन का सुझाव है कि अभिलेखों में वर्णित 'राजुकों' की पहचान मेगस्थनीज के 'एग्रोनोमोई' से की जा सकती है, जो संभवतः भूमि माप और राजस्व निर्धारण से संबंधित थे।
- 'राजुक' शब्द संभवतः 'रज्जु' से आया है, जिसका अर्थ है रस्सी और यह संकेत भूमि को रस्सियों से नापने की पद्धति की ओर हो सकता है।
- हालाँकि भूमि मापन उनकी मुख्य या प्रारंभिक ज़िम्मेदारी रही होगी, लेकिन अशोक के समय में राजुक उच्च-स्तरीय अधिकारी प्रतीत होते हैं, जो जनकल्याणकारी कार्यों से भी जुड़े हुए थे।

अतः विकल्प (b) सही है।

6. मोहनजोदड़ो से प्राप्त 'नाचती हुई लड़की (डांसिंग गर्ल)' नामक प्रख्यात नारी लघुमूर्ति किस पदार्थ की बनी हुई है?

(a) इंद्रगोप मणि (कार्नीलियन) **(b) मृत्तिका (Dys)**
(c) कांस्य **(d) स्वर्ण**

सही उत्तर: (c)

व्याख्याः

- 'नाचती हुई लड़की (डांसिंग गर्ल)' सिंधु घाटी सभ्यता की सर्वाधिक प्रतिष्ठित कलाकृतियों में से एक है, जो मोहनजोदड़ो से खोजी गई थी।
- यह कांस्य मूर्तिका लगभग 10.8 सेमी. (चार इंच) ऊँची है और इसका समय 2500 ईसा पूर्व का है, जो इसे भारतीय उपमहाद्वीप की संभवतः प्राचीनतम कांस्य मूर्ति बनाती है। **अतः विकल्प (c) सही है।**
- यह मूर्ति अपनी सरल नलिकाकार अंगों और धड़ के लिये उल्लेखनीय है, जो कला में मानवीय रूप की प्रारंभिक समझ को दर्शाती है। इसमें एक लड़की को लंबे बालों के साथ दिखाया गया है, जो एक बुन में बँधे हुए हैं। उसकी बाईं बाजू पर कई चूड़ियाँ, दाईं बाजू पर एक ब्रेसलेट और एक ताबीज या चूड़ी पहनी हुई है तथा गले में कौड़ी के खोल की माला है। उसका दायाँ हाथ कमर पर टिका हुआ है, जबकि बायाँ हाथ भारतीय नृत्य की एक पारंपरिक मुद्रा में है, जो गति और सांस्कृतिक परंपरा को दर्शाता है।

2024

1. प्राचीन भारत के संदर्भ में, गौतम बुद्ध को सामान्यतः निम्नलिखित में से किन उपनामों से जाना जाता था?

1. नायपुत्त **2. शाक्यमुनि**
3. तथागत

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) 1, 2 और 3
(d) उपर्युक्त में से कोई भी गौतम बुद्ध के उपनाम नही हैं

सही उत्तर: (b)

व्याख्याः प्राचीन ग्रंथों में **महावीर को नायपुत्त** (नयस का पुत्र) कहा गया है। यह उनके मूल वंश को संदर्भित करता है, जिसका संस्कृत में अनुवाद ज्ञात्र के रूप में किया जाता है। **अतः बिंदु 1 सही नहीं है।**

- बौद्ध परंपरा के अनुसार बुद्ध का जन्म 563 ई. पू. में शाक्य नामक क्षत्रिय कुल में हुआ था। बुद्ध की मृत्यु 483 ई. पू. में कुशीनगर नामक स्थान पर हुई थी। महात्मा बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे।
- बुद्ध (जिनके जीवन के बारे में अधिकतर किंवदंतियों के माध्यम से जाना जाता है) के रूप में संदर्भित ऐतिहासिक व्यक्ति का कुल नाम **गौतम** (संस्कृत में) या गोतम (पाली में) था और साथ ही उनका नाम **सिद्धार्थ** (संस्कृतः "वह जो अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है") या **सिद्धात** (पाली में) था। उन्हें प्रायः **शाक्यमुनि**, "शाक्य वंश का ऋषि" कहा जाता है। बौद्ध ग्रंथों में, उन्हें सबसे अधिक **भागवत** (प्रायः "भगवान" के रूप में अनुवादित) एवं **तथागत** के रूप में संबोधित किया जाता है, जिसका अर्थ या तो "ऐसा व्यक्ति जो इस प्रकार आया है" अथवा "ऐसा व्यक्ति जो इस प्रकार चला गया है" हो सकता है। **अतः विकल्प (b) सही है।**

2. निम्नलिखित सूचना पर विचार कीजिये:

	पुरातात्त्विक स्थल	राज्य	विवरण
1.	चंद्रकेतुगढ़	ओडिशा	व्यापार बंदरगाह शहर
2.	इनामगाँव	महाराष्ट्र	ताम्र-पाषाण स्थल
3.	मंगडु	केरल	महापाषाण स्थल
4.	सालिहुंडम	आंध्र प्रदेश	शैलकृत गुफा मंदिर

उपर्युक्त में से कौन-सी पंक्तियों में दी गई सूचना सही सुमेलित है?

(a) 1 और 2 **(b) 2 और 3**
(c) 3 और 4 **(d) 1 और 4**

सही उत्तर: (b)

व्याख्याः चंद्रकेतुगढ़ भारत के पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना ज़िले में स्थित एक पुरातात्त्विक स्थल है। चंद्रकेतुगढ़ का नदी मार्ग के निकट गंगा डेल्टा में स्थित होना यह दर्शाता है कि यह एक महत्त्वपूर्ण व्यापार केंद्र था, जो इस क्षेत्र को भारत के अन्य भागों और संभवतः दक्षिण पूर्व एशिया से जोड़ता था। **अतः युग्म 1 सही सुमेलित नहीं है।**

- **इनामगाँव** भारत के महाराष्ट्र के पुणे ज़िले में स्थित एक महत्त्वपूर्ण पुरातात्त्विक स्थल है। यह दक्कन ताम्रपाषाण (ताम्र युग) संस्कृति को समझने के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण स्थलों में से एक है।
- **अतः युग्म 2 सही सुमेलित है।**
- केरल में मंगडू एक नया खोजा गया प्रागैतिहासिक स्थल है जहाँ बड़ी संख्या में महापाषाण पाए जाते हैं। मंगडू महापाषाण का समय लगभग 1000 ईसा पूर्व से 100 ईसा पूर्व तक है। **अतः युग्म 3 सही सुमेलित है।**

- मंगडू में महापाषाण स्मारकों में 5 समुच्चय भूमि के क्षेत्र में 28 कठोर संकुल और अपरिष्कृत लेटराइट खंड शामिल थे। शैल खंड मोटे तौर पर क्रमश: 3.5 मीटर, 4.15 मीटर और 5 मीटर व्यास के तीन वृत्त का निर्माण करते हैं।
- आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम ज़िले का सालिहुंडम गाँव, जो वंशधारा नदी के तट पर स्थित है, उस समय प्रसिद्ध हुआ जब यहाँ पुरातात्त्विक उत्खनन में एक प्राचीन बौद्ध बस्ती के साक्ष्य मिले। यह स्थल अब ASI द्वारा संरक्षित है, यहाँ स्तूप, एक महास्तूप, चैत्य और विहार हैं। हालाँकि, यह स्थल शैलकृत मंदिरों के लिये नहीं जाना जाता है। **अत: युग्म 4 सही सुमेलित नहीं है। अत: विकल्प (b) सही है।**

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. उपनिषदों में कोई नीति-कथा (पैरेबॅल) नहीं हैं।

2. उपनिषदों की रचना पुराणों से भी पहले हुई थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: दो पक्षियों के नीति-कथा (पैरेबॅल) का उल्लेख उपनिषदों से प्राप्त होता है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**

- **भारतीय धार्मिक इतिहास में दर्शन एवं रहस्यवाद** की शुरुआत उपनिषदों के संकलन के काल में हुई, जो लगभग 7वीं से 5वीं ईसा पूर्व के बीच की गई थी।
- **पुराणों** के प्रथम संस्करण की रचना संभवत: **तीसरी से दसवीं शताब्दी ई.** के बीच की गई थी। **अत: कथन 2 सही है।**

अत: विकल्प (b) सही है।

2023

1. प्राचीन दक्षिण भारत के संदर्भ में, कोरकई, पूमपुहार और मुचीरि किस रूप में सुविख्यात थे?

(a) राजधानी नगर

(b) पत्तन

(c) लोह और इस्पात निर्माण के केंद्र

(d) जैन तीर्थंकरों के चैत्य

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: कोरकई:

- कोरकई बंगाल की खाड़ी के तट पर थमिराबरानी नदी के मुहाने के समीप स्थित पांड्यों का पत्तन था।
- इस पत्तन के समीप गंगा घाटी के आस-पास प्राचीन रोमन सभ्यताओं के साथ विकसित व्यापार के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। प्रथम शताब्दी ईस्वी में लिखी गई 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' नामक पुस्तक में तमिलनाडु के अन्य पत्तनों के साथ कोरकई का भी उल्लेख है।

पूमपुहार:

- पूमपुहार, तमिलनाडु के मयिलादुत्रयी/माइलादुत्रयी/माइलादुत्रयी ज़िले का एक कस्बा है।
- यह एक समृद्ध प्राचीन पत्तन नगर था जिसे कावेरी पूमपट्टिनम के नाम से जाना जाता था, जो कुछ समय के लिये तमिलकम में प्रारंभिक चोल राजाओं की राजधानी भी थी।
- पूमपुहार, कावेरी नदी के मुहाने के समीप समुद्र तट पर स्थित है।

मुज़िरिस/मुचीरि:

- मुचीरि, केरल का एक पत्तन नगर था।
- यह विश्व के सबसे प्राचीन पत्तनों में से एक था।
- संगम साहित्य में मुचीरि पत्तन पर काली मिर्च के लिये आने वाले रोमन जहाज़ों का वर्णन मिलता है।
- वर्ष 1341 में मालाबार तट पर पेरियार नदी बेसिन में बाढ़ आने के कारण मुचीरि पत्तन विनष्ट हो गया था।
- इस पत्तन के अवशेषों को भारत की सबसे बड़ी संरक्षण परियोजनाओं में से एक- मुज़िरिस विरासत परियोजना, के तहत संरक्षित किया जा रहा है। **अत: विकल्प (b) सही है।**

2. निम्नलिखित में से कौन-सा एक संगम कविता यथावर्णित 'वटकिरुतल' की प्रथा को स्पष्ट करता है।

(a) राजाओं द्वारा महिला अंगरक्षिकाओं को नियुक्त करना।

(b) राजदरबारों में विद्वानों का, धर्म और दर्शन के विषयों पर विचार-विमर्श करने हेतु, एकत्र होना।

(c) किशोरियों द्वारा कृषि क्षेत्रों की निगरानी करना और चिड़ियों तथा पशुओं को भगाना।

(d) युद्ध में पराजित राजा का आमरण अनशन आनुष्ठानिक मृत्युवरण करना।

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: वटकिरूतल, आमरण अनशन करने का एक तमिल अनुष्ठान था। यह विशेष रूप से संगम काल में प्रचलित था। तमिल राजा अपने सम्मान एवं प्रतिष्ठा को बचाने के लिये उत्तर दिशा के सन्मुख यह प्रतिज्ञा करते थे कि वे युद्ध में कभी भी अपनी मृत्यु का सामना करने से (वटकिरूतल) पीछे नहीं हटेंगे।

- यह अनुष्ठान या तो अकेले अथवा बंदी राजा के समर्थकों द्वारा एक समूह के रूप में किया जाता था।

अत: विकल्प (d) सही है।

3. प्राचीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये:

साहित्यिक कृति		रचनाकार
1. देवीचंद्रगुप्त	:	बिल्हण
2. हम्मीर-महाकाव्य	:	नयचंद्र सूरि
3. मिलिंद-पन्ह	:	नागार्जुन
4. नीतिवाक्यामृत	:	सोमदेव सूरि

उपर्युक्त युग्मों में से कितने सही सुमेलित है?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**
(c) केवल तीन **(d) सभी चार**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या:

साहित्यिक कृति	रचनाकार
देवीचंद्रगुप्त	विशाखदत्त
हम्मीर-महाकाव्य	नयचंद्र सूरि
मिलिंद-पन्ह	नागसेन
नीतिवाक्यामृत	सोमदेव सूरि

- **अतः विकल्प (b) सही है।**

4. "आत्मा केवल जंतु और पादप जीवन की संपदा नहीं है, बल्कि शिलाओं, प्रवाहित जलधाराओं और अन्य अनेक प्राकृतिक वस्तुओं की भी है, जिन्हें अन्य धार्मिक संप्रदाय जीवित नहीं मानते।"
उपर्युक्त कथन प्राचीन भारत के निम्नलिखित में से किस एक धार्मिक संप्रदाय के एक मूलभूत विश्वास को प्रतिबिंबित करता है?

(a) बौद्ध परंपरा **(b) जैन परंपरा**
(c) शैव परंपरा **(d) वैष्णव परंपरा**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: जैन परंपरा के अंतर्गत माना गया है कि सभी प्राणियों में एक तत्त्व निहित है जिसे आत्मा कहते हैं। जैसा कि आधुनिक जैन आचार्य, गुरुदेव चित्रभानु लिखते हैं, "ब्रह्मांड केवल मानवता के लिये नहीं है; यह सभी जीवित प्राणियों के विकास का क्षेत्र है। जाति, रंग, पंथ, या राष्ट्रीयता के आधार पर बिना किसी भेदभाव के सभी का जीवन पवित्र है छोटी चींटी या सूक्ष्मतम जीव सहित सभी स्तरों पर मौजूद जीवों का जीवन पवित्र है"।

- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और पौधों जैसी स्थिर इकाइयों में भी आत्माएँ होती हैं- जिनमें से सभी में एक ही भावना/ग्रंथि है, स्पर्श की भावना। इसके साथ ही गतिशील इकाइयों में आत्माओं के संवेदी अंगों में भिन्नताएँ,जैसे: कीट में दो ग्रंथियाँ (स्पर्श और स्वाद), चींटी में तीन ग्रंथियाँ (स्पर्श, स्वाद और गंध), मधुमक्खी में चार ग्रंथियाँ (स्पर्श, स्वाद, गंध और दृष्टि) तथा जानवरों और मानव में पाँच ग्रंथियाँ (स्पर्श, स्वाद, गंध, दृष्टि और श्रवण) होती हैं। **अतः विकल्प (b) सही है।**

5. भारतीय इतिहास के संदर्भ में, अलेक्जेंडर री., ए.एच. लॉन्गहर्स्ट, रॉबर्ट स्वेल, जेम्स बर्गेस और किस गतिविधि से जुड़े थे?

(a) पुरातात्त्विक उत्खनन
(b) औपनिवेशिक भारत में अंग्रेज़ी प्रेस की स्थापना
(c) देशी रजवाड़ों में गिरजाघरों की स्थापना
(d) औपनिवेशिक भारत में रेल का निर्माण

सही उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **भारत में कार्य करने वाले ब्रिटिश पुरातत्त्वविद् अलेक्जेंडर री** को वर्ष 1903-04 में आदिचनल्लूर में 9,000 से अधिक वस्तुओं के खजाने का पता लगाने हेतु जाना जाता था।
- **ए. एच. लॉन्गहर्स्ट चंद्रकेतुगढ़** बंगाल में खुदाई से जुड़े पुरातत्त्वविद् थे।
- **रॉबर्ट सेवेल:** रॉबर्ट सेवेल (1845-1925) औपनिवेशिक भारत में मद्रास प्रेसीडेंसी में कलेक्टर और मजिस्ट्रेट थे। वे इतिहास के विद्वान थे। साथ ही तत्कालीन पुरातत्त्व विभाग के प्रभारी भी थे।
- **जेम्स बर्गेस:** जेम्स बर्गेस वर्ष 1872 में द इंडियन एंटीकरी के संस्थापक और 19वीं शताब्दी में भारत के महत्त्वपूर्ण पुरातत्त्वविद् थे।
- **वाल्टर इलियट:** वह भारत में स्कॉटिश सिविल सेवक, पुरातत्त्वविद्, मुद्राशास्त्री एवं कलेक्टर थे। उन्होंने वर्ष 1845 में अमरावती में खुदाई की। उनके कुछ खुदाई से प्राप्त स्रोत आज भी सरकारी संग्रहालय मद्रास (चेन्नई) में मौजूद हैं।

2022

1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये:

	राजा		राजवंश
1.	नान्नुक	–	चंदेल
2.	जयशक्ति	–	परमार
3.	नागभट द्वितीय	–	गुर्जर-प्रतिहार
4.	भोज	–	राष्ट्रकूट

उपर्युक्त युग्मों में से कितने सही सुमेलित हैं?

(a) केवल एक युग्म **(b) केवल दो युग्म**
(c) केवल तीन युग्म **(d) सभी चारों युग्म**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: चंदेला या चंदेल मध्य भारत का एक राजपूत वंश था। उन्हें भारतीय इतिहास में लोकप्रिय रूप से चंदेल या जेजाकभुक्ति वंश भी कहा जाता था।

- महोबा खंड के किंवदंतियों के अनुसार, चंदेल परिवार की उत्पत्ति चंद्रमा (हिंदी में चंद्र कहा जाता है) और हेमवती के मिलन से हुई थी।
- 954 ई. के खजुराहो शिलालेखों के अनुसार, चंदेल वंश के प्रथम राजा नान्नुक ऋषि चंद्रत्रेय के वंशज थे जो प्रसिद्ध वैदिक ऋषि अत्रि के पुत्र थे। **अतः युग्म 1 सही सुमेलित है।**
- जयशक्ति का संबंध चंदेल वंश से था न कि परमार वंश से। **अतः युग्म 2 सुमेलित नहीं है।**
- गुर्जर-प्रतिहार राजवंश, मध्ययुगीन भारत के दो हिंदू राजवंशों में से एक था। हरिचंद्र के वंशजों ने 6वीं से 9वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान, आमतौर पर सामंत के दर्जे के साथ, मंडोर, मारवाड़ (जोधपुर, राजस्थान) में शासन किया। 8वीं से 11वीं शताब्दी के दौरान नागभट्ट वंश ने पहले उज्जैन और बाद में कन्नौज में शासन किया। अन्य गुर्जर वंश मौजूद थे, लेकिन उन्होंने प्रतिहार उपनाम ग्रहण नहीं किया।

- 9वीं शताब्दी की शुरुआत में हुए जटिल युद्धों, जिसमें प्रतिहार, राष्ट्रकूट और पाल शामिल थे, में नागभट्ट द्वितीय ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- नागभट्ट द्वितीय उत्तर भारत का सबसे शक्तिशाली शासक बना और कन्नौज में अपनी नई राजधानी स्थापित की। लगभग 833 ई. में नागभट्ट द्वितीय का उत्तराधिकारी उसका पुत्र रामभद्र था। **अतः युग्म 3 सही सुमेलित है।**
- मिहिर भोज परमार वंश का राजा था। अतः युग्म 4 सुमेलित नहीं है।

2. कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार, निम्नलिखित में कौन-से सही हैं?

1. न्यायिक दंड के परिणामस्वरूप कोई व्यक्ति दास हो सकता था।

2. स्त्री दास अपने मालिक के संसर्ग से पुत्र जनन पर कानूनी तौर पर मुक्त हो जाती थी।

3. यदि स्त्री दास का मालिक उस स्त्री से पैदा हुए पुत्र का पिता हो, तो उस पुत्र को मालिक का पुत्र होने का कानूनी हक मिलता था।

उपर्युक्त कथनों में कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः 'अर्थशास्त्र' में कहा गया है कि एक आदमी जन्म से, स्वेच्छा से खुद को बेचकर, युद्ध में कैद होकर, या न्यायिक दंड के परिणामस्वरूप गुलाम/दास नहीं हो सकता है। **अतः कथन 1 गलत है।**

- यदि एक दासी ने अपने स्वामी के बच्चे को जन्म दिया, तो वह बंधन से मुक्ति की हकदार होती थी; साथ ही, ऐसी गर्भवती दासी को गर्भावस्था की अवधि के दौरान उसकी देखभाल के लिये उचित व्यवस्था किये बिना बेचा या गिरवी नहीं रखा जा सकता था। **अतः कथन 2 सही हैं।**
- जब किसी दासी द्वारा से अपने स्वामी के बच्चे को जन्म दिया जाता है, तो बच्चा और उसकी माँ दोनों को एक ही बार में स्वतंत्र माना जाएगा। यदि जीविका के लिये माँ को बंधन में रहना है, तो उसके भाई और बहन को मुक्त कर दिया जाएगा। एक बार मुक्त होने के बाद किसी पुरुष या महिला गुलाम के जीवन को बेचने या गिरवी रखने पर 12 पनास के जुर्माने से दंडित किया जाएगा, सिवाय उन लोगों के जो खुद को गुलाम बनाते हैं। यदि स्त्री दास का मालिक उस स्त्री से पैदा हुए पुत्र का पिता हो, तो उस पुत्र को मालिक का पुत्र होने का क़ानूनी हक मिलता था। **अतः कथन 3 सही है।**

2021

1. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राचीन नगर अपने उन्नत जल संचयन और प्रबंधन प्रणाली के लिये सुप्रसिद्ध है, जहाँ बांधों की शृंखला का निर्माण किया गया था और संबद्ध जलाशयों में नहर के माध्यम से जल को प्रवाहित किया जाता था?

(a) धौलावीरा **(b) कालीबंगा**

(c) राखीगढ़ी **(d) रोपड़**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः हड़प्पा सभ्यता के एक प्रमुख नगर धौलावीरा की अनूठी विशेषताओं में से एक है। उसका उन्नत जल संचयन और प्रबंधन प्रणाली पूरी तरह से पत्थरों से निर्मित है। यहाँ विशाल जलराशि के कुंड, बांध, नहर और तटबंध मिले हैं। सबसे प्राचीन जलसंभरण प्रणाली का विकास यहीं हुआ था। यहाँ से स्टेडियम के अवशेष और 10 बड़े आकार के संकेताक्षर वाला अभिलेख भी मिला है। **अतः विकल्प (a) सही है।**

2. गुप्त वंश के पतन से लेकर आरंभिक सातवीं शताब्दी में हर्षवर्धन के उत्थान तक उत्तर भारत में निम्नलिखित में से किन राज्यों का शासन था?

1. मगध के गुप्त **2. मालवा के परमार**

3. थानेसर के पुष्यभूति **4. कन्नौज के मौखरि**

5. देवगिरि के यादव **6. वल्लभी के मैत्रक**

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) 1, 2 और 5 **(b) 1, 3, 4 और 6**

(c) 2, 3 और 4 **(d) 5 और 6**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः गुप्त वंश के पतन के पश्चात् तथा हर्षवर्द्धन के उत्थान तक उत्तर भारत में निम्न राजवंशों का शासन था-

1. मगध के गुप्त शासक
2. थानेसर के पुष्यभूति जिस वंश से हर्षवर्द्धन संबंधित था।
3. कन्नौज के मौखरि जिसके राजा गृहवर्मन से हर्ष की बहन राज्यश्री का विवाह हुआ था।
4. वल्लभी के मैत्रक वंशी ध्रुवसेन द्वितीय से हर्ष ने अपनी पुत्री का विवाह किया था।

- मालवा के परमार और देवगिरि के यादव दक्कन में शासन किये। उनका शासनकाल 10वीं से 14वीं शताब्दी के मध्य था। जबकि गुप्त वंश का पतन और हर्ष का उत्थान 6-7वीं शताब्दी में हुआ था। **अतः विकल्प (b) सही है।**

3. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

ऐतिहासिक स्थान		**ख्याति का कारण**
1. बुर्ज़होम	:	**शैलकृत देव मंदिर**
2. चंद्रकेतुगढ़	:	**टेराकोटा कला**
3. गणेश्वर	:	**ताम्र कलाकृतियाँ**

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**

(c) केवल 3 **(d) 2 और 3**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः बुर्ज़होम कश्मीर का एक नवपाषाणकालीन स्थल है जहाँ से गर्तावास के साक्ष्य मिले हैं। आखेट पर आश्रित मानव इस समय मंदिर का निर्माण करना नहीं जानता था। अतः पहला युग्म गलत है।

- उत्तरी 24 परगना ज़िला, पश्चिम बंगाल में स्थित चंद्रकेतुगढ़ का उल्लेख टॉलेमी ने 'गंगेरीदाई' नाम से किया है। यहाँ की खुदाई में टेराकोटा (पकी मिट्टी) की मूर्तियाँ मिली हैं। यह स्थल मौर्य, मौर्योत्तर, गुप्त-गुप्तोत्तर काल में आबाद था। यहाँ से गुप्तकालीन सोने और चांदी के सिक्के भी मिले हैं। अतः युग्म 2 सही है।

- राजस्थान के सीकर ज़िले की नीम का थाना तहसील में स्थित गणेश्वर से ताम्र वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं जिनमें शामिल हैं– बाणाग्र, मछली का काँटा, चूड़ी, शूलाग्र, छेनी आदि। अतः युग्म 3 सही है।

अतः विकल्प (d) सही है।

4. प्राचीन भारत के इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

1. मिताक्षरा ऊँची जाति की सिविल विधि थी और दायभाग निम्न जाति की सिविल विधि थी।

2. मिताक्षरा व्यवस्था में, पुत्र अपने पिता के जीवनकाल में ही संपत्ति पर अधिकार का दावा कर सकते थे, जबकि दायभाग व्यवस्था में पिता की मृत्यु के उपरांत ही पुत्र संपत्ति पर अधिकार का दावा कर सकते थे।

3. मिताक्षरा व्यवस्था किसी परिवार के केवल पुरुष सदस्यों के संपत्ति-संबंधी मामलों पर विचार करती है, जबकि दायभाग व्यवस्था किसी परिवार के पुरुष एवं महिला सदस्यों, दोनों के संपत्ति-संबंधी मामलों पर विचार करती है।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2**

(c) केवल 1 और 3 **(d) केवल 3** *सही उत्तरः* (b)

व्याख्याः विज्ञानेश्वर द्वारा याज्ञवल्क्य स्मृति पर लिखी गई टीका मिताक्षरा पूरे देश में (बंगाल, असम तथा उड़ीसा एवं बिहार के कुछ भागों को छोड़कर जहाँ दायभाग व्यवस्था लागू थी) संपत्ति के अधिकार के लिये कानून की सर्वमान्य पुस्तक थी। मिताक्षरा और दायभाग जाति भेद नहीं करती थी, यानी ऊँची या नीची जाति के लिये नहीं लिखी गई थी। अतः कथन 1 गलत है।

- मिताक्षरा व्यवस्था में पिता के जीवित रहते पुत्र, पिता की संपत्ति में अधिकार का दावा कर सकता था जबकि दायभाग पिता की मृत्यु के पश्चात् ऐसे किसी दावे पर विचार करती थी। अतः कथन 2 सही है।
- मिताक्षरा और दायभाग स्त्री–पुरुष दोनों के संपत्ति संबंधी मामलों पर विचार व्यक्त करते हैं। अतः कथन 3 गलत है। **अतः विकल्प (b) सही है।**

2020

1. निम्नलिखित में से कौन-सा उपवाक्य, उत्तर हर्ष कालीन स्रोतों में प्रायः उल्लिखित 'हुंडी' के स्वरूप की परिभाषा बताता है?

(a) राजा द्वारा अपने अधीनस्थों को दिया गया परामर्श

(b) प्रतिदिन का लेखा-जोखा अंकित करने वाली बही

(c) विनिमय पत्र

(d) सामंत द्वारा अपने अधीनस्थों को दिया गया आदेश

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः 'हुंडी' को 'विनिमय' के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता था जिसे व्यापार और ऋण लेनदेन में उपयोग किया जाता था।

2. भारत के इतिहास के संदर्भ में, 'कुल्यावाप' तथा 'द्रोणवाप' शब्द क्या निर्दिष्ट करते हैं?

(a) भू-माप

(b) विभिन्न मौद्रिक मूल्यों के सिक्के

(c) नगर की भूमि का वर्गीकरण

(d) धार्मिक अनुष्ठान *सही उत्तरः* (a)

व्याख्याः भारत के इतिहास के संदर्भ में, 'कुल्यावाप और द्रोंणवाप' शब्द गुप्तकाल में उत्तर भारत में भूमि नाप इकाई से संबंधित थे। इन शब्दों में 'वाप' शब्द का अर्थ/संबंध 'बीज बोना' या 'कृषि योग्य भूमि' से है। बीजों के भार के अनुरूप ही कुल्य, द्रोंण और आढ़क होते थे। द्रोंण एक परिमाण का सूचक है जबकि द्रोंणवाप भू-माप का।

पाँचवी सदी के बंगाल एवं बिहार से प्राप्त कतिपय अभिलेख कुल्यवाप एवं द्रोंणवाप के स्थानीय प्रचलन की ओर संकेत करते हैं। इन अभिलेखों में गुप्त सम्वत 113 के अनुसार कुमारगुप्त-प्रथम कालीन दामोदरपुर ताम्रपट्टाभिलेख (दिनाजपुर ज़िला, बंगाल) के अनुसार 4 आढ़क = 1 द्रोंण, 8 द्रोंण=1 कुल्य। इसी तरह पाँचवी सदी के फरीदपुर ज़िले (बंगाल) से प्राप्त अभिलेख के अनुसार उस क्षेत्र में कृषि योग्य भूमि को 'वाप क्षेत्र' कहा जाता था।

3. निम्नलिखित में से किस शासक ने अपनी प्रजा को इस अभिलेख के माध्यम से परामर्श दिया?

"कोई भी व्यक्ति जो अपने संप्रदाय को महिमा-मंडित करने की दृष्टि से अपने धार्मिक संप्रदाय की प्रशंसा करता है या अपने संप्रदाय के प्रति अत्यधिक भक्ति के कारण अन्य संप्रदायों की निंदा करता है, वह अपितु अपने संप्रदाय को गंभीर रूप से हानि पहुँचाता है।"

(a) अशोक **(b) समुद्रगुप्त**

(c) हर्षवर्धन **(d) कृष्णदेव राय**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः उपर्युक्त कथन का संबंध अशोक के शिलालेख से है। अशोक ने अपने राज्यादेशों को शिलालेखों के माध्यम से व्यक्त किया है।

4. भारत के इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

	प्रसिद्ध स्थल		वर्तमान राज्य
1.	भीलसा	–	मध्य प्रदेश
2.	द्वारसमुद्र	–	महाराष्ट्र
3.	गिरिनगर	–	गुजरात
4.	स्थानेश्वर	–	उत्तर प्रदेश

उपर्युक्त में से कौन-से युग्म सही सुमेलित हैं?

(a) केवल 1 और 3 **(b) केवल 1 और 4**

(c) केवल 2 और 3 **(d) केवल 2 और 4**

सही उत्तरः (a)

व्याख्या: सही सुमेलन इस प्रकार है–

1. भीलसा – यह मध्य प्रदेश में स्थित प्राचीन नगर विदिशा का आधुनिक नाम है।
2. गिरिनगर – गुजरात
3. स्थानेश्वर – यह हरियाणा (वर्तमान-करनाल ज़िला) में स्थित है। हर्ष काल में यहाँ वर्धन राजवंश का शासन था। इसे थानेश्वर भी कहते हैं।
4. द्वारसमुद्र – कर्नाटक राज्य के हसन जिले में स्थित है। यह प्राचीन होयसल वंश की राजधानी था। इसका वर्तमान नाम ह्लेबिडू है।

5. प्राचीन भारतीय गुप्त राजवंश के समय में संदर्भ में, नगर घंटाशाला, कदूरा तथा चौल किस लिये विख्यात थे?

(a) विदेशी व्यापार करने वाले बंदरगाह

(b) शक्तिशाली राज्यों की राजधानियाँ

(c) उत्कृष्ट प्रस्तर कला तथा स्थापत्य से संबंधित स्थान

(d) बौद्ध धर्म के महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थल

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: गुप्त काल में बाह्य देशों के साथ व्यापार उन्नति पर था। इस समय भारत के अनेक बंदरगाह बाह्य देशों से व्यापार में संलग्न थे। इनमे पश्चिमी तट पर कैम्बे, सोपार और कल्याण प्रमुख बंदरगाह थे। इसके अतिरिक्त चौल, घंटशाला, कदूरा और ताम्रलिप्ति प्रमुख भी बंदरगाह थे।

2019

1. निम्नलिखित में से कौन-सा एक हड़प्पा स्थल नहीं है?

(a) चन्हूदड़ो **(b) कोट दीजी**

(c) सोहगौरा **(d) देसलपुर**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: चन्हूदड़ो व कोटदीजी वर्तमान में पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित हैं। ये दोनों हड़प्पा स्थल सिंधु नदी के किनारे स्थित हैं। वहीं देसलपुर वर्तमान भारत के कच्छ (गुजरात) में स्थित हड़प्पा स्थल है। जबकि सोहगौरा, गोरखपुर (यू.पी.) के पास स्थित है जहाँ से मौर्यकालीन ताम्रपत्र अभिलेख प्राप्त हुआ है। **अत: विकल्प (c) सही है।**

नोट: सोहगौरा अभिलेख में अकाल से निपटने के उपायों में अन्न भंडार रखने का उल्लेख है।

2. निम्नलिखित में से किस उभारदार मूर्तिशिल्प (रिलीफ स्कल्प्चर) शिलालेख में अशोक के प्रस्तर रूपचित्र के साथ 'राण्यो अशोक' (राजा अशोक) उल्लिखित है?

(a) कंगनहल्ली **(b) साँची**

(c) शाहबाजगढ़ी **(d) सोहगौरा**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: कंगनहल्ली, वर्तमान में कर्नाटक राज्य में स्थित एक बौद्ध स्थल है। यहाँ से प्राप्त एक उभारदार मूर्तिशिल्प (रिलीफ स्कल्पचर) शिलालेख में अशोक के प्रस्तर रूपचित्र के साथ 'राण्यो अशोक' (राजा अशोक) लिखा हुआ है। **अत: विकल्प (a) सही है।**

3. गुप्त काल के दौरान भारत में बलात् श्रम (विष्टि) के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(a) इसे राज्य के लिये आय का एक स्रोत, जनता द्वारा दिया जाने वाला एक प्रकार का कर, माना जाता था।

(b) यह गुप्त साम्राज्य के मध्य प्रदेश तथा काठियावाड़ क्षेत्रों में पूर्णत: अविद्यमान था।

(c) बलात् श्रमिक साप्ताहिक मज़दूरी का हकदार होता था।

(d) मज़दूर के ज्येष्ठ पुत्र को बलात् श्रमिक के रूप में भेज दिया जाता था।

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: (a) गुप्त काल के दौरान भारत में बलात् श्रम (विष्टि) सामान्यत: राज्य के लिये आय का एक स्रोत तथा जनता द्वारा दिया जाने वाला एक प्रकार का 'कर' माना जाता था। अत: विकल्प (a) सही है।

- बलात् श्रम (विष्टि) के तहत मज़दूरों, शिल्पियों व कृषकों को अनिवार्य रूप से राजा या राज्य के लिये श्रम करना होता था, जिसके एवज़ में उन्हें कोई भुगतान नहीं दिया जाता था। यह प्रथा गुप्त साम्राज्य के काठियावाड़ और मध्य प्रदेश क्षेत्रों में सर्वाधिक प्रचलित थी। बलात् श्रम की प्रथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती थी, जिसमें ज्येष्ठ उत्तराधिकार जैसा कुछ नहीं था, बल्कि यह सभी मज़दूरों पर लागू होती थी। अत: विकल्प (b), (c) और (d) तीनों गलत हैं।

2016

1. सम्राट अशोक के राजादेशों का सबसे पहले विकूटन (डिसाइफर) किसने किया था?

(a) जॉर्ज बुह्लर **(b) जेम्स प्रिंसेप**

(c) मैक्स मुलर **(d) विलियम जोन्स**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: जेम्स प्रिंसेप, ईस्ट इंडिया कम्पनी में एक अधिकारी के पद पर नियुक्त था। उसने 1838 ई. में ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों को पढ़ने में सफलता प्राप्त की। इन लिपियों का उपयोग सबसे आरम्भिक अभिलेखों और सिक्कों में किया गया है। अशोक के गिरनार वाले शिलालेख का अध्ययन करके उन्होंने कुछ यूनानी शासकों के नामों की भी खोज की। प्रिंसेप को यह जानकारी प्राप्त हुई कि अभिलेखों और सिक्कों पर पियदस्सी अर्थात् सुन्दर मुखाकृति वाले राजा का नाम लिखा है। कुछ अभिलेखों पर राजा का नाम सम्राट अशोक भी लिखा था। अत: सम्राट अशोक के राज्यादेशों का सबसे पहले विकूटन जेम्स प्रिंसेप ने किया था। प्रिंसेप के बाद फर्ग्युसन, कनिंघम, एडवर्ड टॉमस, वाल्टेयर इलियट, स्टीवेन्सन, डॉ. भाऊदाजी, राजेन्द्रलाल मित्र जैसे अनेक पुरालिपिविदों ने भारतीय लिपियों के अध्ययन व अन्वेषण को आगे बढ़ाया।

2. भारत के इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

शब्द		विवरण
1. एरिपत्ति	:	भूमि, जिससे मिलने वाला राजस्व अलग से ग्राम जलाशय के रखा-रखाव के लिये निर्धारित कर दिया जाता था
2. तनियूर	:	एक अकेले ब्राह्मण अथवा एक ब्राह्मण समूह को दान में दिये गए ग्राम
3. घटिका	:	प्रायः मंदिरों के साथ संबद्ध विद्यालय

उपर्युक्त में से कौन-सा/से युग्म सही सुमेलित है/हैं?

(a) 1 और 2 **(b) केवल 3**

(c) 2 और 3 **(d) 1 और 3**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः एरिपत्ति भूमि मुख्यतः जलाशय भूमि थी जिससे मिलने वाला राजस्व अलग से ग्राम जलाशय के रख-रखाव के लिये निर्धारित कर दिया जाता था। तनियूर चोल साम्राज्य (850-1200 ईसवी) के प्रशासन से संबंधित शब्द है। इसके तहत सभी गाँव एक स्वशासित इकाई था। प्रत्येक गाँव मिलकर एक कोरम या नाडु का निर्माण करते थे। तनियूर एक बड़ा गाँव था। यह इतना बड़ा था कि स्वयं ही एक कोरम का निर्माण करने में सक्षम था। घटिका, मध्यकालीन कर्नाटक के मंदिरों के निकट स्थित पल्लवों का सबसे महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थान था।

3. प्राचीन भारत की निम्नलिखित पुस्तकों में से किस एक में शुंग राजवंश के संस्थापक के पुत्र की प्रेम कहानी है?

(a) स्वप्नवासवदत्ता **(b) मालविकाग्निमित्र**

(c) मेघदूत **(d) रत्नावली** *सही उत्तरः* (b)

व्याख्याः मालविकाग्निमित्रम् कालिदास का प्रथम नाटक है। इसमें शुंग वंश के संस्थापक पुष्यमित्र शुंग के पुत्र अग्निमित्र तथा मालविका, जो कि उनके राज्य की नर्तकी थी, की प्रणय-कथा का वर्णन किया गया है।

कालिदास संस्कृत के महान कवि थे। उनकी विभिन्न रचनाएँ निम्न हैं-

- नाटक : अभिज्ञान शाकुन्तलम्, विक्रमोवर्शियम्, मालविकाग्निमित्रम्
- महाकाव्य : रघुवंशम् और कुमार संभवम्
- खंडकाव्य : मेघदूतम् और ऋतुसंहार

4. भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में इतिवृत्तों, राजवंशीय इतिहासों तथा वीरगाथाओं को कंठस्थ करना निम्नलिखित में से किसका व्यवसाय था?

(a) श्रमण **(b) परिव्राजक**

(c) अग्रहारिक **(d) मागध**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः मागध, प्राचीन भारत में एक दरबारी था। जैसा कि इतिहासकार कहते हैं- इतिवृत्तों, राजवंशीय इतिहासों या महाकाव्य संबंधी कथाओं को याद करना विभिन्न समूहों का काम था; जिन्हें सूत और मागध कहते थे।

2015

1. भारतीय इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से सामंती व्यवस्था का/के अनिवार्य तत्त्व है/हैं?

1. अत्यंत सशक्त केंद्रीय राजनैतिक सत्ता और अत्यंत दुर्बल प्रांतीय अथवा स्थानीय राजनीतिक सत्ता

2. भूमि के नियंत्रण तथा स्वामित्व पर आधारित प्रशासनिक संरचना का उदय

3. सामंत तथा उसके अधिपति के बीच स्वामी-दास संबंध का बनना

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः भारत में सामंतवादी समाज के विकास के बड़े दूरगामी प्रभाव पड़े। इससे राजा की शक्ति कम हो गई और वह ऐसे सामंती सरदारों पर अधिक निर्भर रहने लगा जिनके पास अपनी स्वयं की सेनाएँ थीं। इस प्रकार केंद्रीय राजनैतिक सत्ता क्रमशः कमज़ोर होती गई तथा प्रांतीय या स्थानीय सत्ता उत्तरोत्तर मज़बूत होती गई। अतः कथन 1 पूर्णतः गलत है, जबकि शेष दोनों कथन सही हैं, इसलिये इसका उत्तर (b) है।

- पूर्व मध्यकालीन भारत में सामंती संबंधों का उदय हुआ। यह भू-अनुदान प्रथा से जुड़ा हुआ है। इसके तहत धार्मिक, प्रशासनिक प्रमुखों को भूमि दान में दी जाती थी। इनको कर, प्रशासन व अन्य शाही अधिकार भी प्रदान किये गए जिससे अधीनस्थ शासक मज़बूत होते गए तथा प्रांतीय व क्षेत्रीय स्तर पर मज़बूत शासक उभरे।
- सामंती व्यवस्था में भूमि पर नियंत्रण आधारित प्रशासनिक व्यवस्था होती है। इसमें अधीनस्थ शासक कर व सैन्य सहायता देने का वायदा करता है।
- इसके तहत स्वामी-दास के संबंधों पर आधारित व्यवस्था होती है। सामंत को अपने स्वामी राजा के प्रति स्वामिभक्ति प्रदर्शित करनी होती है।

2. निम्नलिखित राज्यों में से किनका संबंध बुद्ध के जीवन से था?

1. अवंति **2. गांधार**

3. कोसल **4. मगध**

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) 1, 2 और 3 **(b) 2 और 3**

(c) 1, 3 और 4 **(d) केवल 3 और 4**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध को गृह-त्याग के बाद मगध साम्राज्य में शामिल 'गया' में ज्ञान की प्राप्ति हुई तथा कोसल उनका मुख्य प्रचार क्षेत्र रहा, जहाँ उन्होंने अपने मत का प्रचार किया। अपने वृहद् प्रचार काल में बुद्ध कभी भी अवंति (म.प्र.) या गांधार (अफगानिस्तान) नहीं गए। महात्मा गौतम बुद्ध का विभिन्न स्थानों से निम्न संबंध रहा-

- गौतम बुद्ध का जन्म कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था।
- वैशाली के समीप इनकी मुलाकात अलार कलाम नामक संन्यासी से हुई, जो सांख्य दर्शन के आचार्य थे।
- वैशाली के पश्चात् ज्ञान प्राप्ति के लिये ये रुद्रकरामपुत्त नामक धर्माचार्य के समीप पहुँचे जो कि राजगृह के समीप आश्रम में निवास करता था।
- सारनाथ में इन्होंने अपना प्रथम उपदेश दिया, जो धर्मचक्र प्रवर्तन कहलाता है।
- बुद्ध काशी, लुम्बिनी, कोसल, उरूवेला और वैशाली आदि स्थानों पर ज्ञान के प्रसार हेतु गए।
- कोसल में बुद्ध ने सर्वाधिक प्रचार किया, कोसल नरेश प्रसेनजीत भी इनके शिष्य बने।
- कुशीनगर में इनकी मृत्यु हुई।
- गांधार व अवंति से इनका कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं था।

2014

1. निम्नलिखित राज्यों में से किनका संबंध बुद्ध के जीवन से था?

1. अवंति **2. गांधार**
3. कोसल **4. मगध**

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) 1, 2 और 3 **(b) 2 और 4**
(c) केवल 3 और 4 **(d) 1, 3 और 4**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: नोट: यह प्रश्न संघ लोक सेवा आयोग के द्वारा वर्ष 2014 एवं वर्ष 2015 में लगातार दोहराया गया। इसकी व्याख्या वर्ष 2015 के प्रश्न में दी गई है।

2013

1. निम्नलिखित में से कौन-सा/से लक्षण सिंधु सभ्यता के लोगों का सही चित्रण करता है/करते हैं?

1. उनके विशाल महल व मंदिर होते थे।
2. वे देवियों और देवताओं, दोनों की पूजा करते थे।
3. वे युद्ध में घोड़ों द्वारा खींचे गए रथों का प्रयोग करते थे।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही कथन/कथनों को चुनिये-

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2
(c) 1, 2 और 3
(d) उपर्युक्त कथनों में से कोई भी सही नहीं है

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: सिंधु घाटी सभ्यता एक ऐसी प्राचीन सभ्यता है जहाँ से देवी-देवताओं की बहुत सारी मृण्मूर्तियाँ व धातु मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। यद्यपि सैंधव स्थल सुरकोटदा से घोड़े के साक्ष्य मिले हैं तथा रथ का प्रमाण दायमाबाद से प्राप्त एक मूर्ति से मिला है, फिर भी यह मान्य साक्ष्य नहीं है कि सैंधव सभ्यता में इनका प्रयोग युद्ध हेतु किया जाता था। इसी प्रकार विशाल भवनों के साक्ष्य मोहनजोदड़ो, हड़प्पा व लोथल आदि स्थलों से मिले हैं, किंतु वे मंदिर न होकर सभा भवन, अन्नागार, भंडारागार आदि माने जाते हैं। अत: सिंधु घाटी सभ्यता में मंदिर तथा युद्ध में घोड़े व रथों के प्रयोग संबंधी तथ्य प्रमाणित नहीं हैं। **अत: विकल्प (b) सही है।**

- सिंधु सभ्यता के लोगों का धार्मिक दृष्टिकोण इहलोकवादी व व्यावहारिक था। वे प्रकृति के प्रतीकों, यथा- मातृदेवी, पुरुष देवता, लिंग-योनि, वृक्ष प्रतीक, पशु आदि की पूजा करते थे।
- अभी तक खुदाई में किसी मंदिर अथवा पूजा स्थल का साक्ष्य नहीं मिला है। अत: उनके धार्मिक जीवन के बारे में ज्ञात करने का एकमात्र स्रोत यहाँ पाई गई मिट्टी और पत्थर की मूर्तियाँ एवं मुहरें हैं।
- पशुओं में हाथी, बाघ, भैंसा, गैंडा और घड़ियाल के चित्र मिले हैं लेकिन घोड़े के चित्र का अभाव है। हालाँकि, घोड़े की अस्थियाँ लोथल, सुरकोटदा एवं कालीबंगा इत्यादि स्थलों से प्राप्त हुई हैं, फिर भी घोड़े का उपयोग युद्ध के रथ को खींचने में किया जाता था, ऐसे साक्ष्य का अभाव है। यह वैदिककालीन विशेषता थी।

2. भारत की यात्रा करने वाले ह्वेनसांग ने तत्कालीन भारत की सामान्य दशाओं और संस्कृति का वर्णन किया है। इस संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

1. सड़क और नदी मार्ग लूटमार से पूरी तरह सुरक्षित थे।
2. जहाँ तक अपराधों के लिये दंड का प्रश्न है, अग्नि, जल व विष द्वारा सत्यपरीक्षा किया जाना ही किसी व्यक्ति की निर्दोषता अथवा दोष के निर्णय के साधन थे।
3. व्यापारियों को नौघाटों और नाकों (Barrier Stations) पर शुल्क देना पड़ता था।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**
(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या ह्वेनसांग चीनी यात्री था, जो ईसा की 7वीं सदी में भारत आया। उसके यात्रा संस्मरण को एक पुस्तक के रूप में संकलित किया गया, जो 'सी-यू-की' के नाम से जाना जाता है।

- उसने निम्न बातों का उल्लेख किया-
  - उसने हर्ष को 'वैश्य' जाति का बताया तथा उसकी कर्त्तव्यपरायणता की प्रशंसा की।
  - उसने सड़कों पर आवागमन को पूर्णतया सुरक्षित नहीं कहा क्योंकि वह स्वयं भी लूट का शिकार हो चुका था।
  - उसके अनुसार, अपराध अथवा निर्दोष सिद्ध करने के लिये अग्नि, जल, विष आदि द्वारा दिव्य परीक्षाएँ ली जाती थीं।

- उसके अनुसार, व्यापारिक मार्गों, घाटों, ब्रिकी वस्तुओं आदि पर भी कर लगते थे, जिससे राज्य को पर्याप्त धन प्राप्त होता था।
- उसने शूद्रों को कृषक कहा।

2012

1. प्राचीन भारत में देश की अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली 'श्रेणी' संगठन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

1. प्रत्येक 'श्रेणी' राज्य के एक केंद्रीय प्राधिकरण के साथ पंजीकृत होती थी और प्रशासनिक स्तर पर राजा उनका प्रमुख होता था।

2. 'श्रेणी' ही वेतन, काम करने के नियमों, मानकों और कीमतों को सुनिश्चित करती थी।

3. श्रेणी का अपने सदस्यों पर न्यायिक अधिकार होता था।

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

सही उत्तरः (c)

व्याख्या: केवल कथन 2 और 3 सही हैं; चूँकि श्रेणी का अनिवार्य रूप से प्रशासनिक प्रमुख राजा नहीं होता था। शिल्पी अपनी श्रेणी के मुखिया के अधीन संगठित थे जो उनके हितों का ध्यान रखते थे। अतः कथन 1 गलत है।

- ये श्रेणियाँ वित्तीय एवं बैंकिंग संस्थान के रूप में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। उत्पादन, वितरण एवं मूल्य निर्धारण में भी उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। ये श्रेणियाँ अपने सदस्यों को सामाजिक सुरक्षा एवं सम्मान दिलाने में भी भूमिका निभाती थीं। श्रेणियाँ अपने सदस्यों को तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा देने का प्रावधान भी करती थीं। ये प्रशासनिक कार्य भी संपादित करती थीं।
- बृहस्पति का कहना था कि श्रेणी का प्रधान श्रेणी धर्म के अनुसार, अपने सदस्यों के साथ कड़ा या मृदु व्यवहार कर सकता था। अतः बृहस्पति के कथन से पता चलता है कि श्रेणी का सदस्यों पर न्यायिक अधिकार होता है।

2. प्राचीनकालीन भारत में हुई वैज्ञानिक प्रगति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?

1. प्रथम शताब्दी ई. में विभिन्न प्रकार के विशिष्ट शल्य औज़ारों का उपयोग आम था।

2. तीसरी शताब्दी ई. के आरम्भ में मानव शरीर के आंतरिक अंगों का प्रत्यारोपण शुरू हो चुका था।

3. पाँचवी शताब्दी ई. में कोण के ज्यां का सिद्धांत ज्ञात था।

4. सातवीं शताब्दी ई. में चक्रीय चतुर्भुज का सिद्धांत ज्ञात था।

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3 और 4
(c) केवल 1, 3 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

सही उत्तरः (c)

व्याख्या: प्राचीन भारत का समय वैज्ञानिक प्रगति की दृष्टि से उल्लेखनीय रहा है। इस दौरान प्रथम शताब्दी ई. तक शल्य चिकित्सा में काम आने वाले विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग होता था, किंतु अंग प्रत्यारोपण संभव नहीं हो सका था। अतः द्वितीय कथन गलत है।

- प्राचीन भारतीय ग्रंथ 'चरक संहिता' चिकित्सा शास्त्र का विश्वकोष है। इसमें ज्वर, कुष्ठ, मिर्गी, दमा अनेक रोगों की चिकित्सा का वर्णन है।
- गणित के क्षेत्र में भारतीय प्राचीन काल से ही समृद्ध हैं। शून्य का ज्ञान, त्रिकोणमिति का सिद्धांत, समीकरणों, वर्गमूल, घनमूल, पाई (π) के मान को भारतीयों द्वारा ही खोजा गया।
- ब्रह्मगुप्त के 'ब्रह्मस्फुट सिद्धांत' में चतुर्भुज का क्षेत्रफल निकालने का सिद्धांत दिया गया।
- खगोल विज्ञान के क्षेत्र में भी वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, भास्कर द्वितीय आदि ने महत्त्वपूर्ण स्थापनाएँ कीं। ग्रह की स्थिति, सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण के कारणों संबंधी जानकारियाँ भारतीयों द्वारा दी गईं।

2011

1. सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. यह प्रमुखतः लौकिक सभ्यता थी तथा उसमें धार्मिक तत्त्व यद्यपि उपस्थित था, वर्चस्वशाली नहीं था।

2. उस काल में भारत में कपास से वस्त्र बनाए जाते थे।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

सही उत्तरः (c)

व्याख्या: सिंधु घाटी सभ्यता में धर्म इहलौकिक था तथा उस समय लोग कपास से भी परिचित थे। अतः दोनों कथन सत्य हैं।

- सिंधु सभ्यता में धार्मिक तत्त्व की उपस्थिति थी, परंतु धर्म का स्वरूप इहलौकिक तथा व्यावहारिक था।
- पुरास्थलों से प्राप्त मिट्टी की मूर्तियों, पत्थर की छोटी मूर्तियों, मुहरों, पत्थर निर्मित लिंग एवं योनियों, मृदभांडों पर चित्रित चिह्नों से यह परिलक्षित होता है कि मातृदेवी, पुरुष देवता (पशुपतिनाथ), लिंग-योनि, वृक्ष प्रतीक, पशु, जल आदि की पूजा की जाती थी।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक सील पर तीन मुख वाला एक पुरुष ध्यान की मुद्रा में बैठा हुआ है।
- हड़प्पा से प्राप्त एक मूर्ति में स्त्री के गर्भ से निकलता एक पौधा दिखाया गया है। लोग संभवतः इसे उर्वरता की देवी मानकर पूजते होंगे।
- हड़प्पा सभ्यता के एक महत्त्वपूर्ण स्थल मेहरगढ़ से कपास के साक्ष्य मिले हैं। साक्ष्य यह इंगित करता है कि सैंधव काल में कपास की खेती की जाती थी तथा उसका प्रयोग कपड़ा निर्माण करने में होता था।

मध्यकालीन भारत

2025

1. निम्नलिखित फलों पर विचार कीजिये:

I. पपीता
II. अनन्नास
III. अमरूद

उपर्युक्त में से कितने सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियों में पुर्तगालियों द्वारा भारत में लाए गए?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) कोई भी नहीं

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- पुर्तगाली, भारत में आने वाले सबसे पहले यूरोपीय थे और उन्होंने 16वीं तथा 17वीं शताब्दी के दौरान कई अमेरिकी फसलों एवं फलों को भारत में लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इनमें अनन्नास, पपीता और अमरूद शामिल हैं। ये सभी अमेरिकी मूल के हैं तथा जिन्हें पुर्तगालियों ने भारत में लाया था।
- अनन्नास ब्राज़ील से लाया गया था और इसका उल्लेख आइन-ए-अकबरी (1590 के दशक) में मिलता है, जिससे स्पष्ट होता है कि तब तक यह भारत में उगाया जाने लगा था। यह फल तेज़ी से विस्तृत हुआ और मुगल शाही बागों तथा पुर्तगाली बस्तियों में उगाया जाने लगा।
- पपीता, फिलीपीन्स और मलक्का जलसंधि के माध्यम से भारत पहुँचा और 1600 के दशक की शुरुआत तक दमन जैसे पुर्तगाली क्षेत्रों में सामान्य हो गया। यह फल लोगों को बहुत पसंद आया और इसे 'जेसुइट खरबूजा' (Jesuit melon) कहा जाने लगा।
- अमरूद, अनानास और पपीते से थोड़ा बाद में आया। हालाँकि अबुल फजल ने अपने लेखों में अमरूद का उल्लेख किया है, लेकिन संभवत: इसका संदर्भ नाशपाती से था। भारत में अमरूद का पहला स्पष्ट उल्लेख अंग्रेज़ चिकित्सक जॉन फ्रायर ने वर्ष 1673 में मद्रास के पास किया था, जो पुर्तगालियों द्वारा इसके आगमन का संकेत देता है। **अत: विकल्प (c) सही है।**

2. सिंचाई में काम आने वाला 'अरघट्टा' नामक उपकरण क्या था?

(a) एक घिरनी (पुली) से खींचा जाने वाला चमड़े का बना पानी का थैला
(b) एक बड़ा चक्का, जिसकी अराओं (स्पोक्स) के बाहरी छोरों पर मिट्टी के पात्र बँधे हों
(c) बैलों के द्वारा खींचा जाने वाला मिट्टी का एक अधिक बड़ा पात्र
(d) सीधे हाथों से ही रस्सी द्वारा खींचा जाने वाला बड़ा जल-डोल (वॉटर बकेट)

सही उत्तर: (b)

व्याख्या:

- शुष्क क्षेत्रों में जल उपकरणों का निर्माण एक पुण्य कार्य माना जाता था। कूप से जल-निष्कर्षित करने के लिये प्रयोग किये जाने वाले तकनीकी उपकरणों के संबंध में बहुत सारे साक्ष्य उपलब्ध हैं।
- देसिनमाला में अगाती, अनकड्डी और ढेंका जैसे शब्दों का उल्लेख है, जिसका अर्थ है जल-निष्कर्षित करने का एक ऐसा उपकरण, जिसमें एक क्षैतिज बीम, जिसके एक सिरे पर एक बाल्टी लटकी होती है, एक ऊर्ध्वाधर खंभे पर झूले की भाँति कार्य करती है; यह पारंपरिक ढंग से जल खींचने की एक युक्ति होती थी।
- दक्षिणी राजस्थान, विशेषकर जोधपुर, उदयपुर, बाँसवाड़ा, सांचोर और सिरोही क्षेत्रों से प्राप्त अभिलेखों में सिंचाई के संदर्भ में बार-बार 'अरघट्ट' (अरहट्ट/अरघट्टा) और 'धिमड़ा' या 'धिकु' जैसे उपकरणों का उल्लेख मिलता है।
- अरघट्ट, जिसे सामान्यत: 'फारसी पहिया' कहा जाता है, उसकी तकनीकी प्रकृति विवाद का विषय रही है। अरघट्ट का मुख्य घटक 'घटियंत्र' अर्थात् मटकों वाला यंत्र था, जिसे सामान्यत: एक पहिये पर स्थापित किया जाता था, किंतु वह पहिये की परिधि से जुड़ा नहीं होता था।
  - सिंचाई उपकरण के रूप में 'घटियंत्र' को प्राय: 'घड़ों की माला' (पॉट-गारलैंड) के रूप में माना जाता है।
- सिद्धर्षि द्वारा रचित उपमितिभवप्रपंचकथा (ईस्वी सन् 906) में इस यंत्र (अरघट्ट) का सबसे विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। इस ग्रंथ के अनुसार, अरघट्ट एक ऐसे यंत्र के रूप में वर्णित है, जिसका प्रयोग जलाशय से जल खींचने के लिये किया जाता था। ग्रंथ में उस चक्र के 'अरकों' (साँकल के काँटे या स्पोक्स) का उल्लेख मिलता है, जो एक घूर्णनशील उपकरण (रिवॉल्विंग अप्परेटस) का हिस्सा था। हालाँकि इस विवरण में किसी ऐसे गियरिंग तंत्र का उल्लेख नहीं मिलता, जो क्षैतिज घूर्णन गति को ऊर्ध्वाधर घूर्णन गति में परिवर्तित करता हो।
  - चौदहवीं शताब्दी में जो विशेषता पाई गई, वह 'साकिया' अथवा पारसी पहिये के रूप में जानी जाती है। 'अरघट्ट' नामक जल-यंत्र का प्रचलन सर्वाधिक स्पष्ट रूप से ग्यारहवीं शताब्दी के एक शिलापट्ट से प्रतिपादित होता है, जो राजस्थान के पाली ज़िले के मंदसौर (सतपथी, तिथि अनुपलब्ध)से प्राप्त हुआ है।

अत: विकल्प (b) सही है।

2024

1. मध्यकालीन भारत के निम्नलिखित शासकों में से किसने पुर्तगालियों को भटकल में एक किला बनाने की अनुमति दी थी?

(a) कृष्णदेवराय
(b) नरसिम्हा सालुव
(c) मुहम्मद शाह III
(d) यूसुफ आदिल शाह

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: भटकल कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ ज़िले के दक्षिणतम छोर पर स्थित है। यह शरावती नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है।

- ऐसा कहा जाता है कि भटकल नाम जैन संत भट्ट अकालंका के नाम पर पड़ा है जो नौवीं शताब्दी में यहाँ निवास करते थे।
- भारत में पुर्तगालियों के आगमन के साथ ही भटकल चर्चा में रहा। वास्को डी गामा के समय से ही भटकल के सरदार पुर्तगाली शासकों को कर (Tax) देते थे।
- सम्राट **कृष्णदेवराय** ने 1510 ई. में पुर्तगालियों को यहाँ एक किला बनाने की अनुमति प्रदान की थी।

अतः विकल्प (a) सही है।

2023

1. निम्नलिखित साम्राज्यों पर विचार कीजिये:

1. होयसल   **2. गहड़वाल**

3. काकतीय   **4. यादव**

उपर्युक्त में से कितने साम्राज्यों ने अपने राज आद्य आठवीं शताब्दी ईस्वी में स्थापित किये?

(a) केवल एक   **(b) केवल दो**

(c) केवल तीन   **(d) किसी ने नहीं**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या:

होयसल:

- **होयसल साम्राज्य** उन शक्तिशाली साम्राज्यों में से एक था, जिसने **10वीं से 14वीं शताब्दी** के मध्य दक्षिण भारत में शासन किया था।
- होयसल साम्राज्य की राजधानी आरंभ में बेलूर में अवस्थित थी जिसे बाद में हलेबीडु में स्थानांतरित किया गया था।
- होयसल साम्राज्य के शासनकाल से दक्षिण भारतीय कला, वास्तुकला एवं धर्म का विकास हुआ तथा इसकी विरासत मुख्य रूप से होयसल वास्तुकला में निहित है।

गहड़वाल:

- गहड़वाल राजवंश, 12वीं-13वीं शताब्दी में हुए मुस्लिम आक्रमण से पहले उत्तर भारत का एक साम्राज्य था।
- इसकी कालावधि **11वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर 13वीं शताब्दी के मध्य** तक थी जिसमें प्रारंभिक, मध्यकालीन उत्तर भारतीय राजनीति की सभी विशेषताओं जैसे- वंशवादी प्रतिद्वंद्विता और गठबंधन, सामंती राज्य संरचना, ब्राह्मणवादी सामाजिक विचारधारा पर पूर्ण निर्भरता तथा बाह्य आक्रमण के प्रति सुभेद्यता आदि शामिल हैं।

काकतीय और यादव:

- 13वीं से 15वीं शताब्दी तक का दक्षिण भारतीय इतिहास दो अलग-अलग चरणों में विभाजित है: 13वीं शताब्दी की शुरुआत को चोल एवं चालुक्य साम्राज्यों के विघटन के रूप में चिह्नित किया जाता है। चोलों के पतन के बाद दक्षिण में पांड्य एवं होयसल का उदय हुआ तथा इस क्षेत्र के उत्तर में काकतीय एवं यादवों का उदय, चालुक्य शक्ति के पतन के परिणामस्वरूप हुआ। ये राज्य एक शताब्दी से भी अधिक समय तक अस्तित्व में रहे। **अतः विकल्प** (d) **सही है।**

2. विजयनगर साम्राज्य के इनमें से किस एक शासक ने तुंगभद्रा नदी पर एक विशाल बाँध निर्मित किया और नदी से राजधानी नगर तक कई किलोमीटर लंबी एक नहर और कुल्या का निर्माण किया?

(a) देवराय प्रथम   **(b) मल्लिकार्जुन**

(c) वीर विजय   **(d) विरूपाक्ष** *सही उत्तर:* (a)

व्याख्या: देवराय प्रथम ने तुंगभद्रा नदी पर एक बाँध का निर्माण करवाया तथा इस बाँध से नहरों के माध्यम से नगरों एवं गाँवों को पेय/सिंचाई हेतु जलापूर्ति होती थी। **अतः विकल्प (a) सही है।**

3. मध्यकालीन गुजरात के इनमें से किस एक शासक ने दियु को पुर्तगालियों के सुपुर्द कर दिया?

(a) अहमद शाह   **(b) महमूद बेगढ़ा**

(c) बहादुर शाह   **(d) मुहम्मद शाह**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- 16वीं शताब्दी के आरंभ में मुगल सम्राट हुमायूँ के आक्रमण से गुजरात का सुल्तान बहादुर शाह अत्यधिक दबाव में आ गया।
- तत्कालीन पारिस्थितियों में उसने पुर्तगालियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने का निर्णय लिया, जिनके पास उस समय सक्रिय समुद्री शक्ति थी जिसके जरिये 15वीं शताब्दी के अंत में वे भारत पहुँचे थे।
- वर्ष 1534 में, **शाह ने पुर्तगालियों के साथ बसीन की संधि पर हस्ताक्षर किया, आगे चलकर उसने दियु (Diu) के साथ-साथ** साम्राज्य के अन्य क्षेत्रों जैसे कि वसई तथा वर्तमान मुंबई स्थित द्वीपों को भी पुर्तगालियों को सौंप दिया। वर्ष 1559 में पुर्तगालियों ने शाह से दमन को प्राप्त किया। **अतः विकल्प (c) सही है।**

2022

1. मध्यकालीन भारत में, शब्द "फणम" किसे निर्दिष्ट करता था?

(a) पहनावा   **(b) सिक्के**

(c) आभूषण   **(d) हथियार**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: मध्यकालीन त्रावणकोर में फणम और चकराम सिक्के मुद्रा की नियमित इकाई थे और व्यापार के लिये बड़े पैमाने पर उपयोग किये जाते थे। **अतः विकल्प (b) सही है।**

2. भारतीय इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. भारत पर पहला मंगोल आक्रमण जलालुद्दीन खिलज़ी के राज्यकाल में हुआ।

2. अलाउद्दीन खिलज़ी के राज्य-काल में, एक मंगोल आक्रमण दिल्ली तक आ पहुँचा और उस शहर पर घेरा डाल दिया।

3. मुहम्मद-बिन-तुगलक मंगोलों से अपने राज्य के कुछ उत्तरी-पश्चिमी भाग अस्थायी रूप से हार गया था।

उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सही है/हैं

(a) 1 और 2 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 3 **(d) केवल 3**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः 1240-66 ईस्वी के बीच मंगोलों ने पहली बार भारत के विलय की नीति अपनाई और इसके साथ ही दिल्ली के साथ आपसी गैर-आक्रामकता समझौते का स्वर्णिम चरण समाप्त हो गया। 1241 ईस्वी में तायर बहादुर के अधीन मंगोलों ने लाहौर पर आक्रमण किया और शहर को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। **अतः कथन 1 गलत है।**

- 1299 ईस्वी में मंगोलों ने मंगोल शासक दवा खान के पुत्र कुतलुग खान (कुतलुग ख्वाजा) के नेतृत्व में भारत पर आक्रमण किया। मंगोलों द्वारा दिल्ली को तबाह करने का यह पहला प्रयास था। उनके निकट आने की बात सुनकर अलाउद्दीन ने अफरा-तफरी में एक सेना तैयार की और सिरी के बाहर इसे तैनात किया। मंगोलों ने दिल्ली से छह मील उत्तर में स्थित किल्ली नामक स्थान पर प्रवेश किया। **अतः कथन 2 सही है।**
- अंतिम महत्त्वपूर्ण मंगोल आक्रमण सुल्तान मुहम्मद तुगलक के शासनकाल के दौरान तरमाशिरिन के नेतृत्व में हुआ था। गयासुद्दीन तुगलक ने तरमाशिरिन के खिलाफ आक्रमण किया और उसे सिंधु के पार वापस भेज दिया जो मंगोलों के साथ सीमा बनी रही थी। **अतः कथन 3 गलत है। अतः विकल्प (b) सही है।**

3. **भारतीय इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन "कुलाह-दारन" कहलाते थे?**

(a) अरब व्यापारी **(b) कलंदर**

(c) फारसी खुशनवीस **(d) सैय्यद**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः सैयदों ने उनकी पुत्री फातिमा के माध्यम से पैगंबर का वंशज होने का दावा किया। मुस्लिम समाज में उनका विशेष सम्मान था। तैमूर ने भारत पर आक्रमण के दौरान सैयदों के जीवन की रक्षा की, हालाँकि उनकी नीति सामान्य वध की थी। राज्य के राजस्व के दुरुपयोग के आरोपी सैयद को सिकंदर लोदी ने रिहा कर दिया और उसे अपने बेईमानी से प्राप्त लाभ को अपने पास रखने की अनुमति दी गई। सैयद एक नुकीली टोपी (कुलह) लगाते थे इसलिये उन्हें कुलह-दारन के नाम से जाना जाता था। **अतः विकल्प (d) सही है।**

2021

1. **मध्यकालीन भारत के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा आकार की दृष्टि से आरोही क्रम में सही अनुक्रम है?**

(a) परगना-सरकार-सूबा **(b) सरकार-परगना-सूबा**

(c) सूबा-सरकार-परगना **(d) परगना-सूबा-सरकार**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः मध्यकालीन भारत में राज्य का प्रशासनिक विभाजन सूबा यानी प्रांत/प्रदेश में, सूबा का सरकार (यानी आधुनिक तहसील/अनुमंडल) और परगने का विभाजन गाँव में किया जाता था। अतः सबसे छोटी इकाई गाँव, उससे बड़ी परगना, परगना से बड़ी सरकार और सरकार से बड़ी इकाई सूबा होती थी। **अतः विकल्प (a) सही है।**

2. **भारतीय इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?**
   1. **हैदराबाद राज्य से आरकोट की निज़ामत का उदय हुआ।**
   2. **विजयनगर साम्राज्य से मैसूर राज्य का उदय हुआ।**
   3. **रुहेलखंड राज्य का गठन, अहमद शाह दुर्रानी द्वारा अधिकृत राज्यक्षेत्र में से हुआ।**

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) 1 और 2 **(b) केवल 2**

(c) 2 और 3 **(d) केवल 3**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः तालीकोटा के युद्ध (1565 ई.) के पश्चात् विजयनगर सम्राज्य का पतन हो गया और इसकी कमज़ोर स्थिति का फायदा उठाकर, जिन स्वतंत्र जिन स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ, उनमें मैसूर एक प्रमुख राज्य था। इसके पश्चात् मैसूर पर वाड्यार वंश का शासन था। **अतः विकल्प (b) सही है।**

- नादिरशाह के आक्रमण के पश्चात् मुगल प्रशासन के संकट काल में अली मुहम्मद खान ने रुहेलखंड नाम से एक नए राज्य का गठन किया जो उत्तर में कुमाऊँ की पहाड़ियों तथा दक्षिण में गंगा तक विस्तृत था। आरंभ में इसकी राजधानी बरेली के आवलां में स्थित थी जो बाद में रामपुर में स्थानांतरित कर दी गई। रुहेलों का संघर्ष दिल्ली, अवध और जाट राज्य से लगातार चलता रहता था। अतः कथन 3 गलत है।

3. **पुर्तगाली लेखक नूनिज़ के अनुसार, विजयनगर साम्राज्य में महिलाएँ निम्नलिखित में से किन क्षेत्रों में निपुण थीं?**

1. कुश्ती **2. ज्योतिषशास्त्र**

3. लेखाकरण **4. भविष्यवाणी**

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1, 2 और 3 **(b) केवल 1, 3 और 4**

(c) केवल 2 और 4 **(d) 1, 2, 3 और 4**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः 1535 से 1537 के मध्य पुर्तगाली यात्री नूनिज़ ने विजयनगर की यात्रा की थी और उसने वहाँ की सामाजिक-आर्थिक दशा का विस्तृत वर्णन किया था। इस समय अच्चुत देवराय का शासन था। नूनिज़ के अनुसार विजयनगर में स्त्रियों का बहुत सम्मान था। कुछ स्त्रियाँ मल्लयोद्धा, ज्योतिषी, भविष्यवक्ता, अंगरक्षिकाएँ, सुरक्षाकर्मी, लेखाधिकारी, लिपिक एवं संगीतकार होती थीं। वे युद्ध में भी भाग लेती थीं। **अतः विकल्प (d) सही है।**

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. इल्तुतमिश के शासनकाल में, चंगेज़ खान भगोड़े ख्वारिज़्म युवराज की खोज में सिंधु नदी तक पहुँचा था।

2. मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में, तैमूर ने मुल्तान पर अधिकार किया था और सिंधु नदी पार की थी।

3. विजयनगर साम्राज्य के देवराय द्वितीय के शासनकाल में, वास्को-द-गामा केरल के तट पर पहुँचा था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**

(c) केवल 3 **(d) 2 और 3**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: मंगोलों के महान नेता चंगेज खान ने पर्शिया (ईरान) पर आक्रमण कर उसके शासक अलाउद्दीन मुहम्मद ख्वारिज़्मशाह का साम्राज्य नष्ट कर दिया और उसे जान बचाकर कैस्पियन समुद्रतट की ओर भागने पर मजबूर कर दिया। ख्वारिज़्मशाह का बड़ा बेटा युवराज जलालुद्दीन मांगबर्नी भारत की ओर सिंधु नदी तट तक भाग कर आया, जहाँ तक मंगोलों ने उसका पीछा किया। उसने इल्तुतमिश से मंगोलों के विरुद्ध सहायता की अपील की लेकिन चंगेज खान के आक्रमण के भय से इल्तुतमिश ने उसकी मदद करना स्वीकार नहीं किया। अत: कथन 1 सही है।

- मुहम्मद बिन तुगलक का शासन काल 1325-1351 ई. तक था, जबकि तैमूर ने भारत पर 1398-99 के दौरान आक्रमण किया अत: कथन 2 गलत है।
- विजयनगर के राजा देवराय द्वितीय का शासन काल 1424-1446 ई. तक था, जबकि वास्को-द-गामा 1498 ई. में भारत के कालीकट के तट पर पहुँचा था। अत: कथन 3 असत्य है। **अत: विकल्प (a) सही है।**

2020

1. भारत के इतिहास में निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिये-

1. राजा भोज के अधीन प्रतिहारों का उदय

2. महेंद्रवर्मन-I के अधीन पल्लव सत्ता की स्थापना

3. परांतक-I द्वारा चोल सत्ता की स्थापना

4. गोपाल द्वारा पाल राजवंश की संस्थापना

उपर्युक्त घटनाओं का, प्राचीन काल से आरंभ कर, सही कालानुक्रम क्या है?

(a) 2 - 1 - 4 - 3 **(b) 3 - 1 - 4 - 2**

(c) 2 - 4 - 1 - 3 **(d) 3 - 4 - 1 - 2**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: मिहिर भोज (836-885 ई.), महेंद्र वर्मन प्रथम (600-630 ई.) तथा परांतक प्रथम (907-953) क्रमश: प्रतिहार, पल्लव तथा चोल राजवंश से संबंधित है। गोपाल द्वारा पाल वंश की स्थापना 750 ई. में की गई थी। अत: इनके शासन काल के अनुसार सही कलानुक्रम 2 – 4 – 1 – 3 होगा।

2019

1. मुगल भारत के संदर्भ में, जागीरदार और ज़मींदार के बीच क्या अंतर है/हैं?

1. जागीरदारों के पास न्यायिक और पुलिस दायित्वों के एवज़ में भूमि आवंटनों का अधिकार होता था, जबकि ज़मींदारों के पास राजस्व अधिकार होते थे तथा उन पर राजस्व उगाही को छोड़कर अन्य कोई दायित्व पूरा करने की बाध्यता नहीं होती थी।

2. जागीरदारों को किये गए भूमि आवंटन वंशानुगत होते थे और ज़मींदारों के राजस्व अधिकार वंशानुगत नहीं होते थे।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: मुगल प्रशासनिक प्रणाली में शासन का अधिपति 'बादशाह' कहलाता था। बादशाह प्रधान सेनापति, सर्वोच्च न्यायदाता व इस्लाम का संरक्षक होता था। बादशाह के बाद काज़ी (Qazi) मुख्य न्यायाधीश होता था। 'काज़ी-उल-कुज़्ज़ात' फौजदारी मुकदमों का फैसला इस्लामी कानूनों के अनुसार करता था। गौरतलब है कि 'सद्र' व 'काज़ी' को मनसबदारी से नहीं जोड़ा गया था।

- मनसबदार को 'नकद' व 'जागीर' दोनों रूपों में पारिश्रमिक दिया जाता था। जब मनसबदारों को जागीर दी जाती थी तो उन्हें 'जागीरदार' कहा गया। अत: कहा जा सकता है कि सभी जागीरदार मनसबदार थे, किंतु सभी मनसबदार जागीरदार नहीं। जागीरदारों को पुलिस दायित्वों के एवज़ में भूमि आवंटन के अधिकार प्राप्त होते थे, जो इनके सेवाकाल तक ही रहते थे।
- ज़मींदार अपनी ज़मीन के मालिक होते थे। इनका कार्य अपने प्रभाव क्षेत्र से भू-राजस्व संग्रह कर राज्य को देना होता था। इसके बदले उन्हें वित्तीय मुआवज़ा मिलता था। इनके राजस्व अधिकार वंशानुगत होते थे। हालाँकि, इनका मुख्य दायित्व तो राजस्व उगाही होता था, किंतु इसके अतिरिक्त वे राज्य को कुछ खास किस्म की सेवाएँ (ख़िदमत) देते थे।
- ज़्यादातर ज़मींदारों के पास अपने किले होते थे और अपनी सैनिक टुकड़ियाँ भी, जिसमें घुड़सवारों, तोपखाने और पैदल सिपाहियों के जत्थे होते थे। आवश्यकता पड़ने पर वे अपने सैनिक संसाधन भी राज्य को उपलब्ध कराते थे। अत: कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं। इसलिये विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. दिल्ली सल्तनत के राजस्व प्रशासन में राजस्व वसूली के प्रभारी को 'आमिल' कहा जाता था।

2. दिल्ली के सुल्तानों की इक्ता प्रणाली एक प्राचीन देशी संस्था थी।

3. 'मीर बख़्शी' का पद दिल्ली के ख़लजी सुल्तानों के शासनकाल में अस्तित्व में आया।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**

(c) केवल 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: दिल्ली सल्तनत के राजस्व प्रशासन में राजस्व वसूली के प्रभारी को 'आमिल' कहा जाता था। अत: कथन 1 सही है। 'इक्ता' प्राचीन देशी प्रणाली नहीं बल्कि यह दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत विकसित संस्था थी। अत: कथन 2 गलत है।

भारत में सर्वप्रथम 'इक्ता' मुहम्मद गौरी ने बाँटी। उसने कुतुबुद्दीन ऐबक को 'हाँसी' का इक्तेदार बनाया किंतु 'इक्ता' को सुव्यवस्थित रूप देने का श्रेय इल्तुतमिश को ही दिया जाता है।

गौरतलब है कि इक्ता एक ऐसा भू-क्षेत्र होता था जो सैनिक व असैनिक अधिकारियों (मुख्यत: सैनिक) को उस क्षेत्र के प्रशासनिक संचालन के लिये दिया जाता था। किसी भी अवस्था में इक्तेदार उस भू-खंड के स्वामी नहीं हो सकते थे। वे तो केवल पैदावार की लगान के उपभोग के स्वामी हो सकते थे। बड़े इक्तेदारों को मुक्ता, वलि या मलिक भी कहा जाता था।

'मीर बख्शी' का पद दिल्ली के ख़िलजी सुल्तानों के शासनकाल में नहीं बल्कि मुगल काल में अस्तित्व में आया। सल्तनत काल में 'दीवान-ए-आरिज़' सैन्य विभाग का प्रमुख होता था। अत: कथन 3 गलत है।

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. संत निम्बार्क, अकबर के समकालीन थे।

2. संत कबीर, शेख अहमद सरहिंदी से अत्यधिक प्रभावित थे।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: निंबार्काचार्य को रामानुजाचार्य के समकालीन माना जाता है, जो 11वीं-12वीं शताब्दी के संत थे। जबकि अकबर का शासनकाल 1556–1605 ई. तक था। अत: कथन 1 गलत है।

> **नोट:** निंबार्काचार्य का मत 'द्वैताद्वैतवाद' के नाम से जाना जाता है।

- वहीं संत कबीर, जो लोदी सुल्तान 'सिकंदर लोदी' के समकालीन थे, अपने गुरु रामानंद से अत्यधिक प्रभावित थे। कबीर हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। अत: कथन 2 गलत है।

4. मियाँ तानसेन के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) सम्राट अकबर द्वारा इन्हें दी गई उपाधि तानसेन थी।

(b) तानसेन ने हिन्दू देवी-देवताओं से संबंधित ध्रुपदों की रचना की।

(c) तानसेन ने अपने संरक्षकों से संबंधित गानों की रचना की।

(d) तानसेन ने अनेक रागों की मौलिक रचना की।

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: तानसेन अकबर के नवरत्नों में से एक थे। ये मुगल दरबार के प्रमुख संगीतकार थे। इन्होंने हिन्दू-देवी देवताओं (गणेश, शिव, पार्वती आदि) से संबंधित ध्रुपदों की रचना करने के साथ-साथ अनेक रागों (जैसे- मियाँ मल्हार, मियाँ की सारंग, मियाँ की तोड़ी, दरबारी कान्हड़ा आदि) की मौलिक रचना की। इसके अतिरिक्त इन्होंने अपने संरक्षकों से संबंधित गानों की भी रचना की।

- तानसेन के बचपन का नाम रामतनु पाण्डेय था। ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर या उनके पुत्र राजा विक्रमाजीत (इन दोनों के ही साक्ष्य इस संदर्भ में मिलते हैं) ने उन्हें 'तानसेन' की उपाधि प्रदान की थी।

> **नोट:** इतिहासकारों के एक वर्ग का मानना है कि रीवा नरेश रामचंद्र सिंह ने उन्हें तानसेन की उपाधि दी थी।

- अकबर ने उन्हें 'मियाँ' की उपाधि प्रदान की थी। अत: विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

5. इनमें से किस मुगल सम्राट ने सचित्र पांडुलिपियों से ध्यान हटाकर चित्राधार (एलबम) और वैयक्तिक रूपचित्रों पर अधिक ज़ोर दिया?

(a) हुमायूँ **(b) अकबर**

(c) जहाँगीर **(d) शाहजहाँ**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: मुगलकालीन चित्रकला के अंतर्गत जहाँगीर के काल में सचित्र पांडुलिपियों के स्थान पर वैयक्तिक रूपचित्रों व चित्राधार (एलबम) शैली पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाने लगा। इसके अतिरिक्त अलंकृत हाशिये का विकास तथा प्रकृति का अधिक सजीव और बारीक चित्रण जहाँगीरकालीन चित्रकला की विशेषता है।

2018

1. निम्नलिखित विदेशी यात्रियों में से किसने भारत के हीरों और हीरे की खदानों की विस्तृत रूप से चर्चा की?

(a) फ्रांस्वा बर्नियर **(b) ज्याँ-बैप्टिस्ट टेवर्नियर**

(c) ज्याँ द थेवेनो **(d) एबे बार्थेलेमी कारे**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: ज्याँ–बैपटिस्ट टेवर्नियर (1605–1689) एक फ्राँसीसी खोजकर्त्ता एवं व्यापारी था। भारत में हीरे की खानों का उल्लेख करने वाला वह प्रथम यूरोपीय था। उसे 1666 ई. में की गई 116 कैरेट ब्लू डायमंड की खोज/खरीद के लिये जाना जाता है, जिसे उसने 1668 ई. में फ्राँस के लुई चौदहवें को बेच दिया था।

2017

1. निम्नलिखित में से कौन-सा एक काकतीय राज्य में अतिमहत्त्वपूर्ण समुद्र-पतन था?

(a) काकिनाडा **(b) मोटुपल्ली**
(c) नेल्लुरु **(d) मछलीपटनम (मसुलीपटनम)**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: काकतीय वंश के राजाओं का शासन आधुनिक हैदराबाद के पूर्वी भाग तेलंगाना में था। काकतीय शासक मूलत: कल्याणी के चालुक्यों के सामंत थे।

- काकतीय वंश के प्रसिद्ध शासक गणपतिदेव ने जब अपनी राजधानी अमनकोंडा से वारंगल स्थानांतरित की तो इस क्षेत्र की समृद्धि में काफी वृद्धि हुई। इस साम्राज्य का एक बहुत ही प्रसिद्ध बंदरगाह मोटुपल्ली (प्रकाशम ज़िला) था। गणपति देव ने इस क्षेत्र में पूर्व के दमनकारी करों को समाप्त कर दिया जिसके परिणामस्वरूप मोटुपल्ली व्यापार हेतु महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया।

2016

1. विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय की कराधान व्यवस्था से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भूमि की गुणवत्ता के आधार पर भू-राजस्व की दर नियत होती थी।

2. कारखानों के निजी स्वामी एक औद्योगिक कर देते थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**
(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय के समय लगान का निर्धारण भूमि की उत्पादकता और उसकी स्थिति के अनुसार किया जाता था। भूमि से होने वाली पैदावार और उसकी किस्म भू-राजस्व के निर्धारण का सबसे बड़ा आधार था। कारखानों के निजी स्वामी भी एक औद्योगिक कर देते थे। अत: दोनों कथन सत्य हैं।

कृष्णदेव राय तुलुव वंश का महान शासक था। वह 'आंध्र भोज', 'अभिनव भोज', 'आंध्र पितामह' आदि उपाधियों से विभूषित था। उसने बंजर व गैर-कृषि भूमि को कृषि योग्य बनाने हेतु विभिन्न प्रयास किये। साथ ही, उसने 'विवाह कर' जैसे अलोकप्रिय कर को भी समाप्त किया।

कृष्णदेव राय तेलुगू साहित्य का महान विद्वान था। उसने तेलुगू के प्रसिद्ध ग्रंथ 'आमुक्त माल्यद' की रचना की। उसकी यह रचना तेलुगू के पाँच महाकाव्यों में से एक मानी जाती है। उसके दरबार में तेलुगू साहित्य के 8 सर्वश्रेष्ठ कवि रहते थे, जिन्हें 'अष्टदिग्गज' कहा जाता था।

2. भारतीय इतिहास के मध्यकाल में बंजारे सामान्यत: कौन थे?

(a) कृषक **(b) योद्धा**
(c) बुनकर **(d) व्यापारी**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: भारतीय इतिहास के मध्यकाल में बंजारे सामान्यत: नमक के व्यापारी वर्ग से संबंधित थे। बंजारा (जिन्हें लंबाणी, वंजारा और गोरमाटी भी कहा जाता है) एक ऐसा समुदाय है जिसे आमतौर पर घुमंतू समुदाय के रूप में वर्णित किया जाता है, जो भारत के राजस्थान में पाए जाते हैं। अब ये सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में फैले हुए हैं। बंजारे पारम्परिक रूप से बैलों और नमक के आपूर्तिकर्त्ता व्यापारी माने जाते थे। ऐसा माना जाता है कि बंजारा शब्द संस्कृत शब्द के 'वनचर' से आया है (अर्थात् वनों में विचरण करने वाला)। लंबाणी या लामनी शब्द संस्कृत शब्द 'लवण' से लिया गया प्रतीत होता है, जो प्रमुख वस्तु थी, जिसका यह समुदाय व्यापार करता था। अत: बंजारे मुख्य रूप से व्यापारी थे। इस समुदाय की महिलाएँ कढ़ाई का कार्य करती थीं परंतु यह उनके जीवनयापन का स्रोत नहीं था।

3. मध्यकालीन भारत के आर्थिक इतिहास के संदर्भ में शब्द 'अरघट्टा (Araghatta)' किसे निरूपित करता है?

(a) बंधुआ मज़दूर

(b) सैन्य अधिकारियों को दिये गए भूमि अनुदान

(c) भूमि की सिंचाई के लिये प्रयुक्त जल चक्र (वाटर-व्हील)

(d) कृषि भूमि में बदली गई बंजर भूमि

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: मध्यकालीन भारत में अरघट्टा (Araghatta) कृषि भूमि की सिंचाई का एक तरीका था। प्राचीन और मध्ययुगीन भारतीय वैज्ञानिकों ने खगोल विज्ञान, गणित और चिकित्सा के क्षेत्र में असाधारण प्रगति की थी। तुर्कों के आने के बाद नई प्रौद्योगिकियों की शुरुआत हुई, जैसे– कागज़, चरखा, लोहे की रकाब व अन्य उपकरण। मुगल सम्राट बाबर ने दो भारतीय यंत्रों को सूचीबद्ध किया था जिनमें से एक था- समय की गणना करने वाला यंत्र व दूसरा सिंचाई का यंत्र था। सिंचाई यंत्रों में दो प्रकार के सिंचाई यंत्रों का वर्णन मिलता है। पहला, साकिया या अरहट या रहट के नाम से जाना जाता था तथा दूसरा, ढेंकली के नाम से जाना जाता था।

2015

1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

मध्यकालीन भारतीय राज्य	वर्तमान क्षेत्र
1. चम्पक	– मध्य भारत
2. दुर्गर	– जम्मू
3. कुलूत	– मालाबार

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) 1 और 2 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 3 **(d) केवल 3**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः दुर्गर राज्य जम्मू में स्थित था, किंतु चम्पक व कुलूत क्रमशः मध्य भारत व मालाबार में अवस्थित नहीं थे। अतः केवल द्वितीय विकल्प सही सुमेलित है।

- हिमालय की तलहटी में 9वीं शताब्दी में कुछ पहाड़ी राज्यों का उदय हुआ। आपस में एक-दूसरे के साथ युद्धों तथा मैदानों से लगातार छापों के बावजूद हाल के वर्षों तक इन्होंने अपनी पहचान बनाए रखी है। ऐसे राज्यों में चम्पक (चंबा), दुर्गर (जम्मू), कुलूत (कुल्लू), त्रिगर्ता (जालंधर) और कुमाऊँ आदि प्रमुख हैं।
- वर्तमान हिमाचल के अंतर्गत आने वाले विभिन्न क्षेत्रों में जिन राजवंशों का शासन रहा है वे ऐतिहासिक ग्रंथों में पंजाब की पहाड़ी रियासतों के नाम से जाने गए। चम्पक (चंबा) भी पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली पहाड़ी रियासतों में से एक रही है।
- कुलूत वर्तमान कुल्लू ज़िले (हिमाचल प्रदेश) का प्राचीन नाम था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने उसका वर्णन अपने यात्रा वृत्तांत में किया है।
- पहाड़ी रियासतों में एक महत्त्वपूर्ण दुर्गर अथवा जम्मू रियासतों का वर्ग रखा गया। इसके अंतर्गत झेलम व रावी नदियों के मध्य की रियासतें रखी गईं।

2. इनमें से किसने कृष्णा नदी की सहायक नदी के दक्षिणी तट पर एक नए नगर की स्थापना की और उस देवता के प्रतिनिधि के रूप में अपने इस नए राज्य पर शासन करने का दायित्व लिया जिसके बारे में माना जाता था कि कृष्णा नदी से दक्षिण की समस्त भूमि उस देवता की है?

(a) अमोघवर्ष प्रथम **(b) बल्लाल द्वितीय**

(c) हरिहर प्रथम **(d) प्रतापरुद्र द्वितीय**

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः हरिहर प्रथम (1336-56ई.) ने कृष्णा नदी की सहायक नदी तुंगभद्रा के दक्षिणी तट पर विजयनगर राज्य की स्थापना की। इसने अपनी पहली राजधानी अनेगोण्डी को बनाया। बाद में, विजयनगर को अपनी राजधानी बनाया। विजयनगर का वर्तमान नाम हम्पी है।

- तुंगभद्रा के दक्षिणी तट पर विजयनगर (विद्यानगर) शहर की स्थापना करने में हरिहर प्रथम को अपने भाई बुक्का तथा गुरु विद्यारण्य और वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार सायण से प्रेरणा मिली।
- हरिहर प्रथम (1336-1356 ई.), भवन संगम का पुत्र था।
- अमोघवर्ष, राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय का पुत्र था जिसने मान्यखेत को अपनी राजधानी बनाया। उसने स्वयं ही कन्नड़ भाषा में प्रसिद्ध ग्रंथ 'कविराज मार्ग' की रचना की।
- वीर वल्लाल द्वितीय, होयसल वंश का एक प्रतापी शासक था जिसने देवगिरी के यादवों, मदुरै के पांड्य, दक्षिण के कल्चुरी और पश्चिमी चालुक्य आदि पर जीत दर्ज़ की।
- प्रतापरुद्र द्वितीय काकतीय वंश का अंतिम शासक था। गयासुद्दीन तुगलक के सिपहसालार द्वारा वारंगल पर जीत दर्ज़ कर प्रतापरुद्र को गिरफ्तार कर दिल्ली भेजा गया जहाँ उसने आत्महत्या कर ली।

3. निम्नलिखित पर विचार कीजिये-

बाबर के भारत में आने के फलस्वरूपः

1. उपमहाद्वीप में बारूद के उपयोग की शुरुआत हुई।

2. इस क्षेत्र की स्थापत्यकला में मेहराब व गुबंद बनने की शुरुआत हुई।

3. इस क्षेत्र में तैमूरी (तिमूरिद) राजवंश स्थापित हुआ।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः बाबर के आने के बाद एक नवीन राजवंश की स्थापना हुई जिसे तैमूरी या मुगल राजवंश कहते हैं। तैमूरी राजवंश इसलिये कहा जाता है क्योंकि बाबर पितृ-पक्ष (उमर शेख मिर्ज़ा) से तैमूर लंग की पीढ़ी का था, जबकि मुगल इसलिये कहते हैं क्योंकि यह मातृ-पक्ष (कुतलुग निगार) की ओर से मंगोल चंगेज खाँ की पीढ़ी से था। अतः स्पष्ट है कि तृतीय कथन सही है।

- भारतीय उपमहाद्वीप में बारूद का प्रयोग बहमनी व विजयनगर साम्राज्य के बीच हुए युद्धों में किया गया। बाबर के आने के बाद बारूद का व्यापक प्रचलन प्रारंभ हुआ।
- स्थापत्य कला में मेहराब एवं गुम्बद का प्रयोग बाबर से पहले दिल्ली सल्तनत के काल में ही प्रारंभ हो गया था।
- बाबर ने जिस नवीन राजवंश की नींव डाली, वह तुर्की नस्ल का 'चगताई वंश' था।

2014

1. मध्यकालीन भारत में 'महत्तर' व 'पट्टकिल' पदनाम किनके लिये प्रयुक्त होते थे?

(a) सैन्य अधिकारी

(b) ग्राम मुखिया

(c) वैदिक कर्मकाण्ड के विशेषज्ञ

(d) शिल्पी श्रेणियों के प्रमुख

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः पूर्व मध्यकाल एवं मध्यकाल में 'ग्राम' प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी। इसका प्रमुख महत्तर कहलाता था। दक्षिण भारत में इसे पट्टकिल कहा जाता था।

- प्रांतों को भुक्ति, प्रदेश या भोग कहा जाता था तथा प्रांतीय शासकों को उपरिक, गोप्ता, भोगपति कहा जाता था।
- सीमांत प्रदेशों के शासक 'गोप्ता' कहलाते थे।
- भुक्तियों का विभाजन अनेक ज़िलों में किया जाता था, जिन्हें विषय कहा जाता था। विषय का सर्वोच्च अधिकारी विषयपति होता था।

- नगर प्रशासन के प्रमुख अधिकारी को पुरपाल (नगर रक्षक) कहा जाता था। नगर परिषद के प्रमुख को नगरपति कहा जाता था।
- ग्राम एवं विषय के मध्य एक गाँवों के समूहों की इकाई होने की भी जानकारी मिलती है। इसे 'पेठ' कहा जाता था।

2013

1. निम्नलिखित भक्ति संतों पर विचार कीजिये-

1. दादू दयाल 2. गुरुनानक

3. त्यागराज

इनमें से कौन उस समय उपदेश देता था/देते थे, जब लोदी वंश का पतन हुआ तथा बाबर सत्तारूढ़ हुआ?

(a) 1 और 3 (b) केवल 2

(c) 2 और 3 (d) 1 और 2

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः

- 1526 ई. में बाबर ने पानीपत के मैदान में लोदी शासक इब्राहिम लोदी को परास्त कर मुगल वंश की नींव डाली। गुरुनानक का जीवनकाल 1469 ई.-1539 ई. तक था। नानक 'एक ईश्वर' (एकेश्वरवाद) में विश्वास करते थे तथा निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर बल देते थे। ईश्वर की एकता के आधार पर ही उन्होंने हिन्दू और मुसलमान दोनों को नज़दीक लाने का प्रयास किया। वे अवतारवाद में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए भक्ति द्वारा ईश्वर की प्राप्ति पर बल दिया। उन्होंने धार्मिक कर्मकांड व आडम्बरों की निंदा की।
- दादू दयाल जी का जीवनकाल 1544-1603 ई. तक था। इन्होंने भी ईश्वर की एकता, गुरु की महिमा तथा हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल दिया। चूँकि, लोदी वंश का पतन 1526 ई. में हुआ था, अतः लोदी वंश के पतन के समय दादू दयाल उपदेश नहीं देते थे।
- त्यागराज का समय भी लोदी वंश के पतन के बाद का है (1767-1847 ई.)। ये भक्ति मार्गी कवि तथा कर्नाटक संगीत के महान संगीतज्ञ थे।

आधुनिक भारत

गांधीजी के आगमन के पूर्व राष्ट्रीय आंदोलन

2024

1. कॉर्नवालिस द्वारा राजस्व संग्रहण के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः

1. राजस्व संग्रहण के रैय्यतवाड़ी बंदोबस्त के अधीन, किसानों को फसल खराब होने या प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति में राजस्व भुगतान से छूट दी गई थी।

2. बंगाल स्थायी बंदोबस्त के अधीन, यदि ज़मींदार नियत तिथि पर या उससे पहले राज्य को राजस्व का भुगतान करने में विफल रहता, तो उसे उसकी ज़मींदारी से हटा दिया जाता।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

नोटः संघ लोक सेवा आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

2019

1. स्वदेशी आंदोलन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. इसने देशी शिल्पकारों के कौशल तथा उद्योगों को पुनर्जीवित करने में योगदान किया।

2. स्वदेशी आंदोलन के एक अवयव के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् की स्थापना हुई थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः बंगाल विभाजन की प्रतिक्रियास्वरूप आरंभ हुए स्वदेशी आंदोलन में विदेशी वस्तुओं व वस्त्रों का बहिष्कार करने के साथ-साथ विदेशी स्कूलों, अदालतों, उपाधियों व सरकारी नौकरियों का भी बहिष्कार किया गया। इसके अतिरिक्त इसके अंतर्गत एक अवयव के रूप में वर्ष 1906 में 'राष्ट्रीय शिक्षा परिषद्' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य साहित्यिक, वैज्ञानिक व तकनीकी क्षेत्र में स्वदेशी नियंत्रण के तहत राष्ट्रीय शिक्षा को बल प्रदान करना था। साथ ही इसके द्वारा देशी शिल्पकारों के कौशल तथा उद्योगों (हथकरघा, रेशम व वस्त्र, लौह-इस्पात, चमड़ा आदि उद्योग) को भी पुनर्जीवित करने का प्रयास किया गया। अतः कथन 1 व 2 दोनों सही हैं।

2016

1. 'स्वदेशी' और 'बहिष्कार' पहली बार किस घटना के दौरान संघर्ष की विधि के रूप में अपनाए गए थे?

(a) बंगाल विभाजन के विरुद्ध आंदोलन

(b) होमरूल आंदोलन

(c) असहयोग आंदोलन

(d) साइमन कमीशन की भारत यात्रा

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः सन् 1905 में बंगाल-विभाजन की घोषणा की गई, उस समय भारत का गवर्नर जनरल लॉर्ड कर्जन था। विभाजन का तर्क था कि तत्कालीन बंगाल, जिसमें बिहार और उड़ीसा भी शामिल थे, काफी विस्तृत है, अतः इसका प्रशासन एक लेफ्टिनेंट गवर्नर द्वारा बेहतर तरीके

से नहीं चलाया जा सकता। किंतु वास्तविक कारण प्रशासनिक नहीं अपितु राजनीतिक था। अतः कर्जन के 'बंगाल विभाजन' के विरोध में स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन का सूत्रपात हुआ।

बंगाल को लॉर्ड कर्जन द्वारा दो भागों–पूर्वी बंगाल एवं पश्चिम बंगाल में बाँट दिया गया। विभाजन के पीछे का मुख्य कारण यह था कि उस समय बंगाल भारतीय राष्ट्रीय चेतना का केंद्रबिंदु था तथा बंगाल के लोगों में अत्यधिक राजनीतिक चेतना जाग्रत थी, जिसे कुचलने के लिये कर्जन ने बंगाल को बाँटना चाहा और उसने बांग्ला भाषी हिंदुओं को दोनों भागों में अल्पसंख्यक बनाना चाहा। अतः बंगाल विभाजन के विरुद्ध सभा, सम्मेलनों, प्रदर्शनों के सीमित प्रभाव को देखते हुए जनता की वृहद् भागीदारी हेतु 'स्वदेशी' व 'बहिष्कार' जैसे सकारात्मक उपाय सर्वप्रथम अपनाए गए।

2015

1. निम्नलिखित में से किस आंदोलन के कारण भारतीय कॉन्ग्रेस का विभाजन हुआ, जिसके परिणामस्वरूप 'नरम दल' और 'गरम दल' का उद्भव हुआ?

(a) स्वदेशी आंदोलन

(b) भारत छोड़ो आंदोलन

(c) असहयोग आंदोलन

(d) सविनय अवज्ञा आंदोलन *सही उत्तरः* (a)

व्याख्या: बंगाल विभाजन के विरोध में प्रारंभ किये गए स्वदेशी आंदोलन के मध्य उत्पन्न परिस्थितियों की वजह से ही कॉन्ग्रेस के अंदर नरम दल व गरम दल के मध्य विरोध और तीव्र हो गया जिसके फलस्वरूप 1907 के सूरत अधिवेशन में कॉन्ग्रेस दो भागों में विभाजित हो गई। **अतः सही उत्तर (a) है।** भारत छोड़ो आंदोलन, असहयोग आंदोलन व सविनय अवज्ञा आंदोलन से नरम दल व गरम दल रूपी दलीय विभाजन का कोई संबंध नहीं था।

- विवाद का एक मुद्दा 1906 के कॉन्ग्रेस अधिवेशन में गरमपंथियों द्वारा पारित कराए गए 4 प्रस्ताव थे। ये प्रस्ताव स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा व स्वशासन से संबंधित थे।
- विवाद का एक अन्य मुद्दा यह भी था कि गरमपंथी आंदोलनकारी स्वदेशी व बहिष्कार आंदोलन को बंगाल तक ही सीमित न रखकर उसे देश के अन्य हिस्सों तक भी पहुँचाना चाहते थे। साथ ही केवल विदेशी माल के बहिष्कार से वे संतुष्ट नहीं थे बल्कि चाहते थे कि ब्रिटिश सरकार को किसी तरह का सहयोग न दिया जाए।
- सूरत अधिवेशन में कॉन्ग्रेस के विभाजन की एक वज़ह यह भी थी कि उग्रवादी सूरत अधिवेशन का अध्यक्ष पहले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को और बाद में लाला लाजपत राय को बनाना चाहते थे परंतु उदारवादियों ने रासबिहारी घोष को अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया।
- 1916 में कॉन्ग्रेस के 'लखनऊ अधिवेशन' में पुनः दोनों धड़ों का आपस में विलय हो गया।

2014

1. वर्ष 1905 में लॉर्ड कर्ज़न द्वारा किया गया बंगाल का विभाजन कब तक बना रहा?

(a) प्रथम विश्व युद्ध तक, जिसमें अंग्रेज़ों को भारतीय सैनिकों की आवश्यकता पड़ी और विभाजन समाप्त किया गया।

(b) सम्राट जॉर्ज पंचम द्वारा दिल्ली में वर्ष 1911 के शाही दरबार में कर्ज़न के अधिनियम को निराकृत किये जाने तक।

(c) महात्मा गांधी द्वारा अपना सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने तक।

(d) भारत के वर्ष 1947 में हुए विभाजन तक, जब पूर्वी बंगाल, पूर्वी पाकिस्तान बन गया। *सही उत्तरः* (b)

व्याख्या: बंगाल विभाजन के निर्णय की घोषणा 19 जुलाई, 1905 को भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड कर्जन द्वारा की गई थी। विभाजन 16 अक्तूबर, 1905 से प्रभावी हुआ, किंतु बहिष्कार एवं स्वदेशी आंदोलन ने विभाजन के विरुद्ध विशाल जनमत इकट्ठा कर लिया, जिसके फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार द्वारा विवश होकर 1911 में 'बंगाल विभाजन' को रद्द करने की घोषणा की गई। **अतः विकल्प (b) सही है।**

- बंगाल में प्रबल राजनीतिक जागृति को दबाने के लिये कर्जन ने बंगाल का विभाजन कर उसे क्रमशः हिंदू और मुस्लिम बहुलता वाले दो भागों में बाँटने और उन्हें आपस में लड़ाने की नीति अपनाई।
- इसी के विरोध में अगस्त 1905 में कलकत्ता के टाउनहॉल में स्वदेशी आंदोलन की घोषणा की गई।
- दिसंबर 1911 में ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम का दिल्ली आगमन हुआ। अगले दिन दिल्ली में एक राजदरबार का आयोजन हुआ।
- दिल्ली राजदरबार में वायसराय हार्डिंग II ने सम्राट की ओर से घोषणा की कि बंगाल विभाजन रद्द किया जाएगा और भारत की राजधानी कलकत्ता से हटाकर दिल्ली बनाई जाएगी।

2. महारानी विक्टोरिया की उद्घोषणा (1858) का उद्देश्य क्या था?

1. भारतीय राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने के किसी भी विचार का परित्याग करना।

2. भारतीय प्रशासन को ब्रिटिश क्राउन के अंतर्गत रखना।

3. भारत के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापार का नियमन करना।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (a)

व्याख्या: 1857 ई. की क्रांति के तात्कालिक व दूरगामी रूप में कई महत्त्वपूर्ण परिणाम हुए। इसका एक महत्त्वपूर्ण परिणाम था– महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र।

इसकी महत्त्वपूर्ण बातें निम्न थीं:

- भारतीय शासन की बागडोर कंपनी के हाथों से निकलकर क्राउन के हाथों में चली गई। गवर्नर जनरल को अब वायसराय कहा जाने लगा।
- इसमें स्पष्ट किया गया कि भविष्य में कोई भी राज्य अंग्रेज़ी राज्य में नहीं मिलाया जाएगा। भारतीय नरेशों को गोद लेने का अधिकार वापस कर दिया गया।
- सरकार अब भारतीयों के धार्मिक, सामाजिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगी।
- भारतीय सैनिकों की संरचना व अनुपात में बदलाव भी हुआ।

3. गदर क्या था?

(a) भारतीयों का एक क्रांतिकारी संघ, जिसका प्रधान कार्यालय सैन फ्रांसिस्को में था

(b) एक राष्ट्रवादी संगठन, जो सिंगापुर से संचालित होता था

(c) एक उग्रवादी संगठन, जिसका प्रधान कार्यालय बर्लिन में था

(d) भारत की स्वतंत्रता के लिये एक कम्युनिस्ट आंदोलन, जिसका प्रधान कार्यालय ताशकंद में था

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: 19वीं शताब्दी के अंत तक बहुत से भारतीय क्रांतिकारी अमेरिका तथा कनाडा में जाकर बस गए। 1913 में अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को नगर में गदर पार्टी का गठन किया गया। इसके संस्थापक लाला हरदयाल थे जबकि इस पार्टी के अध्यक्ष सोहन सिंह भाखना थे।

- 'गदर पार्टी' पराधीन भारत को अंग्रेज़ों से स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से बना एक दल था। गदर शब्द का अर्थ है- 'विद्रोह'। इसका मुख्य उद्देश्य भारत में क्रांति लाना था जिसके लिये अंग्रेज़ों के नियंत्रण से भारत को स्वतंत्र कराना आवश्यक था।
- गदर पार्टी ने एक साप्ताहिक पत्रिका 'गदर' का प्रकाशन भी किया। इस पत्र का उद्देश्य भारतीय सेना में, विशेषकर सिखों में विद्रोह की भावना पैदा कर उन्हें भावी क्रांति के लिये तैयार करना था।
- इस दल का प्रभाव उस समय समाप्त हो गया जब अमेरिका ब्रिटेन की तरफ से प्रथम विश्व युद्ध में सम्मिलित हुआ और इस दल को गैर कानूनी घोषित किया गया।

2013

1. इल्बर्ट बिल विवाद किससे संबंधित था?

(a) भारतीयों द्वारा हथियार लेकर चलने पर कुछ प्रतिबंधों को लागू किया जाना

(b) भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों व पत्रिकाओं पर प्रतिबंध लागू किया जाना

(c) यूरोप के लोगों के मामलों की सुनवाई करने के लिये भारतीय न्यायाधीशों पर लगाई गई अयोग्यताओं का हटाया जाना

(d) आयातित सूती कपड़े पर लगाए गए शुल्क का हटाया जाना

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: यूरोप के लोगों के मामलों की सुनवाई करने के लिये भारतीय न्यायाधीशों पर लगाई गई अयोग्यताओं का हटाया जाना इल्बर्ट बिल का प्रमुख प्रावधान था।

- लॉर्ड रिपन का भारत के वायसराय के रूप में कार्यकाल 1880-1884 ई. था।
- इसी के समय 1883 ई. में इल्बर्ट बिल विवाद हुआ। इस बिल के माध्यम से विधिक मामलों में भारतीय एवं यूरोपीय न्यायाधीशों को समान शक्तियाँ प्रदान की गईं।
- इस बिल के द्वारा अब भारतीय न्यायाधीश भी यूरोपीय लोगों से जुड़े मामलों की सुनवाई कर सकते थे।
- इस बिल का यूरोपीय लोगों ने संगठित होकर विरोध किया, जिसके कारण इस बिल को वापस लेना पड़ा।
- इसी विवाद के कारण रिपन ने कार्यकाल पूर्ण होने से पूर्व ही त्यागपत्र दे दिया।
- यह यूरोपीयों के नस्लवादी चरित्र को दर्शाता है।

2. एनी बेसेंट–

1. होमरूल आंदोलन प्रारंभ करने के लिये उत्तरदायी थी

2. थियोसॉफिकल सोसाइटी की संस्थापिका थी

3. इंडियन नेशनल कॉन्ग्रेस की एक बार अध्यक्ष थी

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही कथन/कथनों को चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: भारत की मिट्टी से गहरा लगाव रखने वाली एनी बेसेंट ने सितम्बर 1916 ई. में मद्रास में 'अखिल भारतीय होमरूल लीग' की स्थापना की। इसका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन रहते हुए संवैधानिक तरीके से स्वशासन को प्राप्त करना था। वे वर्ष 1917 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में अध्यक्ष चुनी गईं। वे कॉन्ग्रेस अध्यक्ष चुनी जाने वाली प्रथम महिला थीं।

- थियोसॉफिकल सोसाइटी की स्थापना मूलत: मैडम ब्लावत्सकी एवं कर्नल ऑल्काट ने न्यूयॉर्क में की थी। एनी बेसेंट इसकी दूसरी अध्यक्ष थीं।
- मॉण्टेग्यू ने 1917 ई. में उत्तरदायी शासन प्रदान करने वाला एक प्रस्ताव ब्रिटिश संसद में पारित कराया। परिणामस्वरूप एनी बेसेंट ने 20 अगस्त, 1917 ई. को होमरूल लीग समाप्त करने की घोषणा की।
- होमरूल आंदोलन हेतु एनी बेसेंट ने 'कॉमनवील' नामक साप्ताहिक पत्रिका का भी प्रकाशन किया।

2012

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

दादाभाई नौरोजी की भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को सर्वाधिक प्रभावी देन थी कि

1. उन्होंने इस बात को अभिव्यक्त किया कि ब्रिटेन, भारत का आर्थिक शोषण कर रहा है

2. उन्होंने प्राचीन भारतीय ग्रंथों की व्याख्या की और भारतीयों में आत्मविश्वास जगाया

3. उन्होंने सभी सामाजिक बुराइयों के निराकरण की आवश्यकता पर सर्वोपरि ज़ोर दिया

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: भारत की बढ़ती निर्धनता की कीमत पर अपने को संपन्न बनाने के लिये ब्रिटेन द्वारा भारत के संसाधनों की निरंतर लूट को दादाभाई नौरोजी ने 'धन के बहिर्गमन' की संज्ञा दी।

- नौरोजी ने 1867 में लंदन में आयोजित ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की बैठक में अपने पेपर England's Debt to India को पढ़ते हुए पहली बार 'धन के बहिर्गमन' सिद्धांत को प्रस्तुत किया।
- नौरोजी के अनुसार, भारत का धन बाहर जाता है और फिर वही धन भारत में ऋण के रूप में आ जाता है तथा इस ऋण के लिये और अधिक ब्याज चुकाना पड़ता है। अत: यह एक प्रकार का 'ऋण कुचक्र' बन जाता है।
- धन की निकासी का तात्पर्य था—भारतीय धन-संपदा का विदेशों में गमन और उसके बदले भारत को कुछ भी प्राप्त न होना। प्लासी के युद्ध के पश्चात् धन के निष्कासन की प्रक्रिया शुरू हुई।
- नौरोजी के बाद आर.सी. दत्त, एस.एन. बनर्जी, जी.वी. जोशी, एम.जी. रानाडे आदि विद्वानों ने धन निकासी के संदर्भ में ब्रिटिश सरकार की आलोचना की।

गांधीजी के आगमन के पश्चात् राष्ट्रीय आंदोलन

2025

1. असहयोग कार्यक्रम के बारे में निम्नलिखित विषयों पर विचार कीजिये:

I. न्यायालयों और विदेशी वस्त्र का बहिष्कार

II. अहिंसा का कठोर अनुपालन

III. उपाधियों और सम्मानों का, उनका सार्वजनिक उपयोग न करते हुए, प्रतिधारण

IV. विवादों के निपटारे के लिये पंचायतों की स्थापना

उपर्युक्त में से कितने असहयोग कार्यक्रम के अवयव हैं?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**

(c) केवल तीन **(d) सभी चार**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- सितंबर 1920 में कलकत्ता में कॉन्ग्रेस का एक विशेष अधिवेशन आयोजित किया गया, जिसमें असहयोग के मुद्दे पर अंतिम रूप से विचार-विमर्श कर निर्णय लिया गया। परिषद में प्रवेश के इच्छुक लोगों द्वारा कुछ विरोध के बावजूद, इसने असहयोग को अपनी सहमति दे दी। दिसंबर 1920 में नागपुर में आयोजित कॉन्ग्रेस के नियमित अधिवेशन के समय तक असहयोग आंदोलन के कार्यक्रम को बिना किसी विरोध के स्वीकार कर लिया गया था।
- इसमें सरकारी उपाधियों, सम्मान और मानद पदों का त्याग तथा सरकारी स्कूलों व कॉलेजों, विधिक न्यायालयों एवं विदेशी वस्त्र का बहिष्कार शामिल था। **अत: कथन I सही है किंतु कथन III सही नहीं है।**
- इसमें सरकारी सेवा से इस्तीफा देने और सरकारी करों का भुगतान न करने को भी शामिल किया गया।
- इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय विद्यालय और कॉलेज स्थापित करने, विवादों के निपटारे के लिये पंचायतों की स्थापना और उन्हें सुदृढ़ करने, हथकरघा और बुनाई को बढ़ावा देने, अस्पृश्यता की निंदा एवं त्याग, सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने तथा अहिंसा का कठोर अनुपालन करने का निर्णय लिया गया। **अत: कथन II और कथन IV सही हैं।**
- इस प्रकार, पहली बार कॉन्ग्रेस द्वारा खुले तौर पर जन-आंदोलन का संविधान-विरुद्ध कार्यक्रम शुरू किया गया।

अत: विकल्प (c) सही है।

2. असहयोग आंदोलन के संबंध में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

I. कॉन्ग्रेस ने घोषणा की कि सभी वैध और शांतिपूर्ण तरीकों से 'स्वराज' प्राप्त करना उसका उद्देश्य है।

II. इसे चरणों में कार्यान्वित किया जाना था, जिसमें सविनय अवज्ञा और करों का भुगतान न करना अगले चरण के लिये थे, केवल तब, जब 'स्वराज' एक वर्ष में प्राप्त न होता और सरकार दमन पर उतर आती।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(a) केवल I **(b) केवल II**

(c) I और II दोनों **(d) न तो I और न ही II**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- कॉन्ग्रेस की नीति और तरीकों में मूलभूत परिवर्तन को 1921 में संविधान के अनुच्छेद-1 में परिलक्षित हुआ; "भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का उद्देश्य भारत के लोगों द्वारा सभी वैध एवं शांतिपूर्ण तरीकों से स्वराज्य की प्राप्ति है।" दूसरे शब्दों में ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन अब केवल 'संवैधानिक' साधनों के माध्यम से प्राप्त नहीं किया जा सकता था; असंवैधानिक साधन, बशर्ते वे 'वैध और शांतिपूर्ण' हों, भी प्रयोग किये जा सकते थे। कॉन्ग्रेस के स्वरूप में यह बड़ा बदलाव उस वर्ष हुआ, जब मोंटफोर्ड सुधार (मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार) लागू किये गए (1921) और यह कॉन्ग्रेस की प्रभावी रूप से कार्य करने की क्षमता के लिये एक बुरा संकेत था। **अत: कथन I सही है।**
- गांधीजी ने प्रस्ताव दिया कि आंदोलन को चरणों में आगे बढ़ाया जाना चाहिये। इसकी शुरुआत सरकार द्वारा दी गई उपाधियों के त्याग तथा सिविल सेवाओं, सेना, पुलिस, न्यायालयों एवं विधान परिषदों,

स्कूलों और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से होनी चाहिये। फिर अगर सरकार दमन का इस्तेमाल करती है तो एक पूर्ण सविनय अवज्ञा अभियान शुरू किया जाएगा। वर्ष 1920 की गर्मियों में महात्मा गांधी और शौकत अली ने व्यापक रूप से दौरा किया तथा आंदोलन के लिये लोकप्रिय समर्थन जुटाया। **अतः कथन II सही है। अतः विकल्प (c) सही है।**

3. गांधीजी ने विख्यात वक्तव्य "राजद्रोह मेरा धर्म हो गया है" कब दिया था?

(a) चंपारण सत्याग्रह के समय
(b) दांडी में नमक कानून का सार्वजनिक रूप से उल्लंघन करने के समय
(c) लंदन में द्वितीय गोलमेज़ सम्मेलन (सेकंड राउंड टेबल कांफ्रेंस) में शामिल होने के समय
(d) भारत छोड़ो आंदोलन के प्रारंभ के समय

सही उत्तरः **(b)**

व्याख्याः

- गांधीजी ने यह कथन "राजद्रोह मेरा धर्म बन गया है" वर्ष 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान दिया था, विशेष रूप से 6 अप्रैल, 1930 को दांडी में नमक कानून तोड़ने के बाद।
- 6 अप्रैल को, एक मुट्ठी नमक उठाकर ब्रिटिश सरकार द्वारा थोपे गए नमक कानून को तोड़ने के बाद, गांधीजी द्वारा घोषणा की गईः
- "ब्रिटिश शासन ने इस महान देश का नैतिक, भौतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से विनाश कर दिया है। मैं इस शासन को एक अभिशाप मानता हूँ। मैं इस सरकारी व्यवस्था को नष्ट करने के लिये प्रयत्नशील हूँ... राजद्रोह मेरा धर्म बन गया है। हमारा संघर्ष अहिंसक है। हमें किसी की हत्या नहीं करनी, लेकिन यह हमारा धर्म है कि इस सरकार के अभिशाप को मिटा दिया जाए।"
- गांधीजी ने 78 सहयोगियों के साथ 12 मार्च, 1930 को साबरमती आश्रम से ऐतिहासिक दांडी मार्च प्रारंभ किया था, जो लगभग 375 किलोमीटर की दूरी तय करके गुजरात तट पर दांडी पहुँचा।
- इस मार्च ने व्यापक प्रसिद्धी हासिल की, जिससे गाँवों में कार्यरत अधिकारियों ने बड़े पैमाने पर त्याग-पत्र दिये और जनता ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

अतः सही विकल्प (b) है।

4. चौरी-चौरा घटना के परिणामस्वरूप बंदी बनाए गए लोगों को किसने विधिक प्रतिरक्षा (लीगल डिफेन्स) प्रदान की?

(a) सी. आर. दास
(b) मदन मोहन मालवीय और कृष्णकांत
(c) डॉ. सैफुद्दीन किचलू और ख्वाजा हसन निज़ामी
(d) एम.ए. जिन्ना

सही उत्तरः **(b)**

व्याख्याः

- चौरी-चौरा, जो संयुक्त प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के गोरखपुर ज़िले में स्थित है, वर्ष 1922 में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हुई घटना के कारण प्रसिद्ध हुआ।
- वर्ष 1923 में प्रमुख वकील और स्वतंत्रता सेनानी महामना मदन मोहन मालवीय ने इस घटना के बाद गिरफ्तार किये गए और मृत्युदंड पाने वाले लोगों को कानूनी सहायता प्रदान करने के लिये आगे आए।
- उन्होंने न्यायालय में लगातार चार दिन तक बहस की और पूरे जोश से आरोपितों का पक्ष रखा। उनकी कोशिशों के कारण न्यायाधीश ने मृत्युदंड की सज़ा की समीक्षा की और कई निर्दोष व्यक्तियों को राहत मिली।

अतः विकल्प (b) सही है।

5. निम्नलिखित में से किस एक घटना के उपरांत, गांधीजी ने, जो अस्पृश्यता का सतत् विरोध करते रहे और सभी क्षेत्रों में से उसके उन्मूलन के लिये अपील करते रहे, अपने राजनीतिक और सामाजिक कार्यक्रम में 'हरिजनों' के उत्थान को शामिल करने का निश्चय किया?

(a) पूना समझौता
(b) गांधी-इरविन समझौता (दिल्ली समझौता)
(c) भारत छोड़ो आंदोलन के समय कॉन्ग्रेस के नेताओं की गिरफ्तारी
(d) भारत सरकार अधिनियम, 1935 की प्रख्यापना (प्रॉमल्गेशन)

सही उत्तरः **(a)**

व्याख्याः

- सितंबर 1932 में मदन मोहन मालवीय और डॉ. बी.आर. अंबेडकर के बीच हुए पूना समझौते के बाद गांधीजी ने हरिजनों (अनुसूचित जातियों) के उत्थान के लिये अपना अभियान तेज़ कर दिया। इस समझौते के तहत दलित वर्गों के लिये पृथक निर्वाचन क्षेत्रों को छोड़ दिया गया, लेकिन संयुक्त निर्वाचन क्षेत्रों में आरक्षण की शुरुआत की गई, जिसे गांधीजी ने आमरण अनशन शुरू करने के बाद ही स्वीकार किया।
- अछूतों की दुर्दशा से आहत होकर गांधीजी ने उनकी सामाजिक मुक्ति को अपने राष्ट्रीय आंदोलन का मुख्य हिस्सा बना लिया। समझौते के कुछ समय बादः
  - उन्होंने अखिल भारतीय अस्पृश्यता विरोधी लीग (सितंबर 1932) की स्थापना की, जिसे बाद में हरिजन सेवक संघ के नाम से जाना गया।
  - उन्होंने साप्ताहिक पत्रिका 'हरिजन' (जनवरी 1933) का प्रकाशन शुरू किया।
  - वर्ष 1933 से 1934 तक, उन्होंने जागरूकता फैलाने, धन जुटाने और सुधारों को बढ़ावा देने के लिये 20,000 किमी. से अधिक की पूरे भारत की हरिजन यात्रा की।
  - उनके अभियान ने मंदिर प्रवेश, सामाजिक एकीकरण और जातिगत भेदभाव के उन्मूलन पर ज़ोर दिया।
- इस प्रकार, पूना पैक्ट (1932) एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था जब गांधीजी ने हरिजन उत्थान को अपने राजनीतिक और सामाजिक एजेंडे में औपचारिक रूप से शामिल किया।

अतः विकल्प (a) सही है।

2023

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

कथन-1: 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के रूप में घोषित किया गया है।

कथन-II: 1905 में, इसी दिन स्वदेशी आंदोलन शुरू किया गया था।

उपर्युक्त कथनों के बारे में, निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?

(a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है

(b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या नहीं है

(c) कथन-I सही है किंतु कथन-II गलत है

(d) कथन-I गलत है किंतु कथन-II सही है

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः (a)

- हथकरघा बुनकरों को सम्मानित करने एवं देश के सामाजिक विकास में हथकरघा उद्योग के महत्त्व के बारे में जागरूकता विकसित करने तथा हथकरघा उद्योग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से **प्रति वर्ष 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस** मनाया जाता है। **अतः कथन 1 सही है।**
- **7 अगस्त को 'स्वदेशी' आंदोलन (1905) की स्मृति में राष्ट्रीय हथकरघा दिवस को नामित किया गया था।** इसलिये राष्ट्रीय हथकरघा दिवस एवं स्वदेशी आंदोलन के बीच गहरा संबंध है। **अतः कथन 2 सही है। अतः विकल्प (a) सही है।**

2021

1. भारतीय इतिहास में 8 अगस्त, 1942 के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है?

(a) ए.आई.सी.सी. द्वारा भारत छोड़ो प्रस्ताव अंगीकार किया गया।

(b) वायसराय की एक्जेक्यूटिव काउंसिल का विस्तार अधिक संख्या में भारतीयों को सम्मिलित करने के लिये किया गया।

(c) सात प्रांतों में कॉन्ग्रेस मंत्रिमंडलों ने त्यागपत्र दिया।

(d) क्रिप्स ने प्रस्ताव रखा कि द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त होते ही संपूर्ण डोमिनियन स्टेटस वाले भारतीय संघ की स्थापना की जाएगी।

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः 8 अगस्त, 1942 को ए.आई.सी.सी. (All India Congress Committee) के बंबई अधिवेशन में गांधी जी ने भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान किया था। **अतः विकल्प (a) सही है।**

2. इनमें से कौन अंग्रेज़ी में अनूदित प्राचीन भारतीय धार्मिक गीतिकाव्य- 'सॉन्ग्स फ्रॉम प्रिज़न' से संबद्ध है?

(a) बालगंगाधर तिलक **(b) जवाहरलाल नेहरू**

(c) मोहनदास करमचंद गांधी **(d) सरोजिनी नायडू**

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः येरवडा जेल, पूना में गांधी जी ने भारतीय धार्मिक गीतिकाव्य का अनुवाद अंग्रेज़ी में 'सॉन्ग्स फ्रॉम प्रिज़न' नाम से किया था। **अतः विकल्प (c) सही है।**

3. आंध्र प्रदेश में मदनपल्ली के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(a) पिंगली वेंकैया ने यहाँ भारतीय राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे का डिज़ाइन किया।

(b) पट्टाभि सीतारमैया ने यहाँ से आंध्र क्षेत्र में भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व किया।

(c) रवींद्रनाथ टैगोर ने यहाँ राष्ट्रगान का बांग्ला से अंग्रेज़ी में अनुवाद किया।

(d) मैडम ब्लावात्स्की तथा कर्नल ऑलकॉट ने सबसे पहले यहाँ थियोसोफ़िकल सोसाइटी का मुख्यालय स्थापित किया।

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने 1919 में 'जन गण मन' को बांग्ला से अंग्रेज़ी में अनुवाद मदनपल्ली (चिक्तर, आंध्र प्रदेश) के बेसेंट थियोसोफिकल कॉलेज (एनी बेसेंट द्वारा स्थापित) में किया था। इसकी धुन भी उसी समय उन्होंने बनाई। उस समय कॉलेज के प्रधानाध्यापक शिक्षाविद् जेम्स हेनरी कजिन की पत्नी मार्गरेट कजिन ने 'जन गण मन' को संगीतबद्ध किया। **अतः विकल्प (c) सही है।**

2020

1. गांधी-इरविन समझौते में निम्नलिखित में से क्या सम्मिलित था/थे?

1. राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस में भाग लेने के लिये कॉन्ग्रेस को आमंत्रित करना

2. असहयोग आंदोलन के संबंध में जारी किये गए अध्यादेशों को वापस लेना

3. पुलिस की ज़्यादतियों की जाँच करने हेतु गांधीजी के सुझाव की स्वीकृति

4. केवल उन्हीं कैदियों की रिहाई जिन पर हिंसा का अभियोग नहीं था

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 1, 2 और 4**

(c) केवल 3 **(d) केवल 2, 3 और 4**

सही उत्तरः (*)

व्याख्या: गांधी-इरविन समझौता 5 मार्च, 1931 को हुआ था। उस समय सविनय अवज्ञा आंदोलन चल रहा था। इस समझौते में निम्न बातें सम्मिलित थीं-

- गोलमेज सम्मलेन में भाग लेने के लिये कॉन्ग्रेस को आमंत्रित करना;
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के संबंध में जारी किये गए अध्यादेशों को वापस लेना;
- केवल उन्हीं कैदियों की रिहाई की जानी थी जिन पर हिंसा का अभियोग नहीं था। पुलिस की ज़्यादतियों की जाँच करने हेतु जनता की जाँच समिति बनाने की गांधीजी ने मांग की थी, और इसका जिक्र समझौते में भी किया गया था परंतु वायसराय लॉर्ड इरविन ने गांधी की इस मांग को अस्वीकार कर दिया था।

नोट: इस प्रश्न में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा अंग्रेज़ी में Civil Disobedience शब्द का प्रयोग किया गया था जबकि इसका हिंदी अनुवाद असहयोग आंदोलन किया गया था जो कि त्रुटिपूर्ण है। ध्यातव्य है कि संघ लोक सेवा आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

2019

1. भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. महात्मा गांधी 'गिरमिटिया (इंडेंचर्ड लेबर)' प्रणाली के उन्मूलन में सहायक थे।

2. लॉर्ड चेम्सफोर्ड की 'वॉर कॉन्फरेन्स' में महात्मा गांधी ने विश्व युद्ध के लिये भारतीयों की भर्ती से संबंधित प्रस्ताव का समर्थन नहीं किया था।

3. भारत के लोगों द्वारा नमक कानून तोड़े जाने के परिणामस्वरूप, औपनिवेशिक शासकों द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस को अवैध घोषित कर दिया गया था।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 1 और 3**
(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत दांडी मार्च के दौरान 6 अप्रैल, 1930 को नमक कानून तोड़े जाने के परिणामस्वरूप ब्रिटिश शासकों द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस को अवैध घोषित कर दिया गया था, जबकि भारत को स्वायत्तता की शर्त पर गांधीजी ने प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश सेना में भारतीयों की भर्ती के प्रस्ताव का समर्थन किया था।

- महात्मा गांधी 'गिरमिटिया (इंडेंचर्ड लेबर)' प्रणाली के उन्मूलन में मददगार थे। 1894 में गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में 'नटाल इंडियन कॉन्ग्रेस' की स्थापना की और रंगभेद की नीति के विरुद्ध आंदोलन भी शुरू किया। उनके प्रयासों व आंदोलन के कारण दक्षिण अफ्रीकी सरकार द्वारा सन् 1914 में अधिकांश रंगभेद कानूनों को रद्द कर दिया गया। **अत: विकल्प (b) सही उत्तर है।**

2017

1. भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के संबंध में, निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिये-

1. रॉयल इंडियन नेवी में ग़दर

2. भारत छोड़ो आंदोलन का प्रारंभ

3. द्वितीय गोल मेज़ सम्मेलन

उपर्युक्त घटनाओं का सही कालानुक्रम क्या है?

(a) 1 – 2 – 3 **(b) 2 – 1 – 3**
(c) 3 – 2 – 1 **(d) 3 – 1 – 2**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- रॉयल इंडियन नेवी में गदर (1946)
- भारत छोड़ो आंदोलन का प्रारंभ (1942)
- द्वितीय गोलमेज़ सम्मेलन (1931)

अत: विकल्प (c) सही है।

2. 1927 की बटलर कमेटी का उद्देश्य था-

(a) केंद्रीय एवं प्रांतीय सरकारों की अधिकारिता निश्चित करना।
(b) भारत के सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट की शक्तियाँ निश्चित करना।
(c) राष्ट्रवादी प्रेस पर सेंसर-व्यवस्था अधिरोपित करना।
(d) भारत सरकार एवं देशी रियासतों के बीच संबंध सुधारना।

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: भारतीय राज्य समिति ने सर हरकोर्ट बटलर की अध्यक्षता में 1927 में एक समिति गठित की जिसे बटलर समिति भी कहा जाता है। इस समिति का गठन भारत सरकार और देशी राजाओं के बीच के संबंधों की जाँच और स्पष्टीकरण के लिये किया गया था। इसके गठन का उद्देश्य भारत सरकार और भारतीय राजाओं के मध्य संबंधों की जाँच करना और उनके मध्य के इन संबंधों को बेहतर बनाने के लिये सुझाव देना था ताकि ब्रिटिश भारत और देशी रियासतों के मध्य संतोषजनक संबंधों की स्थापना की जा सके।

2015

1. रौलेट सत्याग्रह के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

1. रौलेट अधिनियम 'सेडिशन कमिटी' की सिफारिश पर आधारित था।

2. रौलेट सत्याग्रह में गांधीजी ने होमरूल लीग का उपयोग करने का प्रयास किया।

3. साइमन कमीशन के आगमन के विरुद्ध हुए प्रदर्शन रौलेट सत्याग्रह के साथ-साथ हुए।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये–

(a) केवल 1

(b) 1 और 2

(c) 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः उपर्युक्त कथनों में से 1 और 2 सही हैं, किंतु कथन 3 गलत है जिसकी विस्तृत चर्चा निम्नलिखित है:

- भारत में क्रांतिकारियों के प्रभाव का अध्ययन तथा उसे समाप्त करने के लिये 1917 में सर सिडनी रौलेट की अध्यक्षता में सेडिशन कमिटी गठित की गई। इसी की सिफारिश पर रौलेट अधिनियम पारित हुआ।
- इसके तहत मजिस्ट्रेट को किसी भी संदेहास्पद व्यक्ति को जेल में डालने का अधिकार था। उस व्यक्ति को अपील करने की भी अनुमति नहीं थी।
- गांधीजी ने इसके विरोध में सत्याग्रह सभा की स्थापना की तथा रौलेट एक्ट के विरुद्ध सारे देश में हड़तालों का आयोजन किया। इसके लिये गांधीजी ने होमरूल लीग के नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओं के उपयोग का प्रयास किया।
- साइमन कमीशन 1927 ई. में गठित किया गया। इसके सभी सदस्य अंग्रेज़ होने के कारण 1927-28 में इसका व्यापक विरोध हुआ, जबकि रौलेट सत्याग्रह की घटना 1919 की है। अतः इन दोनों के विरोध प्रदर्शन साथ-साथ नहीं हुए।

2. इनमें से किसने अप्रैल 1930 में नमक कानून तोड़ने के लिये तंजौर तट पर एक अभियान संगठित किया था?

(a) वी.ओ. चिदम्बरम पिल्लै

(b) सी. राजगोपालाचारी

(c) के. कामराज

(d) एनी बेसेंट

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः तंजौर (तंजावुर), तमिलनाडु राज्य में है जहाँ सी. राजगोपालाचारी ने त्रिचिनापल्ली से वेदारण्यम तक की यात्रा की तथा नमक कानून तोड़ने के लिये तंजौर के तट पर अभियान संगठित किया।

- सविनय अवज्ञा आंदोलन गांधीजी की साबरमती से दाण्डी तक की यात्रा से प्रारंभ हुआ। 6 अप्रैल, 1930 ई. को गांधीजी ने दाण्डी में नमक बनाकर कानून तोड़ा।
- पश्चिमोत्तर प्रांत (पेशावर) में इसका नेतृत्व खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने किया। यह 'लाल कुर्ती' आंदोलन नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- बम्बई में इसका केंद्र-बिन्दु धरासना था, जहाँ सरोजिनी नायडू एक महत्त्वपूर्ण नेत्री थीं।
- देश के अन्य हिस्सों में भी यह आंदोलन चलता रहा। बंगाल में मिदनापुर, ओडिशा में बालासोर, पुरी, कटक आदि तथा असम में सिलहट इस आंदोलन के केंद्र रहे।

2014

1. स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का 1929 का अधिवेशन इसलिये महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस अधिवेशन में:

(a) कॉन्ग्रेस के उद्देश्य के तौर पर स्वशासन प्राप्ति की घोषणा की गई।

(b) कॉन्ग्रेस के लक्ष्य के तौर पर पूर्ण स्वराज प्राप्ति को स्वीकृत किया गया।

(c) असहयोग आंदोलन का आरंभ हुआ।

(d) लंदन में गोलमेज सम्मेलन में भागीदारी करने का निर्णय लिया गया।

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः दिसंबर 1929 में कॉन्ग्रेस का अधिवेशन लाहौर (रावी नदी के किनारे) में हुआ। इस अधिवेशन के अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू थे।

इस अधिवेशन में स्पष्ट कहा गया कि नेहरू रिपोर्ट को लागू करने की अवधि समाप्त हो गई है। अतः अब पूर्ण स्वाधीनता की प्राप्ति ही एकमात्र ध्येय है।

2013

1. साइमन कमीशन के आने के विरुद्ध भारतीय जन-आंदोलन क्यों हुआ?

(a) भारतीय 1919 के अधिनियम की कार्यवाही का पुनरीक्षण कभी नहीं चाहते थे

(b) साइमन कमीशन ने प्रांतों में द्विशासन की समाप्ति की संस्तुति की थी

(c) साइमन कमीशन में कोई भी भारतीय सदस्य नहीं था

(d) साइमन कमीशन ने देश के विभाजन का सुझाव दिया था

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः 1927 में गठित 7 सदस्यीय साइमन कमीशन का उद्देश्य भारत के राजनैतिक भविष्य का फैसला करना था, जिसमें एक भी भारतीय सदस्य नहीं था। अतः भारतीयों को यह बात गलत लगी कि हमारे भविष्य के फैसले में हमारी कोई भूमिका ही नहीं है। इसलिये साइमन कमीशन के विरुद्ध जन-आंदोलन हुआ। शेष विकल्पों (a), (b) और (d) में भारतीय जन-आंदोलन के साइमन कमीशन के विरुद्ध होने का कोई कारण नहीं है। अतः विकल्प (c) बिल्कुल सही उत्तर होगा।

- साइमन की अध्यक्षता में 7 सदस्यीय समिति नियुक्त की गई। सभी सदस्य यूरोपीय थे। भारत में इसके विरोध का यही सबसे बड़ा कारण था।
- साइमन कमीशन को भारत के राजनैतिक भविष्य का निर्धारण करना था, इसमें निम्न सिफारिशें थीं:
  - ◆ प्रांतों में द्वैध व्यवस्था को समाप्त कर उत्तरदायी शासन स्थापित हो।
  - ◆ संघीय संविधान का निर्माण हो।

- केंद्र में अभी कोई उत्तरदायित्व भारतीयों को प्रदान न किया जाए।
- बर्मा को भारत से विलग किया जाए तथा उड़ीसा एवं सिंध को अलग प्रदेश का दर्जा दिया जाए।

2. भारत छोड़ो आंदोलन किसकी प्रतिक्रिया में प्रारंभ किया गया?

(a) कैबिनेट मिशन योजना

(b) क्रिप्स प्रस्ताव

(c) साइमन कमीशन रिपोर्ट

(d) वेवेल योजना

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: 'भारत छोड़ो आंदोलन' की शुरुआत 8 अगस्त, 1942 को हुई थी। प्रस्तुत विकल्पों में कैबिनेट मिशन योजना 1946 की है, साइमन कमीशन रिपोर्ट 1930 की है तथा वेवेल योजना 1945 में आई और क्रिप्स मिशन मार्च 1942 में भारत आया। इसलिये उपरोक्त विकल्पों में भारत छोड़ो आंदोलन की संगति क्रिप्स मिशन से ही बैठाई जा सकती है।

- क्रिप्स प्रस्ताव में कोई ठोस योजना न होने के कारण कॉन्ग्रेस ने इसका विरोध किया।
- इसके अलावा कॉन्ग्रेस कार्य समिति को संविधान निर्मात्री सभा के गठन पर भी आपत्ति थी क्योंकि इसमें देशी रियासतों के प्रतिनिधियों को जनता द्वारा निर्वाचित न करके रियासतों के शासकों द्वारा नामित किया जाना था।
- कुछ प्रांतों के संघ में शामिल न होने से संबंधित प्रावधान भारतीय एकता एवं अखण्डता के लिये गम्भीर खतरा थे। अत: उनका भी विरोध किया गया।
- केंद्र सरकार के संबंध में प्रतिरक्षा विभाग पर ब्रिटिश सरकार का ही नियंत्रण बना रहना था।
- अत: एक तो क्रिप्स मिशन द्वारा छले जाने तथा दूसरे जापान के तेज़ी से बढ़ते हुए प्रभुत्व के कारण वर्धा बैठक में 'भारत छोड़ो आंदोलन' प्रारंभ करने का संकल्प लिया गया।

2012

1. रौलेट एक्ट का लक्ष्य था-

(a) युद्ध प्रयासों को अनिवार्य आर्थिक समर्थन

(b) बिना मुकदमा चलाए बंदी बनाना और मुकदमों की सुनवाई संक्षिप्त प्रक्रिया द्वारा

(c) खिलाफत आंदोलन का दमन

(d) प्रेस स्वातंत्र्य पर प्रतिबंध लगाना

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: ब्रिटिश सरकार ने क्रांतिकारी और राष्ट्रवादी भावनाओं को कुचलने के लिये सिडनी रौलेट की अध्यक्षता में 1919 में एक रौलेट एक्ट पारित किया। इस एक्ट के तहत किसी भी व्यक्ति को संदेह के आधार पर गिरफ्तार करना, गुप्त रूप से मुकदमा चलाना आदि प्रावधान शामिल थे।

- इस एक्ट को बिना वकील, बिना अपील तथा बिना दलील का कानून भी कहा गया। भारतीय जनता ने 'काला कानून' कहकर इसका विरोध किया।
- किंतु जब इस संवैधानिक प्रतिरोध का कोई असर नहीं हुआ तब गांधीजी ने सत्याग्रह का सुझाव दिया। फरवरी 1919 में सत्याग्रह सभा का गठन किया गया तथा देशव्यापी हड़ताल एवं प्रार्थना सभाएँ आयोजित की गईं।
- रौलेट एक्ट के विरोध में पंजाब में आंदोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया। वहाँ पर सरकार ने डॉ. सैफुद्दीन किचलू और सत्यपाल को गिरफ्तार कर लिया तथा अमृतसर से निर्वासित कर दिया।
- इसी के विरोध में 13 अप्रैल, 1919 को जलियाँवाला बाग में लोग एकत्र हुए जिन पर जनरल डायर ने गोलियाँ चलवा दीं।

2. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929) इतिहास में इसलिये बहुत प्रसिद्ध है, क्योंकि

1. कॉन्ग्रेस ने पूर्ण स्वराज की मांग का एक संकल्प पारित किया

2. इस अधिवेशन में उग्रवादियों एवं उदारवादियों के बीच झगड़े को सुलझा लिया गया

3. इस अधिवेशन में दो राष्ट्रों की मांग के सिद्धांत को अस्वीकार करते हुए एक संकल्प पारित किया गया

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) 2 और 3**

(c) 1 और 3 **(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: केवल कथन 1 सही है। द्वितीय कथन गलत है, क्योंकि उग्रवादी व उदारवादियों का झगड़ा 1916 के लखनऊ अधिवेशन में ही सुलझा लिया गया था और 1929 तक द्वि-राष्ट्र का सिद्धांत सामने नहीं आया था। इसलिये 1929 के लाहौर अधिवेशन में इस पर कॉन्ग्रेस द्वारा संकल्प प्रस्ताव पारित कर इसे अस्वीकार करने का कथन पूर्णतया असत्य है। अत: सही उत्तर **(a)** है।

- कॉन्ग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में ब्रिटिश सरकार को दी गई एक वर्ष की समय सीमा (डोमिनियन स्टेटस के संदर्भ में) समाप्त हो जाने के बाद दिसंबर 1929 में कॉन्ग्रेस के लाहौर अधिवेशन का आयोजन हुआ। इस ऐतिहासिक अधिवेशन की अध्यक्षता पं. जवाहरलाल नेहरू ने की। इसके तहत निम्न ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किये गए:
  1. नेहरू समिति की रिपोर्ट को निरस्त घोषित कर दिया गया।
  2. इस अधिवेशन में पारित पूर्ण स्वराज के प्रस्ताव के अनुसार कॉन्ग्रेस के संविधान में 'स्वराज' शब्द का अर्थ 'पूर्ण स्वतंत्रता' या 'पूर्ण स्वराज' होगा। इसे ही अब राष्ट्रीय आंदोलन का लक्ष्य निर्धारित किया गया।
  3. रावी नदी के तट पर जवाहरलाल नेहरू द्वारा भारतीय स्वतंत्रता का प्रतीक तिरंगा झण्डा फहराया गया।

3. 1939 में कॉन्ग्रेस मंत्रिमंडल ने सात प्रांतों में त्यागपत्र दे दिया था, क्योंकि

(a) कॉन्ग्रेस अन्य चार प्रांतों में मंत्रिमंडल नहीं बना पाई थी

(b) कॉन्ग्रेस में 'वामपक्ष' के उदय से मंत्रिमण्डल का कार्य कर सकना असंभव हो गया था

(c) उनके प्रांतों में बहुत अधिक साम्प्रदायिक अशांति थी

(d) उपर्युक्त कथनों (a), (b) और (c) में से कोई भी सही नहीं है

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: उपर्युक्त में से कोई भी कथन सही नहीं है क्योंकि कॉन्ग्रेस मंत्रिमंडलों ने 1939 में इसलिये इस्तीफा दिया क्योंकि उनकी सहमति के बिना ही भारत की द्वितीय विश्व युद्ध में भागीदारी तय कर दी गई थी।

- वर्ष 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हो गया था, जिसमें एक ओर मित्र राष्ट्र थे वहीं दूसरी ओर सर्वसत्तावादी ताकतें थीं। कॉन्ग्रेस यह चाहती थी कि ब्रिटेन यह घोषणा करे कि युद्ध का एकमात्र उद्देश्य साम्राज्यवाद का उन्मूलन होगा और भारत को स्वतंत्र राष्ट्र का दर्जा दिया जाएगा, परंतु वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो कोई स्पष्ट जवाब नहीं दे रहा था।
- इसके अतिरिक्त, लिनलिथगो ने बिना भारतीयों की अनुमति के यह घोषणा कर दी कि भारत भी जर्मनी के विरुद्ध ब्रिटेन के साथ युद्ध में शामिल है। अत: कॉन्ग्रेस शासित प्रदेशों के मंत्रियों ने कॉन्ग्रेस कार्यसमिति की अनुमति के बाद 28 माह पुराने मंत्रिमण्डलों से त्यागपत्र दे दिया।
- कॉन्ग्रेस मंत्रियों के त्यागपत्र के बाद मुस्लिम लीग ने दलित नेता भीमराव अंबेडकर के साथ मुक्ति दिवस मनाया।

4. 1932 में महात्मा गांधी ने मरणपर्यंत उपवास प्रधानतया इसलिये किया कि

(a) गोलमेज़ सभा भारतीय राजनीतिक आकांक्षाओं को संतुष्ट करने में असफल हुई

(b) कॉन्ग्रेस और मुस्लिम लीग में मतभिन्नता थी

(c) रैम्ज़े मैकडोनाल्ड ने सांप्रदायिक अधिनिर्णय (कम्यूनल अवार्ड) की घोषणा की।

(d) इस संदर्भ में उपर्युक्त (a), (b) तथा (c) कथनों में से कोई भी सही नहीं है।

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: रैम्जे मैकडोनाल्ड ने कम्यूनल अवार्ड की घोषणा की। इसके विरोध में गांधीजी ने आमरण अनशन (मरणपर्यन्त) किया।

- अंग्रेज़ों की 'बाँटो और राज करो' की नीति के तहत ब्रिटिश प्रधानमंत्री 'रैम्जे मैकडोनाल्ड' ने 16 अगस्त, 1932 को साम्प्रदायिक निर्णय प्रस्तुत किया।
- इसके तहत प्रत्येक अल्पसंख्यक समुदाय के लिये विधानमण्डलों में कुछ सीटें सुरक्षित कर दी गईं जिनके सदस्यों का चुनाव पृथक् निर्वाचक मंडलों द्वारा किया जाना था।
- मुसलमान, सिख और ईसाई तो पहले से ही अल्पसंख्यक माने जाते थे। अब इस नए कानून के तहत दलित वर्ग को भी अल्पसंख्यक मानकर हिंदुओं से अलग कर दिया गया।
- इस समय गांधीजी यरवदा जेल में थे। वे इसके विरोध में जेल में आमरण अनशन पर बैठ गए।
- विदित हो कि अंबेडकर दलितों के लिये पृथक् निर्वाचन का पक्ष ले रहे थे।
- मालवीय जी, राजेंद्र प्रसाद आदि के प्रयासों से गांधीजी व डॉ. अंबेडकर के मध्य 24 सितम्बर, 1932 को 'पूना समझौता' हुआ।
- पूना समझौते के तहत दलित वर्गों के पृथक् निर्वाचन समाप्त कर दिये गए तथा प्रांतीय व केंद्रीय विधानमंडलों में हरिजनों के लिये सुरक्षित सीटों की संख्या में वृद्धि कर दी गई। इस प्रकार प्रांतीय विधानमंडलों में दलितों के लिये सुरक्षित सीटों की संख्या 71 से बढ़ाकर 148 कर दी गई। वहीं, केंद्रीय विधानमंडल में सुरक्षित सीटों की संख्या में 18% की वृद्धि की गई।

2011

1. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के काल के संदर्भ में नेहरू रिपोर्ट में निम्नलिखित में से किसकी/किस-किस की अनुशंसा की गई थी?

1. भारत के लिये पूर्ण स्वतंत्रता

2. अल्पसंख्यकों हेतु आरक्षित स्थानों के लिये संयुक्त निर्वाचन क्षेत्र

3. संविधान में भारतीयों के लिये मौलिक अधिकारों का प्रावधान

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: नेहरू रिपोर्ट में भारत के लिये पूर्ण स्वतंत्रता की मांग नहीं की गई थी, अत: कथन (1) गलत है। बाकी दोनों कथन सत्य हैं। इनकी विस्तृत व्याख्या निम्न है-

- साइमन कमीशन को नियुक्त करने वाले तत्कालीन राज्य सचिव लॉर्ड बर्केनहेड का यह सोचना था कि भारतीय लोग संवैधानिक सुधार के लिये ठोस प्रस्ताव बनाने में असमर्थ हैं।

भारतीय नेताओं ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए फरवरी, मई और अगस्त 1928 में विभिन्न सर्वदलीय सम्मेलनों का आयोजन किया तथा पंडित मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति की स्थापना की गई, जिसे भारत के संविधान के सिद्धांतों का निर्धारण करना था। इसी समिति की रिपोर्ट 'नेहरू रिपोर्ट' कहलाई। उसकी निम्न सिफारिशें थीं-

- भारत को डोमिनियन (अधिराज्य) का दर्जा दिया जाए।
- भारत एक संघ होगा जिसके नियंत्रण में केंद्र में द्विसदनीय विधानमंडल होगा, मंत्रिमंडल सदन के प्रति उत्तरदायी होगा।
- वायसराय की स्थिति संवैधानिक मुखिया भर की रहेगी।

- साम्प्रदायिक आधार पर पृथक् निर्वाचन मंडल अस्वीकार कर दिया गया।
- नागरिकता को परिभाषित करने के साथ-साथ मूलाधिकारों को प्रतिपादित किया गया।

2. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में उषा मेहता की ख्याति-

(a) भारत छोड़ो आंदोलन के समय में गुप्त कॉन्ग्रेस रेडियो चलाने हेतु है

(b) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में सहभागिता हेतु है

(c) आज़ाद हिंद फौज की एक टुकड़ी का नेतृत्व करने हेतु है

(d) पंडित जवाहरलाल नेहरू की अंतरिम सरकार के गठन में सहायक भूमिका निभाने हेतु है

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः उषा मेहता ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई और स्वतंत्रता के बाद वह गांधीवादी दर्शन के अनुरूप महिलाओं के उत्थान के लिये प्रयासरत रहीं। वह भारत छोड़ो आंदोलन के समय खुफिया रेडियो चलाने के कारण पूरे देश में विख्यात हुईं।

- भारत छोड़ो आंदोलन के प्रारंभ से ही दमन के निर्णय के कारण ब्रिटिश सरकार ने सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया, परंतु द्वितीय पंक्ति के नेताओं ने भूमिगत होकर आंदोलन का नेतृत्व किया।
- जय प्रकाश नारायण हज़ारीबाग जेल से फरार हो गए तथा 1942 के आंदोलन में भूमिगत होकर इन्होंने 'आज़ाद दस्ता' का गठन किया।
- रेडियो स्टेशन का मुख्य कार्य कॉन्ग्रेस की सूचनाओं का प्रसारण करना होता था।
- कालांतर में यह रेडियो स्टेशन सरकार द्वारा ज़ब्त कर लिया गया। **अतः विकल्प (a) सही है।**

3. 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सी एक टिप्पणी सत्य नहीं है?

(a) यह आंदोलन अहिंसक था

(b) उसका नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था

(c) यह आंदोलन स्वतः प्रवर्तित था

(d) इसने सामान्य श्रमिक वर्ग को आकर्षित नहीं किया था

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः भारत छोड़ो आंदोलन स्वतःस्फूर्त था, अतः नेतृत्व कई स्तरों पर बँटा हुआ था। इसका नेतृत्व महात्मा गांधी ने पूर्णतः नहीं किया था।

- मार्च 1942 में क्रिप्स मिशन की विफलता से स्पष्ट हो गया कि सरकार भारतवासियों के साथ सम्मानजनक समझौते के लिये तैयार नहीं है। अतः कॉन्ग्रेस ने अगस्त 1942 में भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित किया, परंतु सरकार ने आंदोलन का दमन करने के लिये अगले ही दिन सभी महत्त्वपूर्ण नेताओं को गिरफ्तार कर लिया।
- अतः यह आंदोलन सापेक्षिक रूप से स्वतःस्फूर्त था तथा इसका नेतृत्व महात्मा गांधी ने नहीं किया था।
- यह आंदोलन बाकी के आंदोलनों के सापेक्ष थोड़ा उग्र अवश्य था, परंतु यह हिंसक नहीं कहा जा सकता। यह हिंसा मात्र प्रतिक्रियात्मक थी।
- गांधीजी ने स्वयं जनता द्वारा 1942 में की गई हिंसा की निंदा करने से इनकार कर दिया। उनका कहना था कि यह सत्ता की बड़ी हिंसा का जवाब था।

अतः स्पष्ट है कि भारत छोड़ो आंदोलन में गांधी की अपेक्षा जनता तथा द्वितीय स्तर के नेतृत्व की भूमिका अधिक थी।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में श्रमिकों की भूमिका सीमित रही। कम्युनिस्टों द्वारा आंदोलन के विरोध ने कदाचित् कामगारों पर नियंत्रक का काम किया। **अतः विकल्प (b) सही है।**

4. खेड़ा के किसानों के पक्ष में महात्मा गांधी के सत्याग्रह संघटित करने का क्या कारण था?

1. अकाल पड़ने के बावजूद प्रशासन ने भू-राजस्व की उगाही स्थगित नहीं की थी।

2. प्रशासन का यह प्रस्ताव था कि गुजरात में स्थायी बंदोबस्त लागू कर दिया जाए।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः खेड़ा आंदोलन का गुजरात में स्थायी बंदोबस्त लागू करने से कोई संबंध नहीं था, लेकिन अकाल पड़ने के बावजूद अंग्रेज़ सरकार ने करों को निलंबित नहीं किया, इसलिये महात्मा गांधी ने खेड़ा के किसानों के पक्ष में आंदोलन शुरू किया।

- गांधीजी के प्रारंभिक आंदोलनों में खेड़ा सत्याग्रह (1918 ई.) एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है।
- वर्ष 1918 ई. में गुजरात के खेड़ा ज़िले में किसानों की फसल अकाल के कारण बर्बाद हो गई, जिसके कारण वहाँ के किसान मालगुज़ारी देने में असमर्थ हो गए थे। किसान मालगुज़ारी को माफ करने की मांग कर रहे थे, फिर भी सरकार ने उनसे मालगुज़ारी वसूलना स्थगित नहीं किया।
- गांधीजी ने इस शोषणकारी व्यवस्था में सरकार के विरुद्ध किसानों का साथ दिया। इस आंदोलन में 'गुजरात सभा' ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 1918 ई. में गांधीजी गुजरात सभा के अध्यक्ष थे।
- गांधीजी ने किसानों को राय दी कि जब तक लगान में छूट नहीं मिलती, वे लगान देना बंद कर दें।
- खेड़ा आंदोलन में गांधीजी के साथ वल्लभभाई पटेल, इन्दुलाल याज्ञनिक तथा अन्य युवा लोगों ने गाँवों का दौरा किया।
- आंदोलन को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने गुप्त निर्देश दिया कि लगान उन्हीं से वसूला जाए, जो इसे देने की स्थिति में हैं।

5. महात्मा गांधी ने कहा था कि उनकी कुछ सबसे गहन धारणाएँ 'अनटू दिस लास्ट' (Unto this last) नामक पुस्तक में प्रतिबिंबित होती हैं और इस पुस्तक ने उनके जीवन को बदल डाला। इस पुस्तक का वह संदेश क्या था जिसने महात्मा गांधी को बदल डाला?

(a) सुशिक्षित व्यक्ति का यह नैतिक दायित्व है कि वह शोषित तथा निर्धनों का उत्थान करे

(b) व्यक्ति का कल्याण सबके कल्याण में निहित है

(c) उच्च जीवन के लिये ब्रह्मचर्य तथा आध्यात्मिक चिंतन अनिवार्य है

(d) इस संदर्भ में सभी उपर्युक्त (a), (b) तथा (c) कथन सही हैं

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: 'अनटू दिस लास्ट' (Unto this last) जॉन रस्किन द्वारा अर्थव्यवस्था पर लिखा गया एक लेख है। इस लेख में उसने बताया है कि वास्तविक संपत्ति मुद्रा या सोना नहीं है बल्कि वास्तविक संपत्ति जीवन है। इसी तरह इस लेख का एक अंश "व्यक्ति का कल्याण सबके कल्याण में निहित है" ने महात्मा गांधी को प्रभावित किया। इसी से प्रभावित होकर गांधीजी ने 'सर्वोदय' तथा 'अंत्योदय' जैसी अवधारणाओं का विकास किया।

समाज एवं धर्म सुधार आंदोलन

2025

1. राजा राममोहन राय के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

I. उनमें प्राच्य विश्व के पारंपरिक दार्शनिक सिद्धांतों के प्रति अत्यंत अनुराग और समादर था।

II. उनकी कामना थी कि उनके देशवासी तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा सभी पुरुषों और महिलाओं की मानवीय गरिमा और सामाजिक समता के सिद्धांत को मानें।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(a) केवल I

(b) केवल II

(c) I और II दोनों

(d) न तो I और न ही II

सही उत्तर: (c)

व्याख्या:

- आधुनिक पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव ने भारत में एक नई जागृति को जन्म दिया। पश्चिमी विजय ने भारतीय समाज की कमज़ोरी और पतन को उजागर कर दिया। विचारशील भारतीयों ने अपने समाज के दोषों और उन्हें दूर करने के तरीकों व साधनों की तलाश शुरू कर दी। जहाँ एक बड़ी संख्या में भारतीयों ने पश्चिम के साथ समझौता करने से इनकार कर दिया और पारंपरिक भारतीय विचारों व संस्थाओं में विश्वास रखा, वहीं कुछ ने धीरे-धीरे यह मानना शुरू कर दिया कि आधुनिक पश्चिमी विचार ही उनके समाज के पुनरुत्थान की कुंजी प्रदान करते हैं।

■ इस जागरण के केंद्र में राजा राममोहन राय थे, जिन्हें आधुनिक भारत का प्रथम महान नेता माना जाता है। राममोहन राय अपने लोगों और देश के प्रति गहरे प्रेम में विश्वास रखते थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन सामाजिक, धार्मिक, बौद्धिक और राजनीतिक पुनरुत्थान के लिये समर्पित कर दिया। उस समय भारतीय समाज जाति और रूढ़ियों के बंधन में जकड़ा हुआ था और इस ठहराव तथा भ्रष्टाचार से वे बहुत दुखी थे।

- राममोहन राय को पूर्व की पारंपरिक दार्शनिक प्रणालियों के प्रति गहरा प्रेम और सम्मान था; लेकिन साथ ही उनका मानना था कि पश्चिमी संस्कृति ही भारतीय समाज के पुनर्जनन में सहायता प्रदान करेगी। **अतः कथन I सही है।**
- विशेष रूप से वह चाहते थे कि उनके देशवासी तर्कसंगत, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा सभी पुरुषों और महिलाओं की मानवीय गरिमा और सामाजिक समानता के सिद्धांत को स्वीकार करें। वह देश में आधुनिक पूंजीवाद और उद्योग की शुरुआत भी चाहते थे। **अतः कथन II सही है। अतः विकल्प (c) सही है।**

2. इनमें से कौन 'आत्म-सम्मान आंदोलन (सेल्फ-रेस्पेक्ट मूवमेंट)' का संस्थापक था?

(a) 'पेरियार' ई.वी. रामास्वामी नायकर

(b) डॉ. बी.आर. अंबेडकर

(c) भास्करराव जाधव

(d) दिनकरराव जवलकर

सही उत्तर: (a)

व्याख्या:

- आत्म-सम्मान आंदोलन की स्थापना वर्ष 1925 में तमिलनाडु में 'पेरियार' ई.वी. रामास्वामी नायकर द्वारा की गई थी, जिन्हें पेरियार के नाम से भी जाना जाता है। वह बलीजा नायडू जाति से संबंधित थे, इस आंदोलन की शुरुआत ब्राह्मणवादी वर्चस्व, धार्मिक रूढ़िवादिता और जातिगत उत्पीड़न को चुनौती देने हेतु की गई थी। **अतः विकल्प (a) सही है।**
- यह आंदोलन ब्राह्मणवादी धर्म और संस्कृति को अस्वीकार करता था, जिसे पेरियार ने निम्न जाति के शोषण का साधन माना था।
- इसने तर्कवाद, लैंगिक समानता और आत्म-सम्मान को गैर-ब्राह्मण एवं शोषित समुदायों के बीच बढ़ावा दिया। पेरियार ने ब्राह्मण पुरोहितों के बिना विवाहों को औपचारिक रूप देकर ब्राह्मण प्रभुत्व को प्रतीकात्मक रूप से चुनौती दी।

- उनके विचार दक्षिण भारत में व्यापक रूप से मौजूद जातिविरोधी भावना के अनुरूप थे, जो केरल के नारायण गुरु के विचारों से समानता रखते थे।
- इस आंदोलन ने दक्षिण भारत में सामाजिक सुधार में एक निर्णायक भूमिका निभाई और तमिलनाडु में द्रविड़ राजनीति की नींव रखी। **अतः विकल्प (a) सही है।**

2021

1. इनमें से कौन सेक्रेटरी के रूप में हिंदू फीमेल स्कूल से संबद्ध थे/थीं, जो बाद में बेथ्यून फीमेल स्कूल के नाम से जाना जाने लगा?

(a) एनी बेसेंट **(b) देवेन्द्रनाथ टैगोर**
(c) ईश्वरचंद्र विद्यासागर **(d) सरोजिनी नायडू**

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः बेथ्यून ने 1849 में कोलकाता में कलकत्ता महिला विद्यालय के नाम से दक्षिणा रंजन मुखर्जी के वित्तीय सहयोग से एक विद्यालय खोला जो बाद में हिंदू महिला विद्यालय और उसके बाद बेथ्यून विद्यालय के नाम से जाना गया। 1879 में इसे कॉलेज के रूप में विकसित किया गया। यह भारत का पहला वूमेन कॉलेज बना और एशिया का पहला महिला विद्यालय। इसी विद्यालय से सेक्रेटरी के रूप में ईश्वरचंद्र विद्यासागर जुड़े हुए थे। **इस प्रकार विकल्प (c) सही है।**

2020

1. भारतीय इतिहास के संदर्भ में, 1884 का रखमाबाई मुकदमा किस पर केंद्रित था?

1. महिलाओं का शिक्षा पाने का अधिकार
2. सहमति की आयु
3. दांपत्य अधिकारों का प्रत्यास्थापन

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः रखमाबाई राउत ब्रिटिश भारत की पहली महिला डॉक्टरों में से एक थीं। 11 वर्ष की आयु में इनका विवाह कर दिये जाने के पश्चात् भी इन्होंने अपनी माँ के घर में ही रहना जारी रखा। इस कारण इनके पति दादाजी भीकाजी ने अपने 'दांपत्य अधिकारों के प्रत्यास्थापन' हेतु रखमाबाई के विरुद्ध मुकदमा दायर किया। इस प्रकार कथन 3 सही है।

'दादाजी भीकाजी बनाम रखमाबाई' मामले में पहला निर्णय रखमाबाई के पक्ष में रहा। हालाँकि बाद में इस मामले पर अनेक बार पुनर्विचार किया गया व अंतिम निर्णय दादाजी भीकाजी के पक्ष में आया। इसके बाद महारानी विक्टोरिया द्वारा न्यायालय का निर्णय पलटते हुए रखमाबाई व दादाजी भीकाजी का विवाह समाप्त (Dissolve) कर दिया गया। आगे चलकर रखमाबाई मुकदमे की 'एज ऑफ कंसेंट एक्ट, 1891' के बनने में बेहद महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। अतः कथन 2 भी सही है।

महिलाओं को शिक्षा के अधिकार दिलाने से संबंधित प्रयासों में रखमाबाई की प्रत्यक्ष भूमिका नहीं रही। अतः कथन 1 सही नहीं है। इस प्रकार उपर्युक्त विकल्प **(b)** सही उत्तर होगा।

2019

1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

आंदोलन/संगठन		नायक (लीडर)
1. अखिल भारतीय अस्पृश्यता विरोधी लीग	:	महात्मा गांधी
2. अखिल भारतीय किसान सभा	:	स्वामी सहजानंद सरस्वती
3. आत्मसम्मान आंदोलन	:	ई.वी. रामास्वामी नायकर

उपर्युक्त में से कौन-सा/से युग्म सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**
(c) केवल 2 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः अखिल भारतीय अस्पृश्यता विरोधी लीग की स्थापना वर्ष 1932 में हुई थी। इस संगठन को 'हरिजन सेवक संघ' के नाम से भी जाना जाता है। इसके नायक महात्मा गांधी थे। अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना वर्ष 1936 में लखनऊ में स्वामी सहजानंद सरस्वती के द्वारा की गई थी। वहीं आत्मसम्मान आंदोलन वर्ष 1920 में ई.वी. रामास्वामी नायकर द्वारा दक्षिण भारत में प्रारंभ किया गया।

2016

1. सत्यशोधक समाज ने संगठित किया-

(a) बिहार में आदिवासियों के उन्नयन का एक आंदोलन
(b) गुजरात में मंदिर-प्रवेश का एक आंदोलन
(c) महाराष्ट्र में एक जाति-विरोधी आंदोलन
(d) पंजाब में एक किसान आंदोलन

सही उत्तरः (c)

व्याख्या: 1873 में ज्योतिबा फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की। इस समाज के द्वारा महाराष्ट्र में एक जाति विरोधी आंदोलन को प्रारंभ किया गया। इस आंदोलन को शाहूजी महाराज ने आगे बढ़ाया।

सत्यशोधक समाज द्वारा मूर्तिपूजा, कर्मकाण्डों, पुजारियों के वर्चस्व, पुनर्जन्म और स्वर्ग के सिद्धांतों का विरोध किया गया। यह आंदोलन अपने मूल उद्देश्य और लक्ष्य में ही सामाजिक था। आधुनिकता के मूल चरित्र को आत्मसात करने का संभवत: यह प्रथम भारतीय अभियान था।

2. निम्नलिखित पर विचार कीजिये-

1. कलकत्ता यूनिटेरियन कमिटी (Calcutta Unitarian Committee)

2. टेबरनेकल ऑफ न्यू डिस्पेंसेशन (Tabernacle of New Dispensation)

3. इंडियन रिफॉर्म असोसिएशन (Indian Reform Association)

केशवचन्द्र सेन का संबंध उपर्युक्त में से किसकी/किनकी स्थापना से है?

(a) केवल 1 और 3 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या:

- 24 जनवरी, 1868 में केशवचन्द्र सेन ने टेबरनेकल ऑफ न्यू डिस्पेंसेशन की स्थापना की थी।
- 1870 में केशवचन्द्र सेन ने इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन की स्थापना की थी।
- 1823 ई. में राजा राममोहन राय, द्वारकानाथ टैगोर और विलियम एडम के द्वारा कलकत्ता यूनिटेरियन कमिटी की स्थापना की गई।
- केशवचन्द्र सेन ने ब्रह्मसमाज में सम्मिलित होकर समाज को संगठित करने का कार्य भी किया। वे मूर्तिपूजा, बहुदेव पूजा और ब्राह्मणों के प्रभुत्व के कट्टर विरोधी थे। स्त्रियों की शिक्षा के प्रति उनके विचार काफी उदार थे। वे पाश्चात्य सभ्यता की अच्छाइयों को भारतीय संस्कृति में समाहित करना चाहते थे।

2012

1. ब्रह्म समाज के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

1. इसने मूर्ति पूजा का विरोध किया।

2. धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या के लिये इसने पुरोहित वर्ग को अस्वीकारा।

3. इसने इस सिद्धांत का प्रचार किया कि वेद त्रुटिहीन हैं।

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**

(c) केवल 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: 1828 में राजा राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की। ब्रह्म समाज की स्थापना का उद्देश्य था—एकेश्वरवाद की उपासना, मूर्तिपूजा का विरोध, पुरोहितवाद का विरोध, अवतारवाद का खंडन आदि।

- देवेंद्रनाथ टैगोर व केशवचंद्र सेन ने ब्रह्म समाज की सदस्यता ग्रहण की। आचार्य केशवचन्द्र सेन के उदारवादी विचारों ने ब्रह्म समाज की लोकप्रियता को और बढ़ा दिया।
- ब्रह्म समाज ने धार्मिक ग्रंथ की व्याख्या के लिये मानव बुद्धि को आधार बनाया और इसी कारण इसने पुरोहित वर्ग के अस्तित्व को अस्वीकार किया।
- वेदों की त्रुटिहीनता को प्रचारित करने का श्रेय दयानंद सरस्वती के आर्य समाज को जाता है, न कि ब्रह्म समाज को।

आदिवासी/किसान एवं मज़दूर आंदोलन

2020

1. भारत के इतिहास के संदर्भ में, "ऊलगुलान" अथवा महान उपद्रव निम्नलिखित में से किस घटना का विवरण था?

(a) 1857 के विद्रोह का

(b) 1921 के मोपिला विद्रोह का

(c) 1859–60 के नील विद्रोह का

(d) 1899–1900 के बिरसा मुंडा विद्रोह का

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: बिरसा मुंडा ने उस विद्रोह का नेतृत्व किया जिसे ऊलगुलान (विद्रोह) या ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए सामंती एवं जमींदारी व्यवस्था के खिलाफ मुंडा विद्रोह के रूप में जाना जाता है। ऊलगुलान विद्रोह के एक कारण के रूप में साहूकारों एवं ठेकेदारों द्वारा किया गया शोषण भी उत्तरदायी था।

2018

1. निम्नलिखित में से कौन-सा एक चम्पारण सत्याग्रह का अति महत्त्वपूर्ण पहलू है?

(a) राष्ट्रीय आंदोलन में अखिल भारतीय स्तर पर अधिवक्ताओं, विद्यार्थियों और महिलाओं की सक्रिय सहभागिता

(b) राष्ट्रीय आंदोलन में भारत के दलित और आदिवासी समुदायों की सक्रिय भागीदारी

(c) भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में किसान असंतोष का सम्मिलित होना

(d) रोपण फसलों तथा वाणिज्यिक फसलों की खेती में भारी गिरावट

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: चंपारण आंदोलन 1917–18 में हुआ था। उस दौरान अंग्रेज़ किसानों से ज़बरदस्ती नील की खेती (कृषकों को अपनी ज़मीन

के $\frac{3}{20}$ वें भाग पर नील की खेती करना अनिवार्य-तिनकठिया व्यवस्था) कराते थे, जिस कारण उनमें भारी असंतोष था।

इसकी परिणति यह हुई कि एक किसान राजकुमार शुक्ल ने महात्मा गांधी को चंपारण आने का न्यौता दिया। इसके बाद महात्मा गांधी नील की खेती के विरोध में राजेंद्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिन्हा और ब्रजकिशोर प्रसाद के साथ चंपारण पहुँचे और अंग्रेज़ों के ख़िलाफ सत्याग्रह आंदोलन किया। इस आंदोलन के चलते अंग्रेज़ों को झुकना पड़ा। **अतः विकल्प (c) सही है।**

2. निम्नलिखित में से कौन 1948 में स्थापित "हिन्द मज़दूर सभा" के संस्थापक थे?

(a) बी. कृष्ण पिल्लई, ई.एम.एस. नम्बूदिरिपाद और के.सी. जॉर्ज

(b) जयप्रकाश नारायण, दीन दयाल उपाध्याय और एम.एन.रॉय

(c) सी.पी. रामास्वामी अय्यर, के. कामराज और वीरेशलिंगम पंतुलु

(d) अशोक मेहता, टी.एस. रामानुज और जी.जी. मेहता

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्या: अशोक मेहता, टी.एस. रामानुजम और जी.जी. मेहता 'हिन्द मज़दूर सभा' के संस्थापक सदस्यों में शामिल थे। अतः विकल्प **(d)** सही है। अन्य संस्थापक सदस्य थे- बसावन सिंह आर. एस. रुडकर, मनीबेन कारा, शिबनाथ बनर्जी आर. ए. खेडगिकर, वी.एस. माथुर।

3. संथाल विद्रोह के शांत हो जाने के बाद, औपनिवेशिक शासन द्वारा कौन-सा/से उपाय किया गया/किये गए?

1. 'संथाल परगना' नामक राज्यक्षेत्रों का सृजन किया गया।

2. किसी संथाल का ग़ैर-संथाल को भूमि अंतरण करना ग़ैरकानूनी हो गया।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 | **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों | **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: **(c)**

व्याख्या:

- जनवरी 1856 तक संथाल परगना क्षेत्र में संथाल विद्रोह दबा दिया गया, लेकिन संथालों की वीरता और शौर्य को देखते हुए सरकार को प्रशासनिक परिवर्तनों की अनिवार्यता स्वीकार करनी पड़ी। संथाल विद्रोह के परिणामस्वरूप नवंबर 1856 में विधिवत् संथाल परगना ज़िला की स्थापना की गई और एशली एडेन को प्रथम ज़िलाधीश बनाया गया।
- अंग्रेज़ सरकार ने भूमि का स्वामित्व जनजातियों के लिये निर्धारित करते हुए उनके संरक्षण हेतु भूमि कानून 'संथाल परगना काश्तकारी अधिनियम' बनाया, जिसके तहत किसी संथाल का गैर-संथाल को भूमि अंतरण करना गैर-कानूनी हो गया। अतः कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।

2017

1. 1929 का व्यापार विवाद अधिनियम (ट्रेड डिस्प्यूट्स ऐक्ट) निम्नलिखित में से किसका उपबंध करता है?

(a) उद्योगों के प्रबंधन में कामगारों की भागीदारी

(b) औद्योगिक झगड़ों के दमन के लिये प्रबंधन के पास मनमानी करने की शक्ति

(c) व्यापार विवाद की स्थिति में ब्रिटिश न्यायालय द्वारा हस्तक्षेप

(d) अधिकरणों (ट्रिब्यूनल्स) की प्रणाली तथा हड़तालों पर रोक

सही उत्तर: **(d)**

व्याख्या: 1920 के दशक में देश में बढ़ती हुई समाजवादी गतिविधियों से चिंतित होकर सरकार ने 1929 में ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल सदन में पेश किया जिसके द्वारा कारखानों में ट्रिब्यूनल्स प्रणाली एवं हड़तालों पर रोक लगा दी गई थी। **अतः विकल्प (d) सही है।**

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. फैक्टरी ऐक्ट, 1881 औद्योगिक कामगारों की मज़दूरी नियत करने के लिये और कामगारों को मज़दूरी संघ बनाने देने की दृष्टि से पारित किया गया था।

2. एन.एम. लोखंडे ब्रिटिश भारत में मज़दूर आंदोलन संगठित करने में अग्रगामी थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 | **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों | **(d) न तो 1, न ही 2**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: फैक्टरी एक्ट, 1881 में औद्योगिक कामगारों को मज़दूर संघ बनाने की अनुमति नहीं प्रदान की गई थी। एन.एम. लोखंडे ब्रिटिश भारत में मज़दूर आंदोलन से जुड़े अग्रणी नेता थे। अतः केवल कथन 2 सत्य है।

2013

1. बंगाल के तेभागा किसान आंदोलन की क्या मांग थी?

(a) ज़मींदारों की हिस्सेदारी को फसल के आधे भाग से कम करके एक-तिहाई करना

(b) भूमि का वास्तविक खेतिहर होने के नाते, भू-स्वामित्व कृषकों को प्रदान करना

(c) ज़मींदारी प्रथा का उन्मूलन तथा कृषि दासता का अंत

(d) कृषकों के समस्त ऋणों को रद्द करना

सही उत्तर: **(a)**

व्याख्या: ज़मींदारों की हिस्सेदारी को फसल के आधे भाग से कम करके एक तिहाई करना इस आन्दोलन का प्रमुख उद्देश्य था।

- बंगाल केंद्रित यह आंदोलन 1946-50 ई. की अवधि में हुआ।
- इस आंदोलन के प्रमुख नेता कृष्णविनोद राय, अवनी लाहिड़ी, सुनील सेन आदि थे।
- नोआखाली इस समय भीषण साम्प्रदायिक दंगों में झुलस रहा था परंतु इस आंदोलन में हिन्दू एवं मुस्लिम किसानों ने एकता का प्रदर्शन किया।
- इस आंदोलन में बँटाईदार किसानों ने ऐलान किया कि वे फसल का 2/3 हिस्सा लेंगे और ज़मींदारों को सिर्फ 1/3 हिस्सा ही देंगे। बँटवारे के इसी अनुपात के कारण इसे तेभागा आंदोलन कहते हैं।

2011

1. भारत में 19वीं शताब्दी के जनजातीय विद्रोह के लिये निम्नलिखित में से कौन-से तत्त्व ने साझा कारण मुहैया किया?

(a) भू-राजस्व की नई प्रणाली का लागू होना और जनजातीय उत्पादों पर कर का लगाया जाना

(b) जनजातीय क्षेत्रों में विदेशी धर्म प्रचारकों का प्रभाव

(c) जनजातीय क्षेत्रों में बिचौलियों के रूप में बड़ी संख्या में महाजनों, व्यापारियों और लगान के ठेकेदारों का बढ़ना

(d) जनजातीय समुदायों की प्राचीन भूमि संबंधी व्यवस्था का संपूर्ण विदारण (Disruption)

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: जनजातीय भूमि व्यवस्था के प्राचीन संबंधों का संपूर्ण विदारण ही वह साझा कारण था जिसने 19वीं शताब्दी में जनजातीय विद्रोह को मुखर किया। खासी विद्रोह (1829–33), कोल विद्रोह (1831–32), खोण्ड विद्रोह (1837–56), संथाल विद्रोह (1855–56), मुंडा विद्रोह (1899–1900) आदि जनजातीय विद्रोहों के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं। इन विद्रोहों के निम्न कारक माने जा सकते हैं-

- आदिवासियों का वन पर परंपरागत अधिकार था परंतु सरकार ने वन नीति के तहत उसे सरकारी संपत्ति घोषित किया और आदिवासियों को वन सामग्री के उपयोग की आज़ादी न रही।
- 1793 के स्थायी बंदोबस्त से संथालों को अपनी परम्परागत ज़मीन से हाथ धोना पड़ा।
- आबकारी कर, नमक कर जैसे करों की वसूली भी विद्रोह का कारण बनी।
- अंग्रेज़ों ने आदिवासी इलाकों में पुलिस थाने, सैनिक छावनियाँ व कंपनी कानून लागू किये। नई व्यवस्था की शोषणवादी प्रवृत्ति से आदिवासी त्रस्त हो गए।
- ईसाई धर्म प्रचारकों ने उनकी संस्कृति पर प्रहार किया। फलत: उनमें असंतोष पैदा हुआ।

उपरोक्त कारण विभिन्न क्षेत्रों में उपस्थित थे परंतु साझा कारकों के रूप में मुख्यत: जनजातियों की प्राचीन भूमि व्यवस्था पर ब्रिटिश सरकार द्वारा कुठाराघात करना था।

ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव

2020

1. निम्नलिखित में से किस कारण से भारत में बीसवीं शताब्दी के आरंभ में नील की खेती का ह्रास हुआ?

(a) नील के उत्पादकों के अत्याचारी आचरण के प्रति काश्तकारों का विरोध

(b) नई खोजों के कारण विश्व बाज़ार में इसका अलाभकर होना

(c) नील की खेती का राष्ट्रीय नेताओं द्वारा विरोध किया जाना

(d) उत्पादकों के ऊपर सरकार का नियंत्रण

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: उन्नीसवीं सदी के अंत के आने तक तथा 20वीं सदी की शुरुआत में नील के निर्यात में बहुत कमी देखी गयी। एक आँकड़े के मुताबिक 1895-96 में जहाँ भारत से नील का निर्यात लगभग 9300 टन था वो 1910-11 में घटकर 846 टन हो गया। नील के निर्यात में आई इस कमी का प्रमुख कारण जर्मनी द्वारा विकसित एक केमिकल निर्मित डाई थी जिसने नील डाई की यूरोप में मांग को लगभग समाप्तप्राय कर दिया।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन औद्योगिक क्रांति के द्वारा 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में भारत पर पड़े प्रभाव की सही व्याख्या करता है?

(a) भारतीय दस्तकारी उद्योग नष्ट हो गए थे।

(b) भारत के वस्त्र उद्योग में मशीनों का बड़ी संख्या में प्रवेश हुआ था।

(c) देश के अनेक भागों में रेलवे लाइनें बिछाई गई थीं।

(d) ब्रिटिश उत्पादन के आयात पर भारी शुल्क लगाया गया था।

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के क्रम में बड़े पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन होने लगा जिसे कम आयात शुल्क पर भारत में आयात किया जाने लगा। इसी समय 1813 के एक्ट द्वारा मुक्त व्यापार की नीति को लागू कर इसे और बल प्रदान किया गया। परिणामत: 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारतीय हस्तशिल्प का पतन हो गया। **अत: विकल्प (a) सही है।**

यद्यपि भारत में रेलवे लाइनों का निर्माण भी औद्योगिक क्रांति का ही परिणाम है किंतु ये 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में देखने को मिले। अत: विकल्प **(b)** और **(c)** गलत है।

औद्योगिक क्रांति के उपरांत ब्रिटेन में उत्पादित वस्तुओं को भारतीय बाज़ार में अधिकाधिक मात्रा में सस्ते दामों पर उपलब्ध कराया गया। इसके लिये भारत की ब्रिटिश सरकार द्वारा इसके आयात पर लगे शुल्क को भी कम कर दिया गया। अत: विकल्प **(d)** गलत है।

2018

1. आर्थिक तौर पर 19वीं शताब्दी में भारत पर अंग्रेज़ी शासन का एक परिणाम था

(a) भारतीय हस्त-शिल्पों के निर्यात में वृद्धि

(b) भारतीयों के स्वामित्व वाले कारखानों की संख्या में वृद्धि

(c) भारतीय कृषि का वाणिज्यीकरण

(d) नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः

- कृषि का वाणिज्यीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत खाद्यान्न फसलों के स्थान पर बाज़ार आधारित फसलों का उत्पादन किया जाता है, जैसे- कपास, तंबाकू आदि।
- एड्म स्मिथ के अनुसार, वाणिज्यीकरण उत्पादन को प्रोत्साहन देता है, परिणामस्वरूप समाज में समृद्धि आती है, किंतु औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत लाए गए वाणिज्यीकरण ने जहाँ ब्रिटेन को समृद्ध बनाया, वहीं भारत के संदर्भ में इसका प्रतिकूल असर हुआ।
- ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति प्रारंभ हो गई थी और ब्रिटिश उद्योगों के लिये बड़ी मात्रा में कच्चे माल की ज़रूरत थी। सर्वविदित है कि औद्योगीकरण के लिये एक सशक्त कृषि आधार का होना ज़रूरी है। ब्रिटेन में यह आधार कमज़ोर होने के कारण वहाँ होने वाले औद्योगीकरण के लिये भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था का व्यापक दोहन किया गया।
- किसानों में मुनाफा प्राप्त करने की उत्प्रेरणा को भी कृषि के वाणिज्यीकरण को प्रेरित करने वाला एक कारक माना जाता है।
- औपनिवेशिक सरकार ने भारत में उन्हीं वाणिज्यिक फसलों को बढ़ावा दिया, जिनकी उन्हें ज़रूरत थी।

उदाहरणस्वरूप, कैरेबियाई देशों से नील के आयात की निर्भरता को समाप्त करने के लिये उन्होंने भारत में नील की खेती को बढ़ावा दिया। इसी प्रकार, चीन को निर्यात करने के लिये भारत में अफीम के उत्पादन पर ज़ोर दिया गया। इसी तरह, इटैलियन रेशम पर अपनी निर्भरता कम करने के लिये बंगाल में मलबरी रेशम के उत्पादन पर बल दिया गया।

औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत लाई गई इस व्यवस्था ने भारत में अकाल और भुखमरी की बारंबारता बढ़ा दी। निष्कर्ष रूप में अगर कहा जाए तो कृषि के वाणिज्यीकरण से गाँवों में ऋणग्रस्तता बढ़ी, अकाल पड़े और दक्कन में कृषक दंगे हुए। इस प्रकार, वाणिज्यीकरण से कृषि को कोई लाभ नहीं हुआ। **अतः विकल्प (c) सही है।**

2017

1. निम्नलिखित में से कौन, ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में रैयतवाड़ी बंदोबस्त के प्रारंभ किये जाने से संबद्ध था/थे?

1. लॉर्ड कॉर्नवालिस
2. अलेक्ज़ैंडर रीड
3. थॉमस मुनरो

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 (b) केवल 1 और 3

(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः मद्रास प्रेसिडेंसी में सबसे पहले थॉमस मुनरो और कप्तान रीड द्वारा रैयतवाड़ी प्रणाली को शुरू किया गया था। बाद में इसे बंबई, बंगाल के कुछ हिस्सों, असम, कुर्ग आदि तक बढ़ा दिया गया था,जबकि लॉर्ड कॉर्नवालिस द्वारा स्थायी बंदोबस्त प्रणाली को शुरू किया गया था।

2015

1. निम्नलिखित में से कौन भारत में उपनिवेशवाद का/के आर्थिक आलोचक था/थे?

1. दादाभाई नौरोजी 2. जी. सुब्रमण्यम अय्यर
3. आर.सी. दत्त

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये–

(a) केवल 1 (b) 1 और 2

(c) 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः भारत में उपनिवेशवाद के प्रमुख आर्थिक आलोचकों में दादाभाई नौरोजी, जी. सुब्रमण्यम अय्यर और आर.सी. दत्त तीनों शामिल रहे हैं। **अतः विकल्प (d) सही है** जिसकी विस्तृत चर्चा निम्न है–

- दादाभाई नौरोजी ने अपने निबंधात्मक लेखों, जैसे 'पॉवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया', 'द वॉन्ट्स एंड मीन्स ऑफ इंडिया', 'ऑन दी कॉमर्स ऑफ इंडिया' द्वारा धन के निष्कासन सिद्धांत की व्याख्या की।
- नौरोजी ने कहा कि धन का निकास ब्रिटिश उपनिवेशवाद के शोषण का एक उपकरण तथा भारतीय निर्धनता का प्रमुख कारण है।
- प्रसिद्ध अर्थशास्त्री व राष्ट्रवादी रमेश चंद्र दत्त ने अपनी पुस्तक 'इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया' में धन बहिर्गमन सिद्धांत का उल्लेख किया। उनके अनुसार भारत के सकल राजस्व का लगभग आधा हिस्सा बाहर चला जाता था।

- दत्त ने धन के बहिर्गमन को 'बहते हुए घाव' की तरह बताया।
- जी. सुब्रमण्यम अय्यर ने अपने लेखों से आर्थिक नीतियों की आलोचना के साथ-साथ ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध किया।

2012

1. निम्नलिखित पर विचार कीजिये-

1. मृदा के स्वरूप तथा उपज के गुणों के आधार पर भूमि राजस्व का मूल्यांकन

2. युद्ध में चलती-फिरती तोपों का उपयोग

3. तंबाकू और लाल मिर्च की खेती

उपर्युक्त में से कौन-सा/से अंग्रेज़ों की भारत को देन थी/थीं?

(a) केवल 1 **(b) 1 और 2**

(c) 2 और 3 **(d) कोई भी नहीं**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: उपरोक्त में से कोई भी कथन सही नहीं है क्योंकि इनमें से कोई भी अंग्रेज़ों की भारत को देन नहीं है। ये सब अंग्रेज़ों के आगमन से पूर्व ही भारत में प्रचलित थे।

- मृदा के स्वरूप तथा उपज के गुणों के आधार पर भूमि राजस्व का मूल्यांकन मध्य युग की देन है। अंग्रेज़ों से पूर्व ही शेरशाह सूरी व अकबर ने भूमि की गुणवत्ता के आधार पर भूमि का विभाजन किया तथा उपज के आधार पर भू-राजस्व का निर्धारण किया।
- युद्ध में चलती-फिरती तोपों का उपयोग अंग्रेज़ों से पूर्व ही मुगल काल में होने लगा था। बाबर के द्वारा पानीपत का युद्ध जीतने के पीछे एक बड़ा कारण उसकी तोपखाना पद्धति थी। बाबर ने उज्बेकों की युद्ध नीति 'तुलगुमा युद्ध पद्धति' तथा तोपों को सजाने में 'उस्मानी विधि' (रूमी विधि) का प्रयोग किया। अकबर के आयुध निर्माण कारखाने में तमाम प्रकार की बड़ी-छोटी तोपें तैयार की जाती थीं।
- भारत में तम्बाकू व लाल मिर्च की खेती पुर्तगालियों की देन थी। पुर्तगालियों ने ही भारत में प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत भी की।

2. रैयतवाड़ी बंदोबस्त के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. किसानों द्वारा लगान सीधे सरकार को दिया जाता था।

2. सरकार रैयत को पट्टे देती थी।

3. कर लगाने के पूर्व भूमि का सर्वेक्षण और मूल्य निर्धारण किया जाता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**

(c) 1, 2 और 3 **(d) कोई भी नहीं**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: रैयतवाड़ी बंदोबस्त के संदर्भ में दिये गए तीनों कथन सही हैं। इसकी व्याख्या निम्न है-

- अंग्रेज़ों द्वारा भारत में भू-राजस्व वसूली हेतु लागू की गई इस व्यवस्था का जन्मदाता टॉमस मुनरो व कैप्टन रीड को माना जाता है।
- यह व्यवस्था ब्रिटिश भारत के 51% क्षेत्र पर लागू की गई जिसमें मद्रास, बम्बई के कुछ हिस्से, पूर्वी बंगाल, असम व कुर्ग आदि क्षेत्र शामिल थे।
- इसके तहत रैयतों को भूमि का मालिकाना और कब्जादारी अधिकार दिया गया था जिसके द्वारा ये प्रत्यक्ष रूप से सीधे या व्यक्तिगत रूप से सरकार को भू-राजस्व का भुगतान करने के लिये उत्तरदायी थे। यह स्थायी नहीं था। प्रत्येक 30 वर्षों में लगान का पुनर्निर्धारण किया जाता था।

इस व्यवस्था के अंतर्गत भूमि की उत्पादन क्षमता के आधार पर सर्वेक्षण कर भू-राजस्व का निर्धारण किया गया और कृषकों को यह छूट दी गई कि वह जिस प्रकार की भूमि का चयन करते हैं उसी आधार पर भू-राजस्व चुकाना होगा। हालाँकि, 1820 के बाद इस व्यवस्था में परिवर्तन आने लगा और कृषकों को उनकी इच्छा के विरुद्ध जबरन भूमि जोतने को बाध्य किया गया।

2011

1. 1793 में लॉर्ड कार्नवालिस की भू-व्यवस्था प्रणाली लागू होने के बाद कानूनी विवादों की प्रवृत्ति में बढ़ोतरी देखी गई थी। निम्नलिखित प्रावधानों में से किस एक को सामान्यतया इसके कारक के रूप में जोड़कर देखा जाता है?

(a) रैयत की तुलना में ज़मींदार की स्थिति को अधिक सशक्त बनाना

(b) ईस्ट इंडिया कंपनी को ज़मींदारों का अधिपति बनाना

(c) न्यायिक पद्धति को अधिक कार्यकुशल बनाना

(d) उपर्युक्त (a), (b) तथा (c) कथनों में से कोई भी सही नहीं है

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: 1793 में लॉर्ड कार्नवालिस ने स्थायी बंदोबस्त (ज़मींदारी व्यवस्था) प्रारंभ किया। इसके तहत निम्न प्रावधान किये गए-

- ज़मींदारों को भू-स्वामी बना दिया गया। उस समय तक उन्हें उनकी भूमि से पृथक् नहीं किया जा सकता था, जब तक कि वे अपना निश्चित लगान सरकार को देते रहें।
- राजस्व के कर का विभाजन स्पष्टत: सरकारों और ज़मींदारों के बीच किया गया। सरकार के लिये राजस्व का 10/11 तथा ज़मींदारों के लिये 1/11 निश्चित किया गया।
- भू-राजस्व को स्थायी बना दिया गया।
- यह व्यवस्था बंगाल, बिहार, उड़ीसा, बनारस में लागू की गई जो कुल क्षेत्र का 19% थी।

- कृषकों की स्थिति किरायेदार के रूप में स्वीकार की गई। भूमि पर उनका किसी प्रकार का अधिकार नहीं था। परंपरागत कृषि संबंधी अधिकार, जैसे- चरागाह, वन आदि समाप्त हो गए।

इस व्यवस्था में निम्न वजह से कानूनी विवादों की प्रकृति में बढ़ोतरी देखी गई-

- ज़मींदारी का क्षेत्र पूर्णत: निर्धारित न होना।
- ज़मींदारों व कृषकों के बीच अनेक मध्यस्थ होने के कारण भी विवाद बढ़े।
- भूमि को बिक्री योग्य बना देने के कारण भी विवाद बढ़े।

अत: स्पष्ट है कि उपर्युक्त कथनों में से कोई भी कथन सही नहीं है।

2. भारत में उपनिवेशी शासनकाल में 'होम चार्जेज' भारत से सम्पत्ति दोहन के महत्त्वपूर्ण अंग थे। निम्नलिखित में से कौन-सी निधि/निधियाँ 'होम चार्जेज' की संघटक थी/थीं?

1. लंदन में इंडिया ऑफिस के भरण-पोषण के लिये प्रयोग में लाई जाने वाली निधि

2. भारत में कार्यरत अंग्रेज़ कर्मचारियों के वेतन तथा पेंशन देने हेतु प्रयोग में लाई जाने वाली निधि

3. भारत के बाहर हुए युद्धों को लड़ने में अंग्रेज़ों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली निधि

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1

(b) केवल 1 और 2

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: इंग्लैंड में नियुक्त यूरोपीय अधिकारियों के वेतन-भत्ते, सैन्य खरीदारी, भारत सचिव के ऑफिस का खर्च, भारतीय सार्वजनिक ऋण एवं रेलवे पर लगाई गई पूंजी पर दिया गया ब्याज, भारत के कारण इंग्लैंड में दिये जाने वाले नागरिक व सैनिक शुल्क आदि होम चार्जेज के प्रमुख संघटक थे।

- ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत भारत का शोषण किया गया। इसके तहत 'धन निकासी', 'गृह व्यय' जैसे तरीकों से भारत की धन-संपदा को ब्रिटेन की ओर प्रवाहित किया गया।
- आर.सी. दत्त द्वारा लिखित 'भारत का आर्थिक इतिहास' में गृह व्यय का सिद्धांत दिया गया है। इसके अंतर्गत भारत की ब्रिटिश सरकार द्वारा ब्रिटेन में किया गया खर्च आता है।
- भारत के बाहर हुए युद्धों को लड़ने में अंग्रेज़ों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली निधि हमेशा गृह व्यय पर पूर्णत: निर्भर नहीं होती थी।

ब्रिटिश शासन के अंतर्गत संवैधानिक विकास और भारत का विभाजन

2024

1. भारत सरकार अधिनियम, 1935 के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. इसमें ब्रिटिश भारतीय प्रांतों और देशी रियासतों को मिलाकर एक अखिल भारतीय परिसंघ (फेडरेशन) की स्थापना का प्रावधान किया गया।

2. रक्षा और विदेश संबंधी मामलों को परिसंघीय विधानमंडल के नियंत्रण के अधीन रखा गया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

सही उत्तर: (a)

व्याख्या:

भारत सरकार अधिनियम (1935):

- इसने **एक अखिल भारतीय परिसंघ (फेडरेशन) की स्थापना** का प्रावधान किया जिसमें **भारतीय प्रांतों एवं देशी रियासतों को इकाइयों के रूप में शामिल** किया गया। **अत: कथन 1 सही है।**
  - इसने ग्यारह में से छह प्रांतों में द्विसदनात्मक व्यवस्था लागू की।
- भारत सरकार अधिनियम (1935) ने विषयों को तीन सूचियों में वर्गीकृत किया: केंद्रीय सूची, राज्य सूची एवं समवर्ती सूची।
  - संघीय विषयों में से रक्षा, विदेशी मामले, धार्मिक मामले और जनजातीय क्षेत्र गवर्नर जनरल के हाथों में सुरक्षित रखे गये थे। यह विषय गवर्नर जनरल की विवेकाधीन शक्ति के अंतर्गत थे। **अत: कथन 2 सत्य नहीं है।**
  - क्षेत्रीय महत्त्व के 54 विषयों को राज्य सूची में शामिल किया गया जिनमे शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, कानून और व्यवस्था तथा स्थानीय सरकारें शामिल थी।
  - समवर्ती सूची में विद्युत, विवाह, तलाक, श्रम एवं आपराधिक कानून जैसे 36 विषय शामिल थे।
  - शेष विषयों को अवशिष्ट शक्तियों के अंतर्गत गवर्नर-जनरल को सौंप दिया गया था।

2023

1. निम्नलिखित में से किस एक ऐक्ट द्वारा बंगाल के गवर्नर जनरल को भारत के गवर्नर जनरल के रूप में अभिहित किया गया था?

(a) रेगुलेटिंग ऐक्ट

(b) पिट्स इंडिया ऐक्ट

(c) 1793 का चार्टर ऐक्ट

(d) 1833 का चार्टर ऐक्ट

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः चार्टर अधिनियम, 1833:

- यह अधिनियम ब्रिटिश भारत में केंद्रीकरण की दिशा में अंतिम निर्णायक कदम था।
- इसके द्वारा बंगाल के गवर्नर-जनरल को भारत का गवर्नर जनरल बनाने के साथ उसे सभी नागरिक और सैन्य शक्तियाँ प्रदान की गईं। इस प्रकार इस अधिनियम द्वारा पहली बार तत्कालीन भारत में ब्रिटिशों के अधीन संपूर्ण क्षेत्र को भारत सरकार के अधिकार क्षेत्र में लाया गया। इस अधिनियम के तहत लॉर्ड विलियम बेंटिक, भारत का पहला गवर्नर-जनरल बना। **अतः विकल्प (d) सही है।**

2022

1. भारत सरकार अधिनियम, 1919 में, प्रांतीय सरकार के कार्य "आरक्षित (रिज़र्व्ड)" और "अंतरित (ट्रांसफर्ड)" विषयों के अंतर्गत बाँटे गए थे। निम्नलिखित में कौन-से "आरक्षित" विषय माने गए थे?

1. न्याय प्रशासन

2. स्थानीय स्वशासन

3. भू-राजस्व

4. पुलिस

नीचे दिये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनियेः

(a) 1, 2 और 3 **(b) 2, 3 और 4**

(c) 1, 3 और 4 **(d) 1, 2 और 4**

सही उत्तरः (c)

व्याख्याः भारत सरकार अधिनियम, 1919 के अनुसार विषयों को दो सूचियों में विभाजित किया गया था: 'आरक्षित सूची' जिसमें कानून और व्यवस्था, वित्त, भूमि राजस्व, सिंचाई, आदि जैसे विषय शामिल थे, जबकि शिक्षा, स्वास्थ्य, स्थानीय सरकार, उद्योग, कृषि, उत्पाद शुल्क, आदि जैसे विषय 'स्थानांतरित सूची' में शामिल थे। **अतः विकल्प (c) सही है।**

2. क्रिप्स मिशन के प्रस्तावों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः

1. संविधान सभा में प्रांतीय विधान सभाओं और साथ ही भारतीय रियासतों द्वारा नामित सदस्य होंगे।

2. नया संविधान स्वीकार करने के लिये जो भी प्रांत तैयार नहीं होगा, उसे यह अधिकार होगा कि अपनी भावी स्थिति के बारे में ब्रिटेन के साथ अलग संधि पर हस्ताक्षर करे।

उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः क्रिप्स मिशन के अनुसार, देश का नया संविधान बनाने के लिये एक संविधान सभा का गठन किया जाएगा। इस सभा में प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा चुने गए सदस्य और राजाओं द्वारा मनोनीत सदस्य भी होंगे। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**

- इसके अलावा मिशन ने प्रस्तावित किया कि कोई भी प्रांत भारतीय प्रभुत्व में शामिल होने का इच्छुक नहीं है तो एक अलग संघ बना सकता है जिसका एक अलग संविधान हो सकता है। **अतः कथन 2 सही है। अतः विकल्प (b) सही है।**

2021

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. 1919 के मॉन्टेग्यू-चेम्सफ़ोर्ड सुधारों में, 21 वर्ष से अधिक आयु की सभी महिलाओं के लिये मताधिकार की संस्तुति की गई।

2. 1935 के गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट में, विधानमंडल में महिलाओं के लिये आरक्षित स्थानों का प्रावधान किया गया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः 1919 के मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों में 21 वर्ष से अधिक आयु की सभी महिलाओं को मताधिकार की संस्तुति नहीं की गई थी। अतः कथन 1 गलत है यद्यपि 1919 के भारत शासन अधिनियम में प्रांतीय परिषदों को महिलाओं को मताधिकार देने के नियम बनाने के लिये कहा गया था जो संपत्ति, आय और शिक्षा पर आधारित हो।

- इस आधार पर 1919 में मद्रास शहर, 1920 में त्रावणकोर और झालवाड़, 1921 में बंबई और मद्रास प्रांत में सीमित मात्रा में महिलाओं को मताधिकार दिया गया। गोलमेज़ सम्मेलन ने मत देने के लिये महिलाओं की उम्र 21 वर्ष करने की सिफारिश की थी।

- 1935 के अधिनियम में और अधिक महिलाओं को मताधिकार मिला लेकिन कुल मिलाकर 2.5% महिलाओं तक ही सीमित था। उनके लिये संप्रदाय के आधार पर विधान मंडल में स्थान आरक्षित किया गया। यद्यपि वे किसी भी अनारक्षित स्थान पर भी चुनाव लड़ सकती थीं। अतः कथन 2 सही है। **अतः विकल्प (b) सही है।**

2019

1. 'चार्टर एक्ट, 1813' के संबंध में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. इसने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापार एकाधिपत्य को, चाय का व्यापार तथा चीन के साथ व्यापार को छोड़कर, समाप्त कर दिया।

2. इसने कंपनी द्वारा अधिकार में लिये गए भारतीय राज्यक्षेत्रों पर ब्रिटिश राज (क्राउन) की संप्रभुता को सुदृढ़ कर दिया।

3. भारत का राजस्व अब ब्रिटिश संसद के नियंत्रण में आ गया था।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: चार्टर एक्ट, 1813 द्वारा कंपनी का भारतीय व्यापार पर एकाधिकार समाप्त कर दिया गया। यद्यपि उसके चीन के साथ व्यापार तथा चाय के व्यापार पर एकाधिकार बना रहा। इस एक्ट से कंपनी द्वारा अधिकार में लिये गए राज्यक्षेत्रों पर ब्रिटिश राज (क्राउन) की संप्रभुता सुदृढ़ हो गई। अतः कथन 1 और 2 सही हैं।

- भारत शासन अधिनियम, 1858 के द्वारा 'कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स' तथा 'बोर्ड ऑफ कंट्रोल' को समाप्त कर उनके अधिकार, एक 15 सदस्यीय परिषद् को सौंप दिये गए। जिसके अध्यक्ष को मुख्य राज्य सचिव या भारत राज्य सचिव (Secretary of State for India) के नाम से जाना गया। गौरतलब है कि 15 सदस्यीय परिषद् व भारत सचिव को वेतन भारतीय राजस्व से दिया जाना तय किया गया, लेकिन इनका संचालन लंदन से होता था। इसे 'होम चार्जेज़' कहा गया। अतः कथन 3 गलत है।

2018

1. भारतीय शासन अधिनियम, 1935 के द्वारा स्थापित संघ में अवशिष्ट शक्तियाँ किसे दी गई थीं?

(a) संघीय विधान-मंडल को

(b) गवर्नर जनरल को

(c) प्रांतीय विधान-मंडल को

(d) प्रांतीय राज्यपालों को

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: भारत शासन अधिनियम, 1935 द्वारा स्थापित संघ में अवशिष्ट शक्तियाँ 'गवर्नर जनरल' को प्रदान की गई थीं।

1930–32 में लंदन में हुए तीन गोलमेज सम्मेलनों में संवैधानिक सुधारों से संबंधित संस्तुतियों के फलस्वरूप 'भारत शासन अधिनियम, 1935' का निर्माण किया गया। इसके तहत भारत में सर्वप्रथम संघीय शासन प्रणाली की नींव रखी गई। केंद्र में द्वैध शासन की स्थापना अर्थात् केंद्र तथा राज्य इकाइयों के मध्य शक्तियों का विभाजन किया गया- संघ सूची, प्रांत सूची तथा समवर्ती सूची। संघ सूची में 59 विषय, प्रांत सूची में 54 विषय तथा समवर्ती सूची में 36 विषय शामिल किये गए तथा अवशिष्ट शक्तियाँ गवर्नर जनरल में निहित थीं।

2017

1. भारतीय इतिहास के संदर्भ के में, 'द्वैध शासन (डायआर्की)' सिद्धांत किसे निर्दिष्ट करता है?

(a) केंद्रीय विधानमंडल का दो सदनों में विभाजन।

(b) दो सरकारों, अर्थात् केंद्रीय और राज्य सरकारों का शुरू किया जाना।

(c) दो शासक-समुच्चय; एक लंदन में और दूसरा दिल्ली में होना।

(d) प्रांतों को प्रत्यायोजित विषयों का दो प्रवर्गों में विभाजन।

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: 'द्वैध शासन' का सिद्धांत प्रत्येक प्रांतीय सरकार की कार्यकारी शाखा को आधिकारिक और लोकप्रिय रूप से ज़िम्मेदार वर्गों में विभाजन को मान्यता देता है। ब्रिटिश भारत के प्रांतों के लिये द्वैध शासन भारत सरकार अधिनियम, 1919 द्वारा प्रारंभ किया गया था। **अतः विकल्प (d) सही है।**

2016

1. मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड प्रस्ताव किससे संबंधित थे?

(a) सामाजिक सुधार **(b) शैक्षिक सुधार**

(c) पुलिस प्रशासन में सुधार **(d) सांविधानिक सुधार**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: भारत शासन अधिनियम, 1919 को 'मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार' के नाम से भी जाना जाता है। मॉण्टेग्यू के साथ एक उच्चस्तरीय दल स्थिति का जायजा लेने भारत आया। दल के अध्ययन के आधार पर जुलाई 1918 में मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड रिपोर्ट प्रकाशित की गई। यह रिपोर्ट 1919 के 'भारत शासन अधिनियम' का आधार बनी। इसी के आधार पर ब्रिटिश संसद ने 1919 में भारत के औपनिवेशिक प्रशासन के लिये नया विधान बनाया जो 1921 में क्रियान्वित किया गया।

'मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड प्रस्ताव' की विशेषताएँ

- इस अधिनियम में सर्वप्रथम उत्तरदायी शासन शब्द का स्पष्ट प्रयोग किया गया था।
- साम्प्रदायिक आधार पर निर्वाचन प्रणाली को सिक्खों, यूरोपियन व आंग्ल-भारतीयों पर भी लागू किया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा प्रांतों में द्वैध शासन पद्धति को लागू किया गया।
- इस अधिनियम ने भारत में एक लोक सेवा आयोग के गठन का प्रावधान किया तथा भारत सचिव को भारत में महालेखा परीक्षक की नियुक्ति का अधिकार दिया।

अतः मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड प्रस्ताव सांविधानिक सुधारों से संबंधित था।

2. सर स्टैफर्ड क्रिप्स की योजना में यह परिकल्पना थी कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद

(a) भारत को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिये

(b) स्वतंत्रता प्रदान करने से पहले भारत को दो भागों में विभाजित कर देना चाहिये

(c) भारत को इस शर्त के साथ गणतंत्र बना देना चाहिये कि वह राष्ट्रमंडल में शामिल होगा

(d) भारत को डोमिनियन स्टेटस दे देना चाहिये

सही उत्तरः (d)

व्याख्याः क्रिप्स मिशन ने पूर्ण स्वतंत्रता के स्थान पर भारत को डोमिनियन स्टेटस (Dominion Status) देने का प्रस्ताव दिया था अर्थात् भारत का राष्ट्रप्रमुख ब्रिटेन का राजा या रानी ही बने रहते।

डोमिनियन स्टेटस (स्वतंत्र उपनिवेश का दर्ज़ा) की मांग भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस ने पहली बार 1908 ई. में की थी। उस समय इसका अर्थ केवल इतना ही था कि आंतरिक मामलों में भारतीयों को स्वशासन का अधिकार दिया जाए, जैसा कि ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत कनाडा को प्राप्त था। बाद में, कॉन्ग्रेस ने लाहौर अधिवेशन के तहत भारत का लक्ष्य 'पूर्ण स्वाधीनता' घोषित किया। 15 अगस्त, 1947 को भारत ने ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के अंतर्गत पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त कर ली। यह स्थिति 1949 ई. में और अधिक स्पष्ट हो गई, जब भारत को सार्वभौम प्रभुसत्ता संपन्न स्वाधीन गणराज्य के रूप में मान्यता प्रदान कर दी गई।

2015

1. भारत सरकार अधिनियम, 1919 ने निम्नलिखित में से किसको स्पष्ट रूप से परिभाषित किया?

(a) न्यायपालिका एवं विधायिका के बीच शक्ति का पृथक्करण

(b) केंद्रीय एवं प्रांतीय सरकारों की अधिकारिता

(c) भारत में सेक्रेटरी ऑफ स्टेट एवं वायसरॉय की शक्तियाँ

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

सही उत्तरः (b)

व्याख्याः भारत शासन अधिनियम, 1919 की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता केंद्रीय एवं प्रांतीय सरकारों की अधिकारिता से संबंधित है। **अतः सही उत्तर (b) है।**

- 1919 के अधिनियम में पहली बार 'उत्तरदायी शासन' शब्द का स्पष्ट प्रयोग किया गया।
- प्रांतों में आंशिक उत्तरदायी शासन व द्वैध शासन की स्थापना की गई।
- इसके अनुसार सभी विषयों को केंद्र तथा प्रांतों में बाँट दिया गया।
- केंद्रीय सूची में वर्णित विषयों पर सपरिषद गवर्नर जनरल का अधिकार था, जैसे– विदेशी मामले, रक्षा, डाक-तार, सार्वजनिक ऋण आदि।
- प्रांतीय सूची के विषय थे– स्थानीय स्वशासन, शिक्षा, चिकित्सा, भूमिकर, जल संभरण, अकाल सहायता, कृषि व्यवस्था आदि।
- सभी अवशिष्ट शक्तियाँ केंद्रीय सरकार के पास थीं।

2. कैबिनेट मिशन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

1. इसने एक संघीय सरकार के लिये सिफारिश की।

2. इसने भारतीय न्यायालयों की शक्तियों का विस्तार किया।

3. इसने ICS में और अधिक भारतीयों के लिये उपबंध किया।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये–

(a) केवल 1 **(b) 2 और 3**

(c) 1 और 3 **(d) कोई नहीं**

सही उत्तरः (a)

व्याख्याः भारत में संवैधानिक सुधारों की योजना के साथ मार्च 1946 में कैबिनेट मिशन दिल्ली पहुँचा। इसमें पैथिक लॉरेंस, स्टेफोर्ड क्रिप्स व ए.बी. अलेक्जेण्डर शामिल थे। इसकी सिफारिशें निम्न थीं–

- भारत में एक अखिल भारतीय संघ की स्थापना होनी चाहिये, जिसमें ब्रिटिश भारत और देशी राज्य सम्मिलित हों।
- संघीय विषयों वित्त, संचार तथा विदेशी मामलों के अतिरिक्त सभी विषय एवं अवशिष्ट शक्तियाँ प्रांतों में निहित होनी चाहियें।
- कैबिनेट मिशन ने मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की मांग को अस्वीकार कर दिया किंतु प्रांतों का समूहीकरण कर परोक्ष रूप से विखण्डन को बढ़ावा दिया।
- भारतीय न्यायालयों की शक्तियों का विस्तार तथा ICS (भारतीय जनपद सेवा) में भारतीयों की भागीदारी बढ़ाने संबंधी प्रस्तावों से कैबिनेट मिशन का कोई संबंध नहीं था।

2014

1. रैडक्लिफ समिति किसलिये नियुक्त की गई थी?

(a) भारत में अल्पसंख्यकों की समस्या को सुलझाने के लिये

(b) स्वतंत्रता विधेयक को कार्यरूप में परिणत करने के लिये

(c) भारत और पाकिस्तान के बीच सीमाओं को निर्धारित करने के लिये

(d) पूर्वी बंगाल के दंगों की जाँच करने के लिये

सही उत्तरः (c)

व्याख्या: रैडक्लिफ समिति की नियुक्ति तत्कालीन वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन द्वारा जुलाई 1947 में की गई थी। इस समिति में अध्यक्ष सर रैडक्लिफ के अलावा भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस एवं मुस्लिम लीग के द्वारा नामांकित 2–2 सदस्य भी थे। यह एक परामर्शदात्री समिति थी जिसे ब्रिटिश भारत के विभाजन के पश्चात् **भारत एवं पाकिस्तान के बीच सीमाओं को निर्धारित करने के संबंध** में सुझाव देना था।

2013

1. भारतीय इतिहास के संदर्भ में, प्रांतों से संविधान सभा के सदस्य-

(a) उन प्रांतों के लोगों द्वारा सीधे निर्वाचित हुए थे

(b) भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस तथा मुस्लिम लीग द्वारा नामित हुए थे

(c) प्रांतीय विधान सभाओं द्वारा निर्वाचित हुए थे

(d) सरकार द्वारा, संवैधानिक मामलों में उनकी विशेषता के लिये चुने गए थे

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: संविधान सभा के गठन के संबंध में कैबिनेट मिशन ने वयस्क मताधिकार पर आधारित निर्वाचन से इनकार कर दिया, क्योंकि इसमें अत्यंत विलंब होता।

- यह व्यवस्था की गई कि संविधान निर्मात्री सभा का गठन अप्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा किया जाएगा। इसीलिये प्रत्येक प्रांत के लिये जनसंख्या के अनुपात में कुछ सीटें आवंटित की गईं। यह सामान्यत: 10 लाख की जनसंख्या पर 1 सीट थी।
- संविधान सभा के चुनाव के आधार पर 9 दिसंबर, 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक हुई।

2012

1. 1919 के भारत शासन अधिनियम की निम्नलिखित में से कौन-सी प्रमुख विशेषता/विशेषताएँ है/हैं?

1. प्रांतों की कार्यकारिणी सरकार में द्वैध शासन की व्यवस्था

2. मुसलमानों के लिये पृथक् साम्प्रदायिक निर्वाचक-मण्डलों की व्यवस्था

3. केंद्र द्वारा प्रांतों को विधायिनी शक्ति का हस्तांतरण

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: कथन 1 और 3 सही हैं, जबकि कथन 2 गलत है क्योंकि मुसलमानों को 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधार द्वारा पहले ही पृथक् निर्वाचक मण्डल की सुविधा दी जा चुकी थी।

- इसके तहत केंद्र में द्विसदनीय व्यवस्था स्थापित की गई। एक सदन को राज्य परिषद् तथा दूसरे को केंद्रीय विधान सभा कहा गया।
- इसके द्वारा पंजाब में सिखों को कुछ प्रांतों में यूरोपियंस, एंग्लो-इंडियंस तथा भारतीय ईसाइयों को पृथक् प्रतिनिधित्व दिया गया।
- 1919 के भारत शासन अधिनियम के द्वारा प्रांतों में द्वैध शासन प्रणाली को प्रारंभ किया गया। शासन के सभी विषयों को पहले केंद्रीय और प्रांतीय विषयों को बांटा गया। तत्पश्चात् प्रांतीय विषयों को आरक्षित और हस्तांतरित विषयों में बांट कर प्रांत में द्वैध शाासन प्रणाली लागू की गई।

2. भारत के संविधान में केंद्र और राज्यों के बीच किये गए शक्तियों का विभाजन इनमें से किसमें उल्लिखित योजना पर आधारित है?

(a) मॉर्ले-मिंटो सुधार, 1909

(b) मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड अधिनियम, 1919

(c) भारत शासन अधिनियम, 1935

(d) भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947

सही उत्तर: (c)

व्याख्या: भारतीय संविधान का एक बड़ा हिस्सा भारत शासन अधिनियम, 1935 से संबंधित है। इस अधिनियम में केंद्र व राज्यों के मध्य शक्तियों के विभाजन संबंधी उपबंध किये गए थे।

1935 के भारत शासन अधिनियम के प्रमुख प्रावधान

- भारत शासन अधिनियम, 1935 की सबसे बड़ी विशेषता ब्रिटिश प्रांतों तथा संघ में शामिल होने के लिये तैयार भारतीय रियासतों की एक 'अखिल भारतीय फेडरेशन' की व्यवस्था करना था।
- चूँकि अपेक्षित संख्या में रियासतें इसमें शामिल नहीं हुईं,परिणामस्वरूप अखिल भारतीय संघ कभी भी अस्तित्व में नहीं आ सका।
- 1919 के अधिनियम के द्वारा प्रारंभ किये गए प्रांतीय द्वैध शासन को समाप्त कर दिया गया तथा केंद्र में द्वैध शासन प्रणाली लागू करने का प्रावधान किया गया, किंतु संघ के अस्तित्व में न होने के कारण यह व्यवस्था लागू नहीं हो सकी।
- भारत शासन अधिनियम, 1858 के द्वारा स्थापित 'भारत परिषद्' को समाप्त कर दिया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा साम्प्रदायिक निर्वाचन पद्धति में विस्तार किया गया। इसके द्वारा दलित जातियों, महिलाओं और मज़दूर वर्ग के लिये अलग से निर्वाचन की व्यवस्था की गई। साथ ही, इस अधिनियम के तहत बर्मा (वर्तमान म्याँमार) को भारत से अलग कर दिया गया और उड़ीसा (बिहार से अलग करके) तथा सिंध (बंबई से अलग करके) के नए प्रांतों का निर्माण किया गया।
- भारत शासन अधिनियम, 1935 के तहत केंद्र और संबंधित इकाइयों की शक्तियों के बँटवारे के लिये तीन सूचियों [संघ सूची (59 विषय), प्रांत सूची (54 विषय) तथा समवर्ती सूची (36 विषय)] का प्रावधान किया गया।
- इस अधिनियम के तहत 1937 में संघीय न्यायालय की स्थापना हुई।

राष्ट्रीय आंदोलन के राजनीतिक संगठन/ भारतीय इतिहास के विविध पहलू

2024

1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये:

दल		उसके नेता
1. भारतीय जन संघ	–	**डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी**
2. सोशलिस्ट पार्टी	–	**सी. राजगोपालाचारी**
3. कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी	–	**जगजीवन राम**
4. स्वतंत्र पार्टी	–	**आचार्य नरेंद्र देव**

उपर्युक्त में से कितने सही सुमेलित हैं?

(a) केवल एक **(b) केवल दो**

(c) केवल तीन **(d) सभी चार**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: भारतीय जनसंघ की स्थापना वर्ष 1951 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने की थी। **अत: युग्म 1 सही सुमेलित है।**

- जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया और आचार्य नरेंद्र देव सोशलिस्ट पार्टी के प्रमुख नेता थे। अत: युग्म 2 सही सुमेलित नहीं है।
- कॉन्ग्रेस फॉर डेमोक्रेसी (CFD) एक भारतीय राजनीतिक पार्टी थी जिसकी स्थापना वर्ष 1977 में जगजीवन राम ने की थी। अत: युग्म 3 सही सुमेलित है।
- स्वतंत्र पार्टी की स्थापना वर्ष 1959 में कॉन्ग्रेस सरकार की समाजवादी नीतियों का विरोध करने वाले नेताओं द्वारा की गई थी। सी. राजगोपालाचारी, मीनू मसानी और एन. जी. रंगा सहित उस समय के कुछ प्रमुख नेताओं ने एक उदार-रूढ़िवादी पार्टी बनाने के लिये सहयोग किया। पार्टी का उद्देश्य बाज़ार आधारित अर्थव्यवस्था और लाइसेंस राज को समाप्त करना है। **अत: युग्म 4 सही सुमेलित नहीं है। अत: विकल्प (b) सही है।**

2022

1. निम्नलिखित स्वतंत्रता सेनानियों पर विचार कीजिये:

1. बारींद्र कुमार घोष

2. जोगेश चंद्र चटर्जी

3. रास बिहारी बोस

उपर्युक्त में से कौन गदर पार्टी के साथ सक्रिय रूप से जुड़ा था/जुड़े थे?

(a) 1 और 2 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 3 **(d) केवल 3**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या:

- बारिंद्र कुमार घोष (बारिंद्र घोष) बंगाली क्रांतिकारी आंदोलन, युगांतर के संस्थापक सदस्य थे। वह गदर पार्टी से नहीं जुड़े थे।
- जोगेश चंद्र अनुशीलन समिति के सदस्य बने। वह हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (1924 में) के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। वह गदर पार्टी से नहीं जुड़े थे।
- रास बिहारी बोस ब्रिटिश राज के खिलाफ भारतीय क्रांतिकारी नेता थे। वह गदर विद्रोह के प्रमुख आयोजकों में से एक थे। **अत: विकल्प (d) सही है।**

2. भारतीय इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. डच लोगों ने पूर्वी क्षेत्रों में गजपति शासकों द्वारा प्रदान की गई जमीनों पर अपनी फैक्टरियाँ/गोदाम स्थापित किए।

2. अल्फोंसो दे अलबुकर्क ने बीजापुर सल्तनत से गोआ को छीन लिया था।

3. अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कंपनी ने मद्रास में विजयनगर साम्राज्य के एक प्रतिनिधि से पट्टे पर ली गई जमीन के एक प्लॉट पर फैक्टरी स्थापित की थी।

उपर्युक्त कथनों में कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: उड़ीसा में गंग राजवंश के बाद एक और गौरवशाली राजवंश आया, जिसे सूर्यवंशी गजपति कहा जाता है। इस वंश के अंतिम शासक कखरुआ देव की 1541 ईस्वी में गोविंद विद्याधर ने हत्या कर दी थी, जिन्होंने भोई वंश की स्थापना की थी। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**

- अल्फोंसो डी अल्बुकर्क के पास 23 युद्धपोत और लगभग 1000 सैनिक थे। जनवरी 1510 में उसने गोवा पर आक्रमण किया। उस समय गोवा की सत्ता बीजापुर के शासक के हाथ में थी, जो अपने ही राज्य में विद्रोह का दमन करने में लगा हुआ था। मौके का फायदा उठाकर अल्फोंसो डी अल्बुकर्क ने गोवा पर कब्जा कर लिया। **अत: कथन 2 सही है।**
- 1611 ईस्वी में, अंग्रेज़ों ने दक्षिण भारत में मछलीपट्टनम में अपना पहला कारखाना स्थापित किया, लेकिन जल्द ही गतिविधियों का मुख्य केंद्र मद्रास में स्थानांतरित हो गया। फ्रांसिस डे ने 1639 ईस्वी में विजयनगर साम्राज्य के प्रतिनिधि चंद्रगिरी से मद्रास को पट्टे पर लिया था। उन्होंने वहाँ एक किलेबंद कोठी का निर्माण किया, जिसका नाम 'फोर्ट सेंट जॉर्ज' रखा गया। **अत: कथन 3 सही है। अत: विकल्प (b) सही है।**

2021

1. औपनिवेशिक भारत के संदर्भ में, शाहनवाज़ खान, प्रेम कुमार सहगल और गुरबख्श सिंह ढिल्लों याद किये जाते हैं-

(a) स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन के नेता के रूप में।

(b) 1946 की अंतरिम सरकार के सदस्यों के रूप में।

(c) संविधान सभा में प्रारूप समिति के सदस्यों के रूप में।

(d) आज़ाद हिंद फौज (इंडियन नेशनल आर्मी) के अधिकारियों के रूप में।

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: 1945 में आज़ाद हिंद फौज के सिपाही सरदार गुरुबख्श सिंह, श्री प्रेम सहगल व शाहनवाज़ पर सरकार के प्रति निष्ठा की शपथ तोड़ने के आरोप पर लाल किले में मुकदमा चलाया गया। उनका बचाव भूलाभाई देसाई के नेतृत्व में तेजबहादुर सप्रू, काटजू तथा जवाहरलाल नेहरू ने भी किया। एक संक्षिप्त सुनवाई के पश्चात् उन्हें मृत्युदंड सुनाया गया। लेकिन वायसराय लॉर्ड वेवेल ने जन-भावना को देखते हुए उनको क्षमा प्रदान कर दिया। **अतः विकल्प (d) सही है।**

2. सत्रहवीं शताब्दी के पहले चतुर्थांश में, निम्नलिखित में से कहाँ इंग्लिश 'ईस्ट इंडिया कंपनी' का कारखाना/के कारखाने स्थित था/थे?

1. भरूच **2. चिकाकोल**

3. त्रिचिनोपोली

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 **(b) 1 और 2**

(c) केवल 3 **(d) 2 और 3**

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: सर थॉमस रो ने जहाँगीर से अनुमति लेकर अहमदाबाद, भरूच और आगरा में फैक्टरियाँ स्थापित की थीं। चिकाकोल और त्रिचनापोली में ईस्ट इंडिया कंपनी का कारखाना नहीं था। **अतः विकल्प (a) सही है।**

2020

1. वेलेज़ली ने कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना किस लिये की थी?

(a) उसे लंदन में स्थित बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने ऐसा करने के लिये कहा था

(b) वह भारत में प्राच्य ज्ञान के प्रति अभिरुचि पुनः जाग्रत करना चाहता था

(c) वह विलियम कैरी तथा उसके सहयोगियों को रोज़गार प्रदान करना चाहता था

(d) वह ब्रिटिश नागरिकों को भारत में प्रशासन हेतु प्रशिक्षित करना चाहता था

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: वेलेज़ली ने फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना युवा सिविल सेवा अधिकारियों के सामान्य शिक्षण और प्रशिक्षण के लिये की थी।

2. भारत के इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

1. औरंग - राजकोष का प्रभारी

2. बेनियान - ईस्ट इंडिया कंपनी का भारतीय एजेंट

3. मिरासिदार - राज्य का नामित राजस्व दाता

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: औरंग पर्सियन भाषा का एक शब्द है। इसका संबंध 17वीं सदी में यूरोपीय कंपनियों के ऐसे गोदामों से था जहाँ माल बेचने से पहले इकट्ठा किया जाता था। ये सामान्यतः उन क्षेत्रों में स्थापित होते थे जहाँ कारीगरों की सघनता होती थी। अतः युग्म (1) गलत है।

बेनियान/बनिया/वनिया शब्द संस्कृत के वनिज से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'व्यापारी'। इस शब्द का व्यापक रूप से प्रयोग भारत में व्यापारिक जातियों के सदस्यों की पहचान करने के लिये किया जाता है। बनिया मूल रूप से बैंकर, साहूकार, व्यापारी और दुकानदार थे। किंतु भारत में यूरोपीय कंपनियों के आगमन से इनकी भूमिका भी परिवर्तित हो गयी ये अब यूरोपीय लोगों के सहयोग से काम करने वाले उनके सांस्कृतिक सलाहकार और मार्गदर्शक बन गए और उनके लिये वस्तुओं की खरीद, आवश्यक पूंजी की व्यवस्था करने और बाज़ार तक उनकी पहुँच को आसान बनाना उनका मुख्य पेशा बन गया। अतः युग्म (2) सही है।

मिरासिदार मध्यकाल में दक्कन के ग्राम समुदाय, जिसे पंढारी भी कहते थे, के तीन वर्गों में एक था। ये प्रायः भूस्वामियों का ऐसा वर्ग था जिनका उनकी भूमि पर वंशानुगत अधिकार होता था और वे राज्य को नियमित भू-राजस्व अदा करते थे। अतः युग्म (3) भी सही है।

2019

1. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

	व्यक्ति		धारित पद
1.	सर तेज बहादुर सप्रू	:	अध्यक्ष, अखिल भारतीय उदार संघ
2.	के.सी. नियोगी	:	सदस्य, संविधान सभा
3.	पी.सी. जोशी	:	महासचिव, भारतीय साम्यवादी दल

उपर्युक्त में से कौन-सा/से युग्म सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 1 और 2**

(c) केवल 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: सर तेज बहादुर सप्रू अखिल भारतीय उदारवादी संघ से संबंधित थे। वहीं के.सी. नियोगी संविधान सभा के सदस्य (बंगाल से) के साथ-साथ वर्ष 1951 में गठित पहले वित्त आयोग के अध्यक्ष थे। पी.सी. जोशी वर्ष 1935 में भारतीय साम्यवादी दल के महासचिव बने। इस प्रकार विकल्प (d) सही उत्तर है।

2018

1. 1920 में निम्नलिखित में से किसने अपना नाम परिवर्तित कर 'स्वराज्य सभा' रख लिया?

(a) ऑल इंडिया होम रूल लीग

(b) हिन्दू महासभा

(c) साउथ इंडियन लिबरल फेडरेशन

(d) द सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी

सही उत्तर: (a)

व्याख्या: ऑल इंडिया होमरूल लीग ने 1920 में अपना नाम परिवर्तित कर 'स्वराज्य सभा' रख लिया था।

2. निम्नलिखित में से किससे/किनसे भारत में अंग्रेज़ी शिक्षा की नींव पड़ी?

1. 1813 का चार्टर ऐक्ट

2. जनरल कमेटी ऑफ़ पब्लिक इंस्ट्रक्शन, 1823

3. प्राच्यविद् एवं आंग्लविद् विवाद

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: 1813 के चार्टर एक्ट द्वारा पहली बार ब्रिटिश शासन द्वारा संस्थागत शिक्षा की पहल की गई, लेकिन इस चार्टर में शिक्षा के उद्देश्यों एवं प्रसार के माध्यमों को लेकर किसी भी तरह की स्पष्टता का अभाव था, इसी के परिणामस्वरूप शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी या देशी होने संबंधी विवाद की नींव पड़ी।

इसके पश्चात् 1823 में गवर्नर जनरल-इन-काउंसिल द्वारा 'जनरल कमिटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन' गठित की गई। इस कमिटी को 1813 के चार्टर एक्ट के अंतर्गत शिक्षा के लिये अनुमोदित ₹ 1 लाख के आवंटन के तरीके को निर्धारित करने का दायित्व दिया गया, लेकिन शिक्षा के माध्यम को लेकर 1813 में जो विवाद शुरू हुआ था यह कमिटी भी उसका समाधान निकालने में असफल रही। विवाद के दौरान दस सदस्यों वाली जनरल कमिटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन पाँच-पाँच सदस्यों के दो गुटों में विभाजित हो गई। इसी विभाजन को प्राच्यविद बनाम आंग्लविद विवाद के रूप में देखा जा सकता है। यह विवाद 1835 तक चला। अंतत: लॉर्ड विलियम बैंटिक द्वारा मैकाले के प्रसिद्ध 'मैकाले मिनट ऑफ एजुकेशन' को संस्तुति प्रदान करने से अंग्रेज़ी शिक्षा को अधिकृत रूप से मान्यता मिली। अत: प्रश्न के संदर्भ में तीनों ही विकल्प 1, 2 और 3 सही हैं।

3. निम्नलिखित में से कौन-सी घटना सबसे पहले हुई?

(a) स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना की।

(b) दीनबंधु मित्र ने *नीलदर्पण* का लेखन किया।

(c) बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने *आनंदमठ* का लेखन किया।

(d) सत्येन्द्रनाथ टैगोर इंडियन सिविल सर्विस परीक्षा में सफलता पाने वाले प्रथम भारतीय बने।

सही उत्तर: (b)

व्याख्या:

(b) नीलदर्पण का लेखन	-	1858–59
(d) सिविल सेवा परीक्षा में प्रथम भारतीय	-	1863
(a) आर्य समाज की स्थापना	-	1875
(c) आनंदमठ का लेखन	-	1882

b - d - a - c

अत: उत्तर (b) सही है।

4. भारत में औपनिवेशिक शासन के दौरान शैक्षणिक संस्थाओं के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिये-

संस्थान	संस्थापक
1. बनारस का संस्कृत कॉलेज	**- विलियम जोन्स**
2. कलकत्ता मदरसा	**- वॉरेन हेस्टिंग्स**
3. फोर्ट विलियम कॉलेज	**- आर्थर वेलेज़्ली**

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) 1 और 2 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 3 **(d) केवल 3**

सही उत्तर: (b)

व्याख्या: बनारस का संस्कृत कॉलेज जोनाथन डंकन के प्रस्ताव पर 1791 में स्थापित किया गया था। कलकत्ता मदरसा गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स द्वारा 1781 में स्थापित किया गया था।

फोर्ट विलियम कॉलेज लॉर्ड वेलेज़ली द्वारा 1800 में स्थापित किया गया था। अत: केवल युग्म (2) सही सुमेलित है।

5. 18वीं शताब्दी के मध्य इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा बंगाल से निर्यातित प्रमुख पण्यपदार्थ (स्टेपल कमोडिटीज़) क्या थे?

(a) अपरिष्कृत कपास, तिलहन और अफीम

(b) चीनी, नमक, जस्ता और सीसा

(c) तांबा, चांदी, सोना, मसाले और चाय

(d) कपास, रेशम, शोरा और अफीम

सही उत्तर: (d)

व्याख्या: 18वीं शताब्दी के मध्य इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा बंगाल से निर्यातित प्रमुख पण्य पदार्थों (स्टेपल कमोडिटीज़) में कपास, रेशम, शोरा, नील और अफीम शामिल हैं। **अतः (d) विकल्प सही है।**

6. लॉर्ड वेलेज़ली द्वारा लागू की गई सहायक संधि व्यवस्था के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन लागू *नहीं* होता?

(a) दूसरों के खर्च पर एक बड़ी सेना बनाए रखना

(b) भारत को नेपोलियन के ख़तरे से सुरक्षित रखना

(c) कंपनी के लिये एक नियत आय का प्रबंधन करना

(d) भारतीय रियासतों के ऊपर ब्रिटिश सर्वोच्चता स्थापित करना

सही उत्तरः (c)

व्याख्या: सहायक संधि एक प्रकार की मैत्री संधि थी, जिसका प्रयोग 1798-1805 तक भारत में देशी राज्यों के संबंध में किया गया था।

इस संधि के प्रयोग से भारत में अंग्रेज़ी सत्ता की श्रेष्ठता स्थापित हो गई तथा नेपोलियन का भय भी टल गया। इसमें तय हुआ कि बड़े राज्य अपने यहाँ अंग्रेज़ी सेना रखेंगे, जिसकी कमान अंग्रेज़ अधिकारियों के हाथ में होगी। यद्यपि ये राज्य उस सेना का खर्च उठाएंगे।

कंपनी के लिये एक नियत आय का प्रबंध करना इसका उद्देश्य नहीं था क्योंकि यह मुख्यतः साम्राज्य विस्तार पर केंद्रित थी। **अतः विकल्प (c) सही है।**

7. वुड डिस्पैच के बारे में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सत्य हैं?

1. सहायता अनुदान व्यवस्था (ग्रांट्स-इन-एड) शुरू की गई।

2. विश्वविद्यालयों की स्थापना की सिफारिश की गई।

3. शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षण माध्यम के रूप में अंग्रेज़ी की सिफारिश की गई।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**

(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः (a)

व्याख्या: 1854 में लॉर्ड डलहौजी के शासन काल में वुड घोषणा-पत्र आया, जिसने देश की शिक्षा व्यवस्था को व्यवस्थित करने का कार्य किया। इसे भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। वुड डिस्पैच में शिक्षा क्षेत्र में निजी प्रयत्नों को प्रोत्साहित करने के लिये अनुदान सहायता (Grant-in-aid) पद्धति की सिफारिश की गई थी। वुड डिस्पैच में लंदन विश्वविद्यालय की तर्ज़ पर भारत में आधुनिक विश्वविद्यालयों की स्थापना का सुझाव दिया गया था। इसमें उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी तथा स्कूल स्तर की शिक्षा का माध्यम देशी भाषाओं को बनाए रखने का सुझाव दिया गया था। अतः कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 सही नहीं है।

8. उन्होंने मैज़िनी, गैरीबाल्डी, शिवाजी तथा श्रीकृष्ण की जीवनी लिखी; वे अमेरिका में कुछ समय के लिये रहे; तथा वे केंद्रीय सभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए। वे थे-

(a) अरविंद घोष

(b) विपिन चन्द्र पाल

(c) लाला लाजपत राय

(d) मोतीलाल नेहरू

सही उत्तरः (c)

व्याख्या: लाला लाजपत राय भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के प्रमुख नेताओं में से एक थे। वे भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के गरम दल के नेता थे। उन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध के आस-पास अमेरिका की यात्रा की थी। उन्होंने 'अनहैप्पी इंडिया', 'इंग्लैण्ड डेब्ट टू इंडिया' और 'यंग इंडिया' जैसी प्रसिद्ध पुस्तकों का लेखन किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने मैज़िनी, गैरीबाल्डी, शिवाजी, दयानंद और श्रीकृष्ण की जीवनी भी लिखी थी।

2017

1. निम्नलिखत युग्मों पर विचार कीजिये-

1. राधाकांत देब	-	**ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन के प्रथम अध्यक्ष**
2. गजुलु लक्ष्मीनरसु चेट्टी	-	**मद्रास महाजन सभा के संस्थापक**
3. सुरेंद्रनाथ बनर्जी	-	**इंडियन एसोसिएशन के संस्थापक**

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 1 और 3

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

सही उत्तरः (b)

व्याख्या: राधाकांत देब– ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन के प्रथम अध्यक्ष थे। ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन की स्थापना 31 अक्तूबर, 1851 को हुई। गजुलु लक्ष्मी नरसु चेट्टी– इन्होंने मद्रास नेटिव एसोसिएशन की स्थापना 1849 में की। मद्रास महाजन सभा की स्थापना मई 1884 में एम. वीरराघवाचारी, सुब्रमण्यम अय्यर तथा आनंद चार्लू द्वारा की गई। सुरेंद्रनाथ बनर्जी– इंडियन एसोसिएशन की स्थापना 1876 में सुरेंद्रनाथ बनर्जी तथा आनंद मोहन बोस ने की।

2016

1. वर्ष 1907 में सूरत में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के विभाजन का मुख्य कारण क्या था?

(a) लॉर्ड मिन्टो द्वारा भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिकता का प्रवेश कराना

(b) अंग्रेज़ी सरकार के साथ नरमपंथियों की वार्ता करने की क्षमता के बारे में चरमपंथियों में विश्वास का अभाव

(c) मुस्लिम लीग की स्थापना

(d) भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित हो सकने में अरविंद घोष की असमर्थता *सही उत्तर:* **(b)**

व्याख्या: नरमपंथी अपनी मांगों को मनवाने के लिये विचार-विमर्श करके सरकार के साथ छोटे-मोटे मुद्दों के निपटारे की नीति में विश्वास करते थे। वहीं, चरमपंथी-आंदोलन, हड़ताल और बहिष्कार में विश्वास करते थे। चरमपंथियों के अग्रदूत लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक नरमपंथियों के इस नरम व्यवहार से खुश नहीं थे। दोनों गुटों के बीच वर्चस्व की लड़ाई के कारण 1907 में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का विभाजन हो गया।

2015

1. कॉन्ग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. इसने ब्रिटिश माल के बहिष्कार और करों के अपवंचन की वकालत की।

2. यह सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व स्थापित करना चाहती थी।

3. इसने अल्पसंख्यकों तथा दलित वर्गों के लिये पृथक् निर्वाचन क्षेत्रों की वकालत की।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) 1 और 2 **(b) केवल 3**

(c) 1, 2 और 3 **(d) कोई नहीं** *सही उत्तर:* **(d)**

व्याख्या: उपर्युक्त कथनों में से कोई भी कथन कॉन्ग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना के उद्देश्यों से मेल नहीं खाता है, इसलिये सही उत्तर (d) है। कॉन्ग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना 1934 ई. में बंबई में हुई। इसका उद्देश्य कॉन्ग्रेस के भीतर रहकर कार्य करते हुए इसकी उपलब्धियों को सुदृढ़ करना था। यह साम्यवादियों से इस मामले में अलग थी कि यह कॉन्ग्रेस के भीतर रहकर लोकतांत्रिक समाजवादी अधिकारों के लिये ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लड़ रही थी, वहीं साम्यवादी पार्टी सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व स्थापित करना चाहती थी। कॉन्ग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने भूमि के पुनर्वितरण, काश्तकारों एवं मज़दूरों के ऋणों की माफी, सार्वजनिक सुविधाओं एवं मुख्य उद्योगों के समाजीकरण आदि पर बल दिया। यह देश की एकता-अखंडता की प्रबल समर्थक थी तथा किसी भी विभाजनकारी प्रवृत्ति का प्रबल विरोध करती थी।

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष सरोजिनी नायडू थी।

2. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुद्दीन तैय्यब जी थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 **(b) केवल 2**

(c) 1 और 2 दोनों **(d) न तो 1 और न ही 2**

सही उत्तर: **(b)**

व्याख्या: 1887 में कॉन्ग्रेस के मद्रास अधिवेशन के अध्यक्ष बदरुद्दीन तैय्यब जी थे, जो कॉन्ग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष थे। कॉन्ग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष एनी बेसेंट वर्ष 1917 में कलकत्ता अधिवेशन में चुनी गईं। अत: सही उत्तर **(b)** है। सरोजिनी नायडू वर्ष 1925 ई. में कॉन्ग्रेस के कानपुर अधिवेशन की अध्यक्ष बनीं। यह अध्यक्ष चुनी जाने वाली प्रथम भारतीय महिला थीं। सरोजिनी नायडू सुप्रसिद्ध कवयित्री व महान राष्ट्रीय नेत्री थीं। इनका प्रथम कविता संग्रह 'द गोल्डन थ्रेशोल्ड' 1905 ई. में प्रकाशित हुई, जिस पर 'लंदन टाइम्स' में प्रशंसायुक्त समीक्षाएँ लिखी गईं। इन्होंने गांधीजी के सभी आन्दोलनों का सक्रिय रूप से समर्थन किया। भारत की स्वतंत्रता के बाद वे उत्तर प्रदेश की पहली राज्यपाल बनीं। बदरुद्दीन तैय्यब जी अपने समय के प्रसिद्ध वकील, न्यायाधीश और कॉन्ग्रेस के नेता थे। इन्होंने फिरोजशाह मेहता और के.टी. तैलंग के साथ मिलकर 1885 में 'बंबई प्रेसिडेंसी एसोसिएशन' की स्थापना की।

2012

1. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय, राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन (नेशनल सोशल कॉन्फ्रेन्स) का गठन किया गया था। इसके गठन के लिये उत्तरदायी कारण था:

(a) बंगाल क्षेत्र के विभिन्न सामाजिक सुधार ग्रुप/संगठन किसी एक मंच पर एकत्रित होकर व्यापक हित में मांग-पत्र सरकार के समक्ष प्रस्तुत करना चाहते थे

(b) भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस अपने कार्यक्रम में सामाजिक सुधारों को नहीं रखना चाहती थी। इसीलिये प्रस्तुत उद्देश्य के लिये उसने अलग से संगठन बनाने का सुझाव दिया

(c) बहरामजी मालाबारी और एम.जी. रानाडे ने यह निश्चय किया कि देश के समस्त सामाजिक सुधार ग्रुपों को एक संगठन के अंतर्गत लाया जाए

(d) उपर्युक्त संदर्भ में विकल्प (a), (b) और (c) में दिये गए वक्तव्य में कोई भी सही नहीं है *सही उत्तर:* **(b)**

व्याख्या: भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस अपने कार्यक्रम में सामाजिक सुधारों को नहीं रखना चाहती थी, इसलिये प्रस्तुत उद्देश्य के लिये उसने अलग से संगठन बनाने का सुझाव दिया। अत: विकल्प (b) सही है। 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की स्थापना हुई। स्थापना के समय यह राष्ट्रीय व सामाजिक मुद्दों से जुड़ी हुई थी, इसलिये इस सम्मेलन में महादेव गोविंद रानाडे व आर. रघुनाथ राव ने सामाजिक सुधार के मुद्दों पर कॉन्ग्रेस को संबोधित किया। परंतु कॉन्ग्रेस के दूसरे अधिवेशन के

दौरान यह महसूस किया गया कि राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का मंच केवल राजनैतिक संघर्षों हेतु ही प्रयोग किया जाए; सामाजिक मुद्दों हेतु एक अलग से आंदोलन चलाया जाए। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन का गठन किया गया। इसकी स्थापना रानाडे व राव द्वारा की गई।

2. निम्नलिखित में से किन दलों की स्थापना डॉ. भीमराव अंबेडकर ने की थी?

1. पीजेण्ट्स एंड वर्कर्स पार्टी ऑफ इंडिया
2. ऑल इंडिया सिड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन
3. इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1 और 2 **(b) केवल 2 और 3**
(c) केवल 1 और 3 **(d) 1, 2 और 3**

सही उत्तरः **(b)**

व्याख्याः पीजेण्ट्स एंड वर्कर्स पार्टी ऑफ इंडिया की स्थापना 1947 में महाराष्ट्र में की गई। अंबेडकर ने इसकी स्थापना नहीं की। जयंत प्रभाकर इसके प्रथम अध्यक्ष थे।

- अंबेडकर ने 'द ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लास फेडरेशन' की स्थापना की।
- 1924 में अंबेडकर ने बम्बई में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना की। 1927 में उन्होंने मराठी में 'बहिष्कृत भारत' नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया।
- हिंदुओं और अछूतों में सामाजिक समानता के सिद्धांत के प्रचार के लिये 'समाज समता संघ' स्थापित किया। मज़दूर वर्ग के हितों की रक्षा के लिये 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' का गठन किया।
- 1942 में उन्होंने 'ऑल इंडिया सिड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन' की स्थापना की। अंततोगत्वा उन्होंने हिंदू धर्म के परित्याग की घोषणा की और बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया।

2011

1. सन् 1893 में सर विलियम वेडरबर्न तथा डब्ल्यू.एस. कैन ने किस उद्देश्य से इंडियन पार्लियामेंटरी कमेटी की स्थापना की थी?

(a) भारत में राजनैतिक सुधारों हेतु हाउस ऑफ कॉमन्स में आंदोलन करने के लिये
(b) भारतीयों के साम्राज्यिक न्यायपालिका में प्रवेश हेतु अभियान करने के लिये
(c) भारतीय स्वतंत्रता पर ब्रिटिश संसद में चर्चा सुगम करने के लिये
(d) ब्रिटिश संसद में विख्यात भारतीयों के प्रवेश हेतु आंदोलन करने के लिये

सही उत्तरः **(a)**

व्याख्याः भारत में राजनैतिक सुधार हेतु हाउस ऑफ कॉमन्स में आंदोलन करने के लिये 1893 में वेडरबर्न ने कैन के साथ इंडियन पार्लियामेंटरी कमिटी की स्थापना की। 1885 में कॉन्ग्रेस की स्थापना की गई। भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की स्थापना के समय वेडरबर्न इसके सदस्य थे। 1893 में वेडरबर्न ब्रिटिश संसद में लिबरल सदस्य के रूप में प्रवेश किया ताकि भारत में राजनैतिक सुधार हेतु हॉउस ऑफ कॉमन्स में आंदोलन किया जा सके। वेडरबर्न 1900 तक ब्रिटिश संसद के सदस्य रहे। इन्होंने ए.ओ. ह्यूम की जीवनी भी लिखी। वेडरबर्न एक सेवानिवृत्त अंग्रेज़ नौकरशाह तथा कॉन्ग्रेस की राजनीति में सक्रिय रूप से शामिल थे। वे 1889 तथा 1910 में दो बार कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष भी बने।